



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग I—छाण्ड I
PART I—Section 1
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 345]
No. 345]

इह दिल्ली, बुधवार, सितम्बर 24, 2008/आस्विन 2, 1930.
NEW DELHI, WEDNESDAY, SEPTEMBER 24, 2008/ASVINA 2, 1930

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 24 सितम्बर, 2008

अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीन जन. गण. से सल्फर ब्लैक के आवात से संबंधित पाटनरोधी जांच।

फा. सं. 14/16/2006-डीजीएडी.—1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात अधिनियम कहा गया है) तथा सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए :

2. यतः सल्फर ब्लैक विनिर्माता एसोसिएशन (जिसे एतदपश्चात आवेदक कहा गया है) ने उक्त अधिनियम एवं नियमावली के अनुसरण में चीन जन. गण (जिसे एतदपश्चात संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित सल्फर ब्लैक के पाटन का आरोप लगाते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष एक आवेदन प्रस्तुत किया है और संबद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क लगाने हेतु जांच की शुरूआत करने का अनुरोध किया है।

3. और यतः प्राधिकारी द्वारा आवेदकों की ओर से प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर नियमावली के उप-नियम 5(5) के अनुसरण में कथित पाटन के अस्तित्व, सीमा तथा प्रभाव का निर्धारण करने एवं पाटनरोधी शुल्क की वह राशि, जिसे यदि लगाया जाए तो वह घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगी, की संस्तुति करने के लिए संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयतों के संबंध में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए एक सार्वजनिक सूचना जारी की गई थी जिसे दिनांक 26 जून, 2007 को भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया था।

4. प्राधिकारी ने अनंतिम उपाय लगाने की सिफारिश करते हुए 10 मार्च, 2008 की अधिसूचना द्वारा अपने प्रारंभिक जांच परिणाम अधिसूचित किए और 11 अप्रैल, 28 की अधिसूचना सं. 48/2008-सी.शु. के तहत केन्द्र सरकार ने संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयात पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाया है। निर्दिष्ट प्राधिकारी के अनुरोध पर केन्द्र सरकार ने नियमावली के नियम 17 के अनुसार इस जांच को पूरा करने की सम्यावधि 25 सितंबर, 2008 तक बढ़ा दी है।

क. प्रक्रिया

5. प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक जांच जारी करने के बाद इस जांच के संबंध में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है :

(i) प्राधिकारी ने 10 मार्च, 2008 के प्रारंभिक जांच परिणामों की प्रतियां भारत में संबद्ध देश के दूतावास सहित इस जांच से संबंधित समस्त हितबद्ध पक्षकारों, संबद्ध देश के सहयोगी निर्यातकों, घरेलू उद्योग और जांच में भागीदार आयातकों को भेजी और उनसे प्रारंभिक जांच परिणामों की अधिसूचना के 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया।

ii) प्रारंभिक जांच परिणामों के उत्तर में हितबद्ध पार्टियों की टिप्पणियों को रिकार्ड में लिया गया है और प्राधिकारी ने उनमें उठाए गए मुद्दों की जांच की है।

iii) प्राधिकारी द्वारा विभिन्न हितबद्ध पक्षों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय पाठ को एक सार्वजनिक फाइल के रूप में रखा गया जिसे हितबद्ध पक्षों के अवलोकनार्थ खुला रखा गया;

iv) प्राधिकारी ने अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए सभी हितबद्ध पक्षकारों को अवसर प्रदान करने हेतु 1 अप्रैल, 2008 को सार्वजनिक सुनवाई की। सार्वजनिक सुनवाई के दौरान पक्षकारों द्वारा सौखिक रूप से किए गए अनुरोधों को लिखित में प्रस्तुत किया गया जिन्हें इस जांच के प्रयोजनार्थ रिकार्ड में लिया गया है।

v) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के संबंध में उनके गोपनीयता के दावों की जांच की है। ऐसी सूचना जो गोपनीय प्रकृति की है अथवा जिसे हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय सारांश के साथ गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराया गया है, को गोपनीय माना गया है। *** यह चिन्ह इस जांच परिणाम में याचिकाकर्ता द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का घोटक है और प्राधिकारी ने नियमानुसार इसे गोपनीय ही माना है;

vi) प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गयी सीमा तक सहयोगी निर्यातकों और घरेलू उद्योग का मौके पर सत्यापन किया।

vii) प्राधिकारी ने 9 सितंबर, 2008 के प्रकटन विवरणों द्वारा इस मामले के अनिवार्य तथ्यों का खुलासा किया। हितबद्ध पक्षकारों ने प्रकटन विवरणों पर अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत की हैं और इन्हें रिकार्ड में लिया गया है और उन पर संबंधित पक्षकारों द्वारा प्रमाणित की गई सीमा तक विचार किया गया है;

(viii) यह जांच जनवरी, 2006 से शुरू करके दिसंबर, 2006 (जांच अवधि) तक की अवधि हेतु की गई । तथापि, जांच वर्ष 2003-04, 2004-05, 2005-06 तथा जांच अवधि के लिए की गई है ।

ix) सक्षिक्षितों के लिए प्रारंभिक जांच परिणामों में विचारित ऐसे मुद्दों जिनके संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा विरोध नहीं किया गया है, को इस जांच परिणाम में दोहराया नहीं गया है ।

ग. विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु

6. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद सल्फर ब्लैक का उत्पादन दाने/पफड़ी के रूप में अथवा तरल रूप में किया जाता है । सल्फर ब्लैक एक चमकदार दाने के रूप में होता है जो कुछ-कुछ लाल अथवा हरा रंग देते हुए पूरा काला रंग देता है । सल्फर ब्लैक का उपयोग मुख्यतः सेल्यूलोज फाइबर को रंगने में किया जाता है । सल्फर ब्लैक विस्कोस स्टेपल फाइबर तथा यार्न, कागज एवं चमड़े को रंगने के लिए भी उपयोगी है ।

7. प्रारंभिक जांच परिणामों में प्राधिकारी ने यह नोट किया था कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने याचिका में किए गए उल्लेख कि अनुसार विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु के बारे में कोई मुद्दा नहीं उठाया है और अपने पास उपलब्ध सूचना के आधार पर प्राधिकारी ने अनंतिम रूप से यह माना था कि पपड़ी/दाने और तरल रूप में उत्पादित सल्फर ब्लैक के साथ-साथ विभिन्न सांदरणों में उत्पादित सल्फर ब्लैक भौतिक एवं रासायनिक रूप से एक समान है जिनमें एक जैसी उत्पादन प्रक्रिया का उपयोग होता है और जो तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं । तदनुसार यह माना गया था कि इस जांच में विचाराधीन उत्पाद में सभी रूपों और सभी सांदरणों में सल्फर ब्लैक शामिल है । तथापि, प्रारंभिक अनुरोधों के बाद हितबद्ध पक्षकारों ने उत्पाद के क्षेत्र, उत्पाद के स्वरूप और तुलनीयता के बारे में समान वस्तु के निर्धारण हेतु कुछेक मुद्दे उठाए हैं । ये मुद्दे संक्षेप में निम्नानुसार हैं :-

मै. शांकसी लिनफेन छाइंग केमिकल्स कं. लि.

8. मै. शांकसी लिनफेन ने अपने अनुरोधों में अन्य बातों के साथ-साथ यह तर्क दिया है कि

- संबद्ध वस्तु का विनिर्माण और बिक्री सामान्यतः अलग-अलग क्षमताओं अर्थात् बीआर 100, बीआर 200, बीआर 240 आदि में किया जाता है । बीआर 240 क्षमता के रूप में 100% होता है । सल्फर ब्लैक की क्षमता और शामिल उत्पादन लागत के बीच प्रत्यक्ष सह-संबंध है । क्षमता जितनी अधिक होती है, लागत उतनी ही अधिक होती है और क्षमता जितनी कम होती है, लागत उतनी ही कम होती है । तथापि, प्रारंभिक जांच परिणाम की कार्रवाई इस आधार पर आगे बढ़ाई गई है कि विनिर्माण प्रक्रिया और शामिल लागत में कोई अंतर नहीं है जोकि सही नहीं है क्योंकि क्षमता एवं सांदरण के अनुसार लागत में पर्याप्त अंतर होता है । क्षमता/सांदरण जितना कम होता है, लागत भी उतनी कम होती है ।
- यह एक सुस्थापित व्यापारिक परंपरा और पद्धति रही है कि अलग-अलग क्षमता के सल्फर ब्लैक की ही तुलना क्षमता-दर-क्षमता के आधार पर की जा सकती है । संबद्ध वस्तु की अलग-अलग क्षमताओं का उपयोग अलग-अलग प्रयोजनों के लिए किया जाता

है और इनका उपयोग एक-दूसरे के स्थान पर नहीं किया जा सकता। अतः व्यापार प्रक्रिया के अनुसार क्षमता के अंतर को महत्व दिए जाने की जरूरत है।

मै. डालियान भ्रीन धीक

9. उपर्युक्त निर्यातक ने अपने अनुरोधों में अन्य बातों के साथ-साथ यह तर्क दिया है कि

- इस संबंध में भ्रम प्रतीत होता है कि "क्षमता" "सांद्रण" की पर्यायवाची है और यह कि बीआर 240 में 100% सांद्रण होता है। वरतुतः कोई 100% सांद्रण नहीं होता है और "क्षमता" का अलग संदर्भ होता है। डालियान ने इस भ्रम को जांच शुरूआत संबंधी सूचना और याचिका में नोट किया था परंतु इसका उल्लेख पूर्व में नहीं किया था क्योंकि "सांद्रण" के प्रभाव के आधार पर समायोजन करने का कोई प्रस्ताव नहीं था। अतः इसे केवल माननीय ग्राधिकारी द्वारा अपनाई गई शब्दावली के रूप में देखा गया था और उसका कोई परिणाम नहीं निकलना था।
- वस्तुतः "क्षमता" का तात्पर्य सत्फर ब्लैक की रंजक क्षमता से है। बीआर की संख्या का निर्धारण मानक की रंजक क्षमता की तुलना करके किया जाता है। उदाहरणार्थ एक किग्रा, मानक बीआर 200 का उपयोग नियंत्रित स्थितियों में एक वर्ग मी. के वस्त्र की रंगाई में किया जाता है; तो परीक्षित एक किग्रा, सत्फर ब्लैक का उपयोग भी उन्हीं नियंत्रित परिस्थितियों में एक वर्ग मी. के कपड़े को रंगने में किया जाता है। अनुभवी तकनीकीविद सामान्यतः परीक्षित सत्फर ब्लैक की क्षमता के निर्धारण हेतु बीआर 200 द्वारा रंजित कपड़ों के रंजक परिणाम और परीक्षित सत्फर ब्लैक की तुलना करते हैं।
- चीन के उत्पादकों द्वारा प्रत्येक ग्रेड के तीन टन का उत्पादन किया जाता है। जहां तक इस तर्क का संबंध है कि 501 बीआर 200 की क्षमता डालियन के 522 बीआर 180 या 521 बीआर 180 की क्षमता के लगभग बराबर होती है, इसका निर्धारण और इसकी पुष्टि प्रयोग के जरिए ही की जा सकती है और इसका सत्यापन मौके पर दौरे के समय किया जा सकता है। चूंकि सत्फर ब्लैक बीआर के लिए सामान्यतः स्वीकृत कोई मानक नहीं है, इसलिए अलग-अलग उत्पादकों द्वारा उत्पादित सत्फर ब्लैक बीआर के तीनों प्रकार अलग-अलग हो सकते हैं। अतः विशिष्ट क्षमता वाला सत्फर ब्लैक उसी क्षमता वाले सत्फर ब्लैक का समान उत्पाद होना चाहिए। जब ऐसे सत्फर ब्लैक का उत्पादन और बिक्री "समान उत्पाद" की परिभाषा के अनुसार भारतीय घरेलू उद्योग द्वारा की गई हो।
- बीआर 200 चीन जन.गण. के सहयोगी उत्पादकों का सबसे बड़ा उत्पाद भी है और जांच अवधि के दौरान दोनों सहयोगी निर्यातकों ने जिस ग्रेड का भारत को निर्यात किया है, वह प्रत्येक सहयोगी निर्यातक द्वारा निर्यातिं प्रमुख ग्रेड था।
- सार्वजनिक सुनवाई के दौरान घरेलू उद्योग की चिंता मुख्यतः 200 बीआर और कमतर ग्रेडों के संदर्भ में व्यक्त की गई थी न कि 240 बीआर के संबंध में जिसकी आयात मात्रा कम रही है और घरेलू उद्योग द्वारा 250 बीआर या उससे उच्चतर ग्रेडों का उत्पादन नहीं किया जाता है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग द्वारा भी 240 बीआर का आयात किया जाता है क्योंकि घरेलू उत्पादन अपर्याप्त रहता है। अतः इन उच्च ग्रेडों के कारण प्रथम दृष्टया कोई क्षति नहीं हो सकती है और इसे कृपया शामिल न किया जाए।

- चूंकि बीआर 240 का भारत में मुख्य उपयोग तरल स्वरूप के लिए किया जाता है जिसमें उच्च स्तर के लिए केवल सीमित बाजार होता है इसलिए उच्च मूल्य वाले कस्त्रों/परिदृश्यानों के उत्पादक अक्सर निर्यातों के लिए उत्पादन करते हैं अतः वास्तव में यह बीआर 240 एवं संबद्ध वस्तु के ऐसे उच्चतर ग्रेडों को अलग रखने का एक अच्छा मामला बनेगा जिनका उत्पादन और बिक्री इस समय धरेलू उद्योग द्वारा न तो भारत में की जाती है और न ही चीन से भारत को निर्यात किया जाता है।
- यद्यपि बीआर 240 और तरल रूप में सल्फर ब्लैक को इस जांच में अब तक शामिल किया गया है, तथापि उसे पाटन मार्जिन एवं क्षति मार्जिन की गणना से अलग रखा जाना चाहिए। जांच अवधि के दौरान चीन के अन्य निर्यातकों द्वारा बीआर 240 का निर्यात नहीं किया गया था और डालियान द्वारा निर्यातित बीआर 240 ने मारत के वाणिज्य में प्रवेश नहीं किया था और इस प्रकार इसे भारत को निर्यात बिक्री के रूप में नहीं माना जाना चाहिए।
- यह उल्लेखनीय है कि जांच अवधि के दौरान चीन से भारत को तरल रूप में किसी सल्फर ब्लैक का निर्यात नहीं हुआ था। तरल रूप में सल्फर ब्लैक की लागत और कीमत दाने/घपड़ी के रूप में सल्फर ब्लैक से अधिक होती है।
- चूंकि जांच अवधि के दौरान भारत को बीआर 240 और तरल रूप में सल्फर ब्लैक की कोई निर्यात बिक्री नहीं की गई थी, इसलिए पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 2.4 में किए गए उल्लेख के अनुसार निर्यात कीमत एवं सामान्य मूल्य की उचित तुलना करने के लिए बीआर 240 तथा तरल रूप में सल्फर ब्लैक को सामान्य मूल्य एवं क्षति रहित कीमत की गणना से अलग रखा जाना चाहिए और इस प्रकार इसे पाटन मार्जिन एवं क्षति मार्जिन की गणना से अलग रखा जाना चाहिए।
- इसी प्रकार संबद्ध वस्तु के उच्चतर ग्रेडों को अलग रखा जाए क्योंकि जांच अवधि के दौरान धरेलू उद्योग द्वारा या निर्यातकों द्वारा भारत में इसका न तो उत्पादन किया गया था और न ही भारत में बिक्री की गई थी।

प्राधिकारी द्वारा जांच

10. प्राधिकारी ने विद्याराधीन उत्पाद के क्षेत्र और समान वस्तुओं के बारे में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों को नोट किया है। इस मुद्दे की विस्तार से जांच उत्पाद प्रक्रिया और उत्पाद के तकनीकी व्यौरों का सत्यापन इन तर्कों के आधार पर संबंधित निर्यातकों के परिसरों में विस्तार से की गई थी। हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है और प्राधिकारी ने उसे नोट भी किया है कि "सांद्रण" के रूप में सल्फर ब्लैक को वर्णित करना उचित नहीं है क्योंकि विभिन्न बीआर मूल्य, जिसके रूप में उत्पाद का वर्णन किया जाता है, में उत्पाद के सांद्रण का उल्लेख नहीं होता है परन्तु ऐसे उत्पादों के उत्पादक द्वारा विनिर्दिष्ट एक मानक के संदर्भ में अंशांकित उत्पाद की रंजक क्षमता का उल्लेख किया जाता है। यह भी नोट किया जाता है कि इस उत्पाद के लिए कोई सार्वभौमिक मानक विद्यमान नहीं है। यह भी नोट किया जाता है कि बीआर मूल्य के बीच उत्पाद का विवरण ही नहीं है, अपितु यह उत्पाद के टोन (नीला-लाल) का भी घोतक होता है। इसी प्रकार उत्पाद के अन्य टोन भी उपलब्ध हैं और जिन्हें डीआर आदि के रूप में वर्णित किया जाता है। तथापि उत्पाद को व्यापारिक भाषा में विभिन्न बीआर या डीआर मूल्य के रूप में वर्णित किया जाता है जिससे विनिर्माता या प्रयोक्ता के मानक उत्पाद की तुलना में उत्पाद की रंजक क्षमता का पता चलता है।

11. प्राधिकारी ने ग्राहकियक जांच परिणामों में यह नोट किया था कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से केवल दाने/पपड़ी के रूप में सल्फर ब्लैक का आयात किया गया है। तथापि पपड़ी/दाने के रूप में उत्पादित सल्फर ब्लैक तरल रूप में उत्पादित सल्फर ब्लैक भौतिक एवं रासायनिक रूप से एक समान है, इनमें एक समान उत्पादन प्रक्रिया का उपयोग होता है और ये उत्पाद तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। यद्यपि हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि तरल रूप को विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अलग रखा जाना चाहिए। चूंकि इस उत्पाद का चीन से निर्यात नहीं हुआ है इसलिए यह प्रदर्शित करने के लिए किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा कोई खास तर्क नहीं दिया गया है कि उत्पाद के इन दोनों प्रकारों का उपयोग वाणिज्यिक या तकनीकी रूप से एक-दूसरे के स्थान पर नहीं होता है। दूसरी ओर घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि प्रयोक्ता उद्योग द्वारा सूती कपड़ों, कागज और चमड़े की रंगाई हेतु दाने और तरल दोनों रूपों का उपयोग एक दूसरे के स्थान पर किया जाता है। तरल सल्फर ब्लैक में अधिक सतत रंजक गुणधर्म होते हैं और इसमें प्रयोक्ताओं द्वारा रंजक प्रक्रिया में अन्य रसायनों का उपयोग कम हो जाता है। तरल रंजक के उपयोग से प्रक्रिया जल, वाष्प, विद्युत के उत्पादन में भी कमी आती है और उत्पादकता में वृद्धि होती है। अतः प्राधिकारी ने ऐसा कोई आश्यस्तकारी आधार नहीं पाया है जिससे यह पता चल सके कि दाने की तुलना में तरल सल्फर ब्लैक एक समान उत्पाद नहीं है ताकि उसे जांच के दायरे से अलग रखा जा सके।

12. निर्यातकों द्वारा दिए गए तर्क के अनुसार सल्फर ब्लैक की विभिन्न क्षमताओं खासकर बीआर 240 को जहां तक अलग रखने का संबंध है, इस बात को सिद्ध करने के लिए किसी हितबद्ध पक्षकार ने ऐसा कोई खास तर्क नहीं दिया है कि ये परस्पर प्रतिस्थापनीय नहीं हैं। केयल इस बजह से कि घरेलू उद्योग इस उत्पाद प्रकार की पर्याप्त मात्रा का उत्पादन नहीं करता है या जांच अवधि के दौरान इस उत्पाद प्रकार का कोई खास आयात नहीं हुआ है, इस उत्पाद को जांच के क्षेत्र से बाहर नहीं रखा जा सकता जब तक कि उत्पाद प्रकार भौतिक एवं रासायनिक रूप से एक समान है, आपस में प्रतिस्थापनीय है और उत्पाद के एक समान सामान्य विवरण अर्थात् सल्फर ब्लैक के भीतर उत्पाद के अन्य प्रकारों के समान है। यस्तुतः घरेलू उद्योग बीआर 240 का उत्पादन करता है। प्राधिकारी ने ऊपर यह भी नोट किया कि इस उत्पाद के लिए कोई सार्वभौमिक/अंतर्राष्ट्रीय मानक नहीं है। अतः उत्पादक या प्रयोक्ता द्वारा निर्धारित मानक के आधार पर एक उत्पाद का एक ग्रेड दूसरे उत्पाद के दूसरे ग्रेड या किसी प्रयोक्ता द्वारा उत्पादित ग्रेड के समान हो सकता है। अतः विभिन्न ग्रेडों के प्रतिस्थापनीय उपयोग की अत्यधिक संभावना होती है। किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने प्रकटन विवरण के पश्चात् अपने अनुरोधों में इस मुद्दे पर कोई खास तर्क नहीं प्रस्तुत किया है।

13. उपर्युक्त को देखते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि सभी रूपों और क्षमताओं में सल्फर ब्लैक तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से एक-दूसरे के स्थानापन्न हैं और इस प्रकार यह इस जांच के प्रयोजनार्थ समान वस्तु है। तदनुसार इस जांच में सभी रूपों और सभी क्षमताओं में सल्फर ब्लैक (जिसे आगे संबद्ध वस्तु कहा गया है) है। यह उत्पाद सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 32 के अंतर्गत वर्गीकृत है। 8 अंकीय स्तर पर विशिष्ट टैरिफ शीर्ष 32041967 है।

ग. घरेलू उद्योग एवं आधार

14. इस जांच हेतु आवेदन सल्फर ब्लैक विनिर्माता एसोसिएशन द्वारा अपने सदस्यों की ओर से प्रस्तुत किया गया था, जो एसोसिएशन के संकल्प द्वारा समर्थित था ।

15. प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणामों यह दर्ज किया है कि प्राधिकारी के ध्यान में यह लाया गया है कि भारत में सबद्ध वस्तुओं के दस ज्ञात सक्रिय उत्पादक हैं, जो मैसर्स अतुल लि., मै. भानु केमिकल्स प्रा.लि., मै. एप्को डाइकेम प्रा.लि., मै. माधव डाई एंड केमिकल्स, मै. राजस्थान डाई एंड केमिकल्स, मै. बॉलिक डाइकेम, मै. एस.एम.केमिकल्स, मै. नितिन इंडस्ट्रीज, मै. खेड़ा केमिकल्स, मै. डाइकेम इंडिया हैं । इन ज्ञात उत्पादकों के अलावा संबद्ध वस्तुओं के अनेक छोटे उत्पादक (लगभग 25) भी हैं जिन्होंने या तो उत्पादन स्थगित कर दिया है अथवा देश में इस उत्पाद के तीव्र पाठन के कारण वे इस उत्पाद सेगमेंट बाहर हो गए हैं । वर्तमान याचिका में संबद्ध वस्तुओं के दो प्रमुख उत्पादकों अर्थात् मै. अतुल लि. और मै. भानु केमिकल्स, जिनका संबद्ध वस्तुओं के कुल उत्पादन में योगदान 83% है, ने अपेक्षित जानकारी प्रदान की है । शेष मात्रा का उत्पादन लघु उद्योग क्षेत्र में अन्य लघु उत्पादकों द्वारा किया जाता है जिन्होंने एसोसिएशन द्वारा प्रस्तुत आवेदन का समर्थन किया है । अतः यह आवेदन प्रस्तुत करने में आवेदकों का आधार बनता है ।

16. प्रारंभिक जांच परिणाम में यह भी दर्ज किया गया था कि आवेदक घरेलू उत्पादकों में से एक उत्पादक अर्थात् मै. भानु केमिकल्स तथा इसके एक सहायक प्रतिष्ठान ने अग्रिम लाइसेंसिंग स्कीम के अंतर्गत जांच अवधि के दौरान दानेदार रूप में सल्फर ब्लैक की कतिपय मात्रा का आयात किया था और निर्यात के प्रयोजनार्थ उसे द्रव रूप में प्रसंस्कृत किया था । आवेदकों ने तर्क दिया है कि आवेदक द्वारा इतनी छोटी मात्रा में आयात के कारण भारतीय नियमावली के अनुसार घरेलू उद्योग के आधार एवं क्षति की जांच के प्रयोजनार्थ उसे घरेलू उद्योग के घटक के रूप में अयोग्य घोषित नहीं किया जाना चाहिए । यह भी तर्क दिया गया है कि यदि घरेलू उद्योग के भाग के रूप में इस उत्पादक को अयोग्य घोषित कर दिया जाता है, तब भी अन्य उत्पादक अर्थात् मै. अतुल लि. जिसका उत्पादन 2723 मी.टन है, का भारत में संबद्ध वस्तुओं के कुल उत्पादन में लगभग 52% हिस्सा है । यह भी तर्क दिया गया है कि भारतीय नियमों के अनुसार घरेलू उद्योग के दायरे से किसी आयातक घरेलू उत्पादक को आधार के निर्धारण एवं जांच के प्रयोजनार्थ स्वयमेव बाहर नहीं किया जाता, अपितु यह मामले के गुण-दोषों पर निर्भर होता है ।

17. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने आधार एवं घरेलू उद्योग के प्रारंभिक निर्धारण का खंडन नहीं किया है केवल डालियान ने प्रारंभिक जांच परिणामों पर अपनी टिप्पणियों में यह अनुरोध किया है कि प्राधिकारी को इस बात पर विचार करना चाहिए कि आवेदकों का जांच अवधि के दौरान कुल घरेलू उत्पादन के 45% से कम हिस्सा बनता था न कि 54% जैसा कि दावा किया गया

है। तथापि, जिस आधार पर वे इस आंकड़े पर पहुंचे हैं उन्हें उपलब्ध नहीं कराया गया है। प्राधिकारी के पास उपलब्ध सूचना के अनुसार अतुल लि. का देश में सल्फर ब्लैक के कुल उत्पादन का 52% (वास्तविक क्षमता आधार पर सभी ग्रेड सहित) हिस्सा बनता है और इसलिए नियातक का तर्क सही नहीं है। आगे यह तर्क दिया गया है कि घरेतू बाजार में बीआर 240 का उत्पादन सीमित था, बीआर 250 और उससे उच्चतर ग्रेड का कोई घरेतू उत्पादन नहीं था और अनेक आवेदक (भानु सहित) जांच अवधि के दौरान और आज की तारीख तक डालियान सहित चीन से बीआर 240 का आयात करते हैं। इस मुद्रे का समाधान समान वस्तु के निर्धारण में किया जा चुका है और इसलिए इसका आधार और घरेतू उद्योग के निर्धारण पर प्रभाव नहीं पड़ता है। किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने प्रकटन पश्चात अपने अनुरोधों में आधार संबंधी मुद्रे पर कोई तर्क प्रस्तुत नहीं किया है। अतः प्राधिकारी घरेतू उद्योग और आवेदन दायर करने के उसके आधार के संबंध में प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं।

18. प्रारंभिक जांच परिणामों में रिकार्ड किए गए अनुसार आवेदक एसोसिएशन से अन्य मौजूदा उत्पादकों के संबंध में लागत एवं क्षति संबंधी आंकड़े दायर करने का अनुरोध किया गया था। तथापि, अन्य उत्पादक मुख्यतः असंगठित क्षेत्र में हैं और उन्होंने लागत एवं क्षति से संबंधित कोई आंकड़ा दायर नहीं किया है। अतः भागीदार घरेतू उद्योग जिसका कुल घरेतू उत्पादन में लागभग 83% हिस्सा बनता है, लागत एवं क्षति संबंधी सूचना पर अंतिम निर्धारण हेतु विचार किया गया है।

घ न्यूनतम से कम सीमा

19. प्राधिकारी को वाणिज्यिक आसूचना एवं सार्विकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) एवं अन्य द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आयात संबंधी आंकड़ों एवं संबद्ध देश के सहयोगी नियातकों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों से ज्ञात होता है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं का आयात न्यूनतम से अधिक है।

उ. अन्य अनुरोध एवं उठाए गए मुद्रे

मै. शांकसी लिनफेन डाइंग केमिकल्स कं. लि:

20. इस जांच परिणाम के संबंधित खंडों में दर्ज किए गए अनुसार पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के निर्धारण की पद्धति पर विशिष्ट टिप्पणियों के अलावा उपर्युक्त नियातक ने अपने विभिन्न अनुरोधों में अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित सामान्य तर्क दिए हैं:

- कि घरेलू उद्योग द्वारा पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के आरोपों की विधिवत् पुष्टि नहीं की गई है और दायर की गई सूचना की पर्याप्तता और यथातथ्यता सुनिश्चित किए बिना प्राधिकारी को यह जांच शुरू नहीं करनी चाहिए थी;
- घरेलू उद्योग ने सार्वजनिक क्षेत्र में पहले से उपलब्ध सूचना और दस्तावेजों पर अत्यधिक विव्यवसनीयता का दावा किया है। आंकड़ों की गोपनीयता के बारे में घरेलू उद्योग ने कोई कारण नहीं दिए हैं।

मे. डालियान ग्रीन पीक केमिकल्स कं. लि.एवं मे. डालियान डाई केम इंटरनेशनल कार्पोरेशन

21. इस जांच परिणाम के संबंधित खंडों में दर्ज किए गए अनुसार पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के निर्धारण की पद्धति पर विशिष्ट टिप्पणियों के अलावा उपर्युक्त निर्यातक ने अपने विभिन्न अनुरोधों में अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित सामान्य तर्क दिए हैं::

- निर्यातक ने तर्क दिया है कि प्राधिकारी सहयोगी निर्यातक के लिए समायोजन की संभावना और उस पर टिप्पणियां आमंत्रित करने के बारे में सूचना देने में विफल रहा है। यद्यपि कुछेक न्यायाधिकारों में प्रारंभिक निर्धारण के बिना अनंतिम शुल्क लगाया जा सकता है, तथापि भारत में नियम 13 के अंतर्गत निर्यातकों और आयातकों के प्रति "प्रच्छन्नता" से बचने के लिए किसी अंतिम शुल्क की कार्रवाई हेतु प्रारंभिक निर्धारण की स्पष्ट जरूरत होती है। इस भावना से निर्यातकों को यह सूचित किया जा सकता था कि माननीय प्राधिकारी द्वारा समायोजन और उसकी पद्धति पर विश्वार किया जा रहा है और उन्हें इस पर टिप्पणियां आमंत्रित करनी चाहिए थी।
- समायोजन के मुद्दे पर गलत कार्रवाई की गई है क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि सांद्रण को "क्षमता" का पर्यायवाची होने का भ्रम हो गया है और यह कि बीआर 240 में 100% सांद्रण होता है।
- यद्यपि, प्राधिकारी डालियान के लिए एनएमई व्यवहार की पुष्टि करते हैं, तथापि वह डालियान के सहयोग को नोट कर सकते हैं और उन असहयोगी निर्यातकों के सामान्य मूल्य के परिकलन के मामले में उपलब्ध प्रकटन की तुलना में डालियान के सामान्य मूल्य के परिकलन संबंधी प्रकटन के लिए उच्चतर मानक की पेशकश कर सकते हैं जिन्होंने वास्तव में असहयोग द्वारा अपने सांविधिक अधिकारों को माफ कर लिया है या उनका परित्याग कर दिया है।
- असहयोगी निर्यातकों को कमतर शुल्क संबंधी मानदंड का लाभ प्रदान न किया जाए क्योंकि इससे सहयोग हतोत्साहित होता है।
- जब संबद्ध वस्तु और समान उत्पाद के बीच भौतिक विशेषताओं से संबंधित अंतर भीजूद हैं तब समायोजन समान उत्पाद के सामान्य मूल्य के लिए ही किए जाने चाहिए

ताकि समान उत्पाद का सामान्य मूल्य संबद्ध उत्पाद की निर्यात कीमत से तुलनीय हो सके ।

- विश्व भर में पाटनसोधी प्राधिकारियों द्वारा व्यापक रूप से प्रयोग में लाए जाने वाले भौतिक विशेषताओं से संबंधित अंतरों के समायोजनों हेतु पद्धतियों के सामान्यतः दो प्रकार हैं । प्रथम पद्धति भौतिक विशेषताओं में अंतर द्वारा उत्पन्न बाजार मूल्य संबंधी अंतर पर आधारित है और दूसरी पद्धति भौतिक विशेषताओं में अंतर द्वारा उत्पन्न लागत संबंधी अंतर पर आधारित है ।
- प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य निकालने के लिए लागत संबंधी सूचना और अपनाई गई पद्धति से जुड़ी कुछेक महत्वपूर्ण सूचना को उसका सार्थक अगोपनीय सारांश उपलब्ध कराए बिना गोपनीय रखा है । अतः आवेदक ने लागत संबंधी सूचना और सामान्य मूल्य की गणना का अगोपनीय सारांश उपलब्ध कराने की जरूरत को पूरा नहीं किया है और उसने इस जांच में बचाव करने के लिए डालियान के अधिकार को पर्याप्ततः बाधित किया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

22. जहां तक जांच की शुरुआत के समय सूचना की पर्याप्तता और यथातथ्यता का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि यह जांच पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध के बारे में आवेदकों द्वारा प्रस्तुत सूचना की पर्याप्तता और यथातथ्यता के बारे में प्राधिकारी की प्रथमदृष्ट्या संतुष्टि के बाद शुरू की गई थी । अतः हितबद्ध पक्षकारों के तथ्य स्वीकार्य नहीं हैं ।

23. प्राधिकारी नोट करते हैं कि न तो पाटनसोधी करार और न ही नियमावली में प्राधिकारी के लिए यह अपेक्षित है कि वह अपने प्रारंभिक निर्धारण में प्राधिकारी द्वारा अपनायी गई कार्यप्रणाली के प्रारंभिक पूर्व निर्धारण का खुलासा करे और पक्षकारों की टिप्पणियां आमंत्रित करे । प्रारंभिक उपाय का उद्देश्य पाटन की मार और जांच के छरण के दौरान सतत क्षति से घरेलू उद्योग को अस्थायी राहत पहुंचाना है । अतः प्रारंभिक निर्धारण अनंतिम निर्धारण होता है जो मुख्यतः आंकड़ों के सारणीगत विश्लेषण पर आधारित होता है और इसके लिए अंतिम निर्धारण की तरह विश्लेषण के एक जैसे मानक की जरूरत नहीं होती है । न तो करार और न ही नियमावली में प्राधिकारी से यह अपेक्षा की गई है कि वह प्रारंभिक जांच परिणाम में किए गए निर्धारण का खुलासा करे । अनंतिम निर्धारण की कार्यप्रणाली को प्रारंभिक जांच परिणाम में पर्याप्त रूप से स्पष्ट किया गया है । केवल प्रकटन संबंधी प्रावधान नियम 16 के अनुसार अंतिम जांच परिणाम से पूर्व नियमानुसार करने होते हैं अतः डालियान का यह तर्क कि उन्हें निर्धारण से पूर्स या अनंतिम जांच परिणाम के बाद निर्धारण के प्रकटन से पूर्व कार्य प्रणाली का पूर्ण खुलासा करना चाहिए था, मान्य नहीं है ।

24. जहां तक असहयोगी निर्यातकों की तुलना में सहयोगी निर्यातकों को प्रकटन के उच्चतर मानक और कमतर शुल्क संबंधी नियम के बारे में अलग प्रकार का व्यवहार प्रदान किए जाने का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि समस्त हितबद्ध पक्षकारों को सामान्य प्रकटन जारी किए जाते हैं और भागीदार निर्यातकों को उनके आंकड़ों के संबंध में गोपनीय प्रकटन जारी किए जाते हैं। अतः उच्चतर मानक प्रकटन इस प्रणाली में पहले से मौजूद हैं और उनमें डालियान के लिए कोई विशेष व्यवहार अपेक्षित नहीं है, जैसा कि तर्क दिया गया है। न तो नियमावली में और न ही कशर में कमतर शुल्क लागू करने के बारे में सहयोगी निर्यातकों को अधिमानी व्यवहार का प्राक्घान है। अतः इस पक्षकार का तर्क स्वीकार्य नहीं है।

25. जहां तक तुलना एवं समायोजनों की कार्यप्रणाली का संबंध है, हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियों और तकों पर उचित तुलना और अंतिम पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु संगत खंड में विधिवत विचार किया गया है।

26. हितबद्ध पक्षकारों ने विरोधी पक्षकारों द्वारा अपर्याप्त अगोपनीय प्रकटनों के मद्द को भी उठाया है। यह तर्क दिया गया है कि याचिकाकर्ता द्वारा दायर अगोपनीय याचिका त्रुटिपूर्ण बनी रहती है और अगोपनीय रूपांतरण में सामान्य मूल्य की गणना हेतु प्रस्तुत साक्ष्य अपूर्ण है और हितबद्ध पक्षकार इस कारण से संबद्ध वस्तु के पाटन के आरोपों पर टिप्पणी करने में असमर्थ हैं कि चीन जन.गण. के लिए सामान्य मूल्य के परिकलन हेतु साक्ष्य के साथ-साथ कार्यप्रणाली का प्रकटन नहीं किया गया है। इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए गोपनीयता संबंधी अनुरोध और संबंधित पक्षकारों द्वारा गोपनीयता के दावों की जांच प्रस्तुतीकरण के समय की गई है और पक्षकारों से यह कहा गया था कि वे अन्य पक्षकारों के लाभार्थी पर्याप्त अगोपनीय प्रकटन प्रस्तुत करें। किए गए अनुरोधों के आधार पर जो सूचना गोपनीय स्वरूप की थी अर्थात् लागत एवं बिक्री संबंधी सूचना और जो सूचना वाणिज्यिक रूप से संवेदनशील थी और जिसे ऐसी सूचना प्रस्तुत करने वाले पक्षकार द्वारा गोपनीय ढंग से प्रस्तुत किया गया था, को गोपनीय माना गया है। किसी भी सूचना को स्वतः ही या विवेक का उपयोग किए बिना गोपनीय नहीं माना गया है जैसा कि पक्षकारों ने तर्क दिया है। अगोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना और पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत गोपनीय सूचना की सूचीकृत या सारांशीकृत सूचना को सार्वजनिक फोल्डर में रखा गया है।

च. पाटन मार्जिन का निर्धारण

27. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित निर्यातकों से निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर प्राप्त हुए हैं:-

1. मै. डालियान ग्रीन पीक केमिकल्स कं. लि. (उत्पादक) एवं
मै. डालियान डाई केम इंटरनेशनल कार्पोरेशन (निर्यातक);

2. मै. शांकरी लिनफेन डाइंग केमिकल्स कं. लि.

28. इन उत्पादकों एवं निर्यातकों द्वारा प्रश्नावली में दिए गए उत्तरों की जांच की गई एवं उनसे अंतिरिक्त जानकारी मंगाई गई। उत्तरदाता उत्पादकों/निर्यातकों ने अंतिरिक्त जानकारी भी प्रस्तुत की जिसे रिकार्ड में दर्ज किया गया और इस प्रारंभिक जांच परिणाम में उसकी जांच की गई। संबंधित निर्यातकों ने गैर बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का खंडन किया है। प्रश्नावली के उत्तर और प्रतिवादी उत्पादकों एवं निर्यातक के बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी उत्तर एवं उनके द्वारा किए गए अनुपूरक अनुरोधों की प्रारंभिक जांच के आधार पर प्राधिकारी ने अनंतिम रूप से यह माना है कि चीन के प्रतिवादी उत्पादक/निर्यातक बाजार अर्थव्यवस्था की स्थितियों में प्रचालन नहीं कर रहे हैं। प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद अपने अनुरोधों में प्रतिवादी निर्यातकों ने इन अनंतिम जांच परिणामों का खंडन किया है। किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने प्रकटन पश्चात अपने अनुरोधों में इस मुद्दे पर ठोस तर्क प्रस्तुत नहीं किया है। बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी प्रारंभिक निर्धारण पर प्रतिवादी निर्यातकों के विचारों का संक्षेप में उल्लेख निम्नानुसार है :-

मै. डालियान ग्रीन पीक केमिकल्स कं. लि. (उत्पादक) एवं मै. डालियान डाई केम इंटरनेशनल कार्पोरेशन (निर्यातक);

29. इस उत्पादक/निर्यातक की ओर से किए गए अनुरोधों में अन्य बातों के साथ-साथ यह तर्क दिया गया है कि :

- प्राधिकारी यह नोट करें कि अनेक प्रमुख व्यापारिक देशों ने चीन को बाजार अर्थव्यवस्था याले देश के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लिया है और यह कि इनमें सिंगापुर और न्यूजीलैंड जैसी विकसित बाजार अर्थव्यवस्थाएं शामिल हैं। इससे चीन के लिए एनएमई दर्जे की परिकल्पना करने के मानदंड के बारे में कुछ अन्य क्षेत्राधिकारों/डब्ल्यूटीओ सदस्यों के निर्णय कम संगत रह जाते हैं।
- एनएमई मुद्दे के बारे में चीन के प्रति कोई भारी भेदभाव नहीं होना चाहिए। यहां यह स्मरण किया जा सकता है कि चूंकि रूस को कुछेक क्षेत्राधिकारों ने एमईटी मान्यता प्रदान की है, इसलिए माननीय प्राधिकारी ने हाल की जांचों में रूस को एनएमई का व्यवहार प्रदान नहीं किया है, यद्यपि रूस को विगत तीन वर्षों के भीतर अन्य क्षेत्राधिकारों में एनएमई का दर्जा प्रदान किया गया है।
- अन्य बातों के साथ-साथ इस आधार को मानने का कोई औचित्य नहीं है कि चीन में संबद्ध वस्तु का व्यापार क्षेत्र एनएमई के रूप में प्रचालन करता है और इस प्रकार डालियान को

एनएमई स्थितियों के अंतर्गत प्रचालन करने की कल्पना से बाहर रखा जा सकता है और डालियान द्वारा प्रस्तुत सूचना से स्पष्टतः यह पता चलता है कि डालियान द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था में व्यापार के तरीके से अनन्यतः अपने कारोबारी निर्णय लिए जाते हैं।

- इस व्यापार क्षेत्र और डालियान को प्रयोज्य हाल के वर्षों में चीन में लागू किए गए कानून बाजार अर्थव्यवस्थाओं में प्रचलित कानूनों के तुलनीय हैं और ये जांच अधिक तक लागू हो गए थे।
- डालियान को संबद्ध वस्तु के उत्पादन, व्यापार या निर्यातों के संबंध में एकाधिकार प्राप्त नहीं है और डालियान की कीमत और लागत पर राज्य/सरकार का कोई नियंत्रण नहीं है। उत्पादक कच्ची सामग्री की खरीद करता है और तैयार उत्पादों की बिक्री बाजारी कीमतों पर करता है जो राज्य/सरकार द्वारा नियंत्रित नहीं होती हैं। इसके प्रत्युत्तर में निर्यातक सरकार के प्रभाव से रहित बाजार संचालित कीमतों पर उक्त जांच अधिक के दौरान भारत को अन्य वस्तुओं के साथ-साथ संबद्ध वस्तुओं का निर्यात करता है। इसके अलावा, उत्पादकों या उनकी संबंधित कीमतों और लागतों पर राज्य/सरकार का कोई प्रबंधकीय नहीं है।
- डालियान द्वारा प्रयुक्त लेखा प्रणाली किसी बाजार अर्थव्यवस्था में अंतर्राष्ट्रीय मानकों के संगत है। डालियन अनुमत वैट प्रतिपूर्ति के अलावा कोई सब्सिडी प्राप्त नहीं होती है जिसे भारत जैसे किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश में प्राधिकृत व्यापारी बैंक के जरिए विदेशी मुद्रा में घरेलू बिक्री और खरीद पर लागू किया जाता है और वह अंतर्राष्ट्रीय मापदंडों के अनुरूप अपने लेखों का रखरखाव करती है।
- यह भी अनुरोध किया जाता है कि जांच अधिक के दौरान डालियान द्वारा निर्यातित संबद्ध वस्तु की भारत में संदर्भ कीमत में उचित लाभ मार्जिन शामिल है। अनुरोध है कि कच्ची सामग्री, प्रौद्योगिकी एवं श्रम लागत, उत्पादन, बिक्री और निवेश सहित कीमत, लागत एवं निविष्टि से संबंधित डालियान के निर्णय आपूर्ति एवं मांग को दर्शाने वाले बाजारी संकेतों के अनुरूप लिए जाते हैं और निविष्टि लागत में बाजार मूल्यों का प्रदर्शन किया जाता है। अनुरोध है कि चीन में इन निविष्टियों की लागत या कीमत के बारे में चीन में न तो कोई राज्यगत विनियम है और न ही प्रशासित कीमत की कोई प्रणाली है।
- इसके अलावा उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति में कोई विकृति नहीं आयी है, क्योंकि उत्पादक ने पूर्यवर्ती राज्य परिसंपत्ति में कोई बदलाव नहीं किया है अंथवा उसका विकृति मूल्यहास नहीं किया है या वह वस्तु विनियम व्यापार या ऋण माफी या ऋण/इक्विटी विकृति में संलग्न नहीं रहा है या उसने किसी बड़े-खाते का लाभ प्राप्त नहीं किया है।
- डालियान ने अपने सामान्य मूल्य के अनुरूप जांच अधिक के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है और वस्तुतः जांच अधिक के दौरान सत्यापन किए गए अनुसार भारत के लिए डालियान की निर्यात कीमत चीन से उच्चतम रही है। इस प्रकार भारत के लिए डालियान की निर्यात कीमत का निर्धारण बाजारी संकेतों और धार्णाजिक विचारों द्वारा

किया गया है न कि सरकारी प्रभाव द्वारा । उत्पादक और डालियान में अनुरोध एवं नियमों का निरंतर पुनर्भुगतान भी किया है ।

- शंघाई और शेनज़ेन की तरह डालियान में काफी अधिक एफडीआई होता है और यह कि इन शहरों के निर्यातकों को अलग-अलग जांचों में सामान्यतः उच्च ईमी निलंबन है जिससे अंतर्राष्ट्रीय कीमत में अधिक प्रभाव का पता चलता है तथा आपूर्ति शृंखला और इन शहरों के निर्यातकों के प्रयोगन में एमईटी मानदंडों का पता चलता है । डालियान का स्थानीय आर्थिक वातावरण सकारात्मक रूप से बाजारोन्मुखी है और इसका प्रभाव धरेलू एवं विदेशी प्रतिस्थाओं में उल्लेखनीय रूप से होता है ।
- दिवालियापन और संपत्ति के संबंध में डालियान कमशः धीन के कानूनों आर नियमों के अधीन है । जांच अवधि सहित चीन की इसी प्रकार की कई फर्म दिवालिया इ। गई हैं ।
- भारत के समान विनियम दर सेंट्रल बैंक द्वारा निर्धारित बाजारी दर पर आवृत्ति होती है जैसा कि उक्त गोपनीय उत्तर के साथ प्रस्तुत गोपनीय ऑफर्डों से आवृत्ति होता है । इसके अलावा, डालियान ने बाजारी शर्तों पर बैंकों से उधार लिया है और कार्यक्रम के अनुसार अपने ऋणों को चुकता किया है क्योंकि एक बाजार अर्थव्यवस्था में डालियान ने बाजार अर्थव्यवस्था तंत्र के जरिए भूमि का अर्जन किया है ।
- किसी भी हालत में अन्य क्षेत्राधिकारों की परंपरा यह नहीं रही है कि यह इस संबंध में उक्त निर्यातक द्वारा प्रस्तुत सूचना के सत्यापन के बिना एनएमई व्यवहार से स्वयं को अलग रखने के लिए निर्यातक के प्रयासों को अस्थीलार करे गा उनकी अनदेखी करे । डालियान उसके सत्यापन और प्रस्तुत की गई सूचना के लिए सहमत है ।
- डालियान की एक यूनियन है और उसकी मजदूरी दरें लागू निर्धारित न्यूनतम भजदूरी से काफी अधिक हैं । डालियान ने जांच अवधि के दौरान भूमि उपयोग के लिए भी मुगलान किया है । डालियान द्वारा भुगतान कार्यक्रम के अनुसार अपने ऋण और बाजार आधारित ब्याज को चुकता किया जा रहा है । अतः डालियान का अनुरोध है कि यह निष्कर्ष निकलना उचित नहीं है कि यह उद्यम उत्पादन, बिक्री और कीमत आदि से संबंधित राज्य के कानूनानुसार मार्गदर्शन में कार्य करेगा ।
- कि न तो उक्त प्रोटोकोल में और न ही उक्त नियमावली में पूर्ण या आंशिक "राज्य स्वामित्व" को प्रकाशित मानदंड के रूप में सूचीबद्ध नहीं किया जाता है जो कीमत/व्यवहार्य तुलना के लिए संगत है और इसे "राज्य द्वारा हस्तक्षेप" वाक्यांश के रूप में नहीं पड़ा जा सकता है ।
- चूंकि उक्त प्रोटोकोल में केवल कीमत तुलनीयता की शर्त रखी गई है और उक्त नियमों में व्यवहार का संकेत देते हुए "बाजार अर्थव्यवस्था वाली फर्म के रूप में प्रचालन" का प्रावधान किया गया है ।
- कि एनएमई का उल्लिखित प्रयोजन संभावित कीमत विकृतियों में सुधार लाना है । डालियान का अनुरोध है कि अलग-अलग किफायतों के अनुसार परिवर्तन सुविष्यात है । इस प्रकार यदि किफायतों के आधार पर डालियान के सत्यापित परिवर्तन अनुपात को

- ध्यान में रखा जाए तो प्रमुख कच्ची सामग्री की उसकी कीमतें इन कच्ची सामग्रियों की अंतर्राष्ट्रीय कीमत से तुलनीय है और इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि कीमत में कोई विकृति नहीं आई है और डालियान के लिए एमईटी से इंकार करने का कोई कारण नहीं है।
- डालियान ने जांच अवधि के दौरान नियमित रूप से लाभ कमाया और उसका वितरण किया और इस प्रकार डालियान एक बाजार अर्थव्यवस्था बाली फर्म के समान व्यवहार / प्रचालन कर रही है।
 - एमईएस प्रदान करने के बारे में डालियान का स्वामित्व एक प्रमुख मुद्दा प्रतीत होती है।
- मैं शांक्सी लिनफेन डाइंग केमिकल्स कं. लि.

30. इस उत्पादक/निर्यातक की ओर से किए गए अनुरोधों में अन्य बातों के साथ-साथ यह तर्क दिया गया है कि

- वर्ष 1997 में लिनफेन डाइंग को पीआरसी कंपनी कानून के अनुसार एक सीमित दायित्व बाली कंपनी में परिवर्तित कर दिया गया था जो कंपनी कानूनी के अनुच्छेद 65 के अनुसार पूर्णतः राज्य वित्तपोषित कंपनी से भिन्न विधिक सत्ता है। कर्मचारी लिनफेन डाइंग के वास्तविक नियंत्रक और प्रबंध हैं। उपर्युक्त वर्ष 2003 में शेयर धारकों ने दिनेश मंडल के संदेशों के पुनार्बंदन के द्वारा प्रबंधन शक्ति कर्मचारियों को अंतरित करने पर सहमति व्यक्त की थी। इस प्रकार कर्मचारियों के प्रतिनिधियों की संख्या निदेशक मंडल में काफी अधिक है जो लिनफेन डाइंग के दैनिक प्रचालन में कर्मचारियों की प्रबंधन शक्ति सुनिश्चित करती है।
- लिनफेन डाइंग पर वस्तुतः निदेशक मंडल और पबंधन के जरिए उसके कर्मचारियों का नियंत्रण है।
- कर्मचारियों के प्रतिनिधियों का निदेशक मंडल में बहुमत है। इन प्रतिनिधियों का चयन कर्मचारियों के जरिए एक बैठक में किया जाता है।
- लिनफेन डाइंग किसी समूह का कोई भाग नहीं है। लिनफेन डाइंग की दो सहायक कंपनियां हैं। पहली कंपनी शांक्सी सिनो-वाइड डाइंग केमिकल्स कं. लि. है जो चिकित्सीय ध्यावर्ती उत्पादों के उत्पादन के लिए जिम्मेवार है; दूसरी कंपनी तियानजिन इंटरनेशल ट्रेडिंग कं. लि. है जो लिनफेन डाइंग द्वारा विनियमित उत्पादों के निर्यात के लिए जिम्मेवार है। तियानजिन इंटरनेशल ट्रेडिंग कं. लि. की स्थापना वर्ष 2007 में की गई थी। जांच अवधि के दौरान लिनफेन डाइंग की ऐसी कोई संबद्ध कंपनी नहीं थी जो संबद्ध पर्यवर्ती के उत्पादन, बिक्री या वितरण में संलग्न रही हो।

- संबद्ध उत्पाद की कीमत/मात्रा के निर्धारण में कोई स्थानीय/क्षेत्रीय प्राधिकरण या राज्य की भागीदारी नहीं होती है। बाजार अर्थव्यवस्था के अनुसार लिनफेन डाइंग के प्रबंधन द्वारा बिक्री संबंधी सभी निर्णय मुक्त और स्वतंत्र रूप से लिए जाते हैं।
- लिनफेन डाइंग द्वारा उत्पादन लागत एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजार स्थिति के अनुसार भारत और अन्य देशों को निर्यातित संबद्ध पर्यवर्तन की कीमतें तय की जाती हैं। लिनफेन डाइंग के बिक्री प्रबंधक द्वारा ग्राहकों से सीधे बातचीत की जाती है। ये वार्ताएं सरकारी प्राधिकरण की समीक्षा या उसके मार्गदर्शन के अधीन नहीं होती हैं।
- कंपनी के बाहर के किसी संघटन द्वारा बिक्री सौदे के किसी पहलू की समीक्षा नहीं की जाती है या उसका अनुमोदन नहीं किया जाता है और कीमत/मात्रा के निर्धारण में कोई स्थानीय/क्षेत्रीय प्राधिकरण या राज्य शामिल नहीं होता है।
- लिनफेन डाइंग इनमें से किसी कार्यकलाप के लिए किसी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष मात्रात्मक या अन्य प्रतिबंध के अधीन नहीं है।

च.1 प्राधिकारी द्वारा जांच

31. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पिछले तीन वर्षों के दौरान चीन जन.गण. को पाटनरोधी जांचों में डब्ल्यूटीओ के अन्य सदस्यों द्वारा गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है। अतः पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8(2) के अनुसरण में निर्यातिक देश द्वारा अथवा उपर्युक्त नियमावली के अनुसार अलग-अलग नियंत्रकों द्वारा उपर्युक्त अनुमान के खंडन के अध्यधीन चीन.जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है।

32. यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-8 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था अनुमान का खंडन किया जा सकता है, यदि चीन के निर्यातिक (निर्यातकों) द्वारा पैराग्राफ-8 के उप-पैरा (3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर पर्याप्त सूचना एवं साक्ष्य प्रस्तुत करते हुए उसे विपरीत सिद्ध कर दिया जाए। चीन जनवादी गणराज्य के संबद्ध वस्तुओं के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों से बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रश्नावली के उत्तर के रूप में पैराग्राफ-8 के उप पैराग्राफ (3) में उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करने की अपेक्षा की जाती है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मानदंडों पर विचार कर सकें कि क्या :-

(क) चीन जन.गण. की संबंधित फर्मों द्वारा कीमतों, कच्चे माल सहित लागत एवं निविस्तियों, प्रौद्योगिकी एवं श्रम की लागत, उत्पादन, बिक्री एवं निवेश से संबंधित निर्णय बाजार संकेतों के अनुसार लिए जाते हैं जिसमें आपूर्ति एवं मांग प्रदर्शित होती है और इस संबंध में राज्य का कोई उल्लेखनीय हस्तक्षेप नहीं होता और यथा प्रमुख निविस्तियों की लागत बाजार मूल्यों को उल्लेखनीय रूप से प्रदर्शित करती है;

- (ख) ऐसी फर्मों की उत्पादन लागत एवं वित्तीय स्थिति पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली के कारण, विशेष रूप से परिसंपत्तियों के मूल्यहास, बहु-खाते डाली गई राशियों, वस्तु विनियम व्यापार तथा ऋणों की प्रतिपूर्ति के जरिए भुगतान के कारण उल्लेखनीय रूप से विकृत हो गई है;

(ग) ऐसी फर्में दिवालियापन एवं संपत्ति कानूनों के अध्यधीन हैं, जिससे फर्मों के प्रचालन के लिए कानूनी निश्चितता एवं स्थायित्व की गारंटी मिलती है; एवं

(घ) विनियम दर परिवर्तन बाजार दर पर किए जाते हैं।

उपर्युक्त को देखते हुए प्रतिवादी नियतकर्मों के बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी दावों की निम्नासार जांच की गई है।

क. मै.डालियान ग्रीन पीक केमिकल एं. लि. (उत्पादक) तथा मै. डालियान डाई केमिकल
इंटरनेशनल सार्पेंसेन (नियोतक)

33. इस प्रतिवादी नियोन्तक द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन में संबद्ध वस्तु के प्रमुख उत्पादकों में से एक उत्पादक कंपनी अर्थात् मै. ग्रीन पीक एक संयुक्त स्टॉक कंपनी है जो डालियान डाई स्टफ एंड केमिकल्स कार्पोरेशन द्वारा नियंत्रित है जिसकी 100% शेयरधारिता डालियान डाई स्टफ एंड केमिकल्स ग्रुप के पास है। डालियान डाई स्टफ एंड केमिकल्स ग्रुप राज्य के स्वामित्व वाली कंपनी है। ग्रीनपीक की स्थापना 4 अन्य शेयरधारकों के साथ डालियान डाई स्टफ एंड केमिकल्स कार्पोरेशन द्वारा 26 दिसंबर, 2000 को की गई थी जो स्वयं राज्य के स्वामित्व में है।

34. संबद्ध वस्तु की उत्पादन सुविधा डालियान मुक्त व्यापार क्षेत्र (एफटीजैड) में अगस्त, 1999 में की गई थी और उसका उपयोग अक्टूबर, 1999 से हुआ था। ग्रीनपीक से पूर्व उत्पादन सुविधा पर डालियान डाई स्टफ एंड केमिकल्स कार्पोरेशन का स्वामित्व था और उसे नई कंपनी में पूंजी अंशदान के रूप में ग्रीनपीक को अंतरित कर दिया गया था। कंपनियों की सूचना और दर्जे की जांच से यह पता चलता है कि ये कंपनियां प्रवर्तक कंपनियों में शेयरधारिता के जरिए सरकार के पूर्ण स्वामित्व और नियंत्रण में बनी रही। यह भी नोट किया गया कि पूर्ववर्ती कंपनी का निवल परिसंपत्ति मूल्य जो नई कंपनी के गठन के समय पूंजीकृत था, परिसंपत्तियों के खाता मूल्य की तुलना में अत्यधिक कम था। अतः पूर्ववर्ती कंपनी से पर्याप्त विकृतियां प्राप्त हुईं प्रतीत होती हैं जिससे कंपनी की लागत और कीमत संरचना प्रभावित हुई है।

35. ग्रीन पीक में नौ निदेशकों वाला निदेशक मंडल है जिसमें से 6 निदेशक निवेशक हैं जो राज्य के स्वामित्व वाली कंपनियां हैं। निर्यातक कंपनी अर्थात् मे. डालियान डाइकेम की 100% धारित ग्रीनपीक के पास है और इस प्रकार वह सरकार के नियंत्रण में बनी हुई है।

36. उत्पादक कंपनी समस्त उपयोगिताएं अपनी मूल कंपनी अर्थात् डालियान डाई स्टफ एंड केमिकल्स कार्पोरेशन से प्राप्त करती है। इस कंपनी के पास उपयोगिताओं अर्थात् विद्युत, यात्रा और जल की आपूर्ति हेतु मूल कंपनी के पास कोई विशिष्ट संविदा नहीं है। तथापि, उपयोगिता कीमत को राज्य द्वारा निर्धारित कीमत के आधार पर प्रभारित किया जाता है। संबद्ध वस्तु के प्रमुख कच्ची सामग्री अर्थात् डीएनसीबी और सोडियम हाइड्रोक्साइड का उत्पादन डालियान ग्रीन पीक द्वारा आबद्ध रूप से किया जाता है और अन्य कच्ची सामग्रियां सत्फर, सोडियम सल्फाइड (दोनों की खरीद अल्पावधिक संविदा या तत्स्थानी बाजार के लिए असंबद्ध निजी आपूर्तिकर्ताओं से की जाती है) हैं।

37. प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद अपने अनुरोधों में प्रतिवादी निर्यातक ने यह तर्क दिया है कि चीनीके उत्पादक राज्य परिसंपत्तियों से परिवर्तित नहीं हुआ है, मूल्यहास आदि की कोई विकृति नहीं हुई है इसलिए वस्तु विनियम व्यापार, ऋण माफी या ऋण इविटी संबंधी गङ्गबङ्गी या बट्टे-खाते आदि में कोई भागीदारी नहीं है। उन्होंने अन्य बाजार अर्थव्यवस्था याते देशों द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में चीन की मान्यता का मुद्दा भी उठाया है और चीन में सत्फर ब्लैक क्षेत्र का प्रचालन गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की स्थिति में नहीं किया जाता है।

38. प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस संदर्भ में भारतीय नियम स्पष्ट हैं। चीन द्वारा जब तक नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 8 में निर्धारित शर्तें पूरी नहीं की जाती हैं तब तक प्राधिकारी को उपर्युक्त प्रावधानों में निर्धारित मानदंडों के अनुसार मामला-दर-मामला आधार पर चीन की अलग-अलग प्रतिवादी कंपनियों के संदर्भ में निर्धारण करना होगा।

39. प्रतिवादी उत्पादन और निर्यातक द्वारा किए गए अनुरोधों की जांच से यह पता चलता है कि सरकार का उत्पादक कंपनी में पूर्ण नियंत्रणकारी हित बना हुआ है।

40. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि उत्पादक और निर्यातक कंपनियों पर सरकार का पर्याप्त स्वामित्व और नियंत्रण है और लागत एवं कीमतों में विकृति प्रवर्तक कंपनी से नई कंपनी को उत्पादन इकाई के अंतरण के समय आगे लाई गई विकृति के कारण आई है। संबंधित कंपनियों द्वारा कई निविष्टियां और उपयोगिताएं भी उपलब्ध कराई जाती हैं जो सरकार के नियंत्रण में हैं। अतः प्राधिकारी का यह भत है कि सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ चीन के इस उत्पादक-निर्यातक को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान नहीं किया जा सकता।

क) मै. शांकसी लिनफेन डाइंग केमिकल्स कं. लि. (उत्पादक)

41. मै. शांकसी लिनफेन डाइंग केमिकल्स कं. लि. (शांकसी) की स्थापना पीआरसी के कंपनी कानून के अनुसार एक सीमित दायित्व वाली कंपनी के रूप में वर्ष 1997 में की गई थी। शांकसी चीन में सत्फर ब्लैक की सबसे बड़ी विनिर्माता कंपनी है जिसकी वार्षिक क्षमता *** मी.ट. है और वह दाने एवं तरल दोनों रूपों में विभिन्न क्षमताओं में सत्फर ब्लैक-विलेय एसबी (एसएसबी) और अविलेय एसबी (एनएसबी) के दोनों प्रकारों का उत्पादन करती है।

42. मै. शांकसी लिनफेन डाइंग पूर्व में शांकसी लिनफेन सिटी डाइंग मेटीरियल फैक्ट्री के रूप में विद्यमान थी, जिसकी स्थापना शांकसियन लिनफेन इकनॉमिक एंड ट्रेड कमीशन के तहत डिनजियांग शहर में केन्द्रीय रूप से नियोजित आर्थिक प्रणाली के अंतर्गत की गई थी और बाद में इसे यहां से हटाकर वर्ष 1964 में साउथ ऑफ लिनई सिटी में ले जाया गया गया था। जून, 1995 में राज्य की स्वामित्व वाली 3 कंपनियों ने पीआरसी कंपनी कानून के अनुसार मै. शांकसी लिनफेन डाइंग कैमिकल्स कंपनी लि. के नाम और तर्ज पर एक सीमित दायित्व वाली कंपनी का गठन करने के लिए संस्था के अंतर-नियमों पर हस्ताक्षर किए थे। कुल पंजीकृत पूँजी में से ***% का योगदान शांकसी लिनफेन सरकार द्वारा उपर्युक्तानुसार शांकसी लिनफेन डाइंग फैक्ट्री की परिसंपत्तियों के रूप में किया गया था। कंपनी का औपचारिक रूप से गठन 7 जुलाई, 1997 को किया गया था।

43. नई कंपनी के गठन के समय सूचना और पूँजी योगदान तथा पुरानी फैक्ट्री की परिसंपत्तियों के अंतरण की प्रक्रिया से यह पता चलता है कि कंपनी की *** आरएमबी की कुल परिसंपत्तियों की तुलना में देनदारी *** आरएमबी रही थी। अतः अंतरण के तारीख को कंपनी का निवल परिसंपत्ति मूल्य *** आरएमबी था। लिनफेन सरकार ने इस निवल परिसंपत्ति मूल्य का उपयोग उक्त उद्यम के बकाया ऋण, ब्याज हेतु समायोजन के बाद वर्ष 1995 में गठित नई कंपनी में स्वामित्व इक्विटी के रूप में किया गया है जो *** बनता है। अतः नई कंपनी में लिनफेन सरकार का पूँजी योगदान केवल *** आरएमबी था जिसे पुरानी फैक्ट्री की परिसंपत्ति से लिया गया था जिसका परिसंपत्ति मूल्य *** आरएमबी था।

44. / जहां तक अन्य शेयरधारकों का संबंध है, शांकसी इकनॉकी डेवलपमेंट एंड इन्वेस्टमेंट कंपनी ने *** आरएमबी के अपने बकाया ऋण को नई कंपनी की इक्विटी में पूँजीकृत भी किया है। तीसरे शेयरधारक अर्थात् शांकसी इकनॉमी एंड ट्रेड असेट्स मेनेजमेंट कंपनी ने भी *** आरएमबी के अपने बकाया ऋण को नई कंपनी की इक्विटी में पूँजीकृत किया है। अतः नई कंपनी में किसी शेयरधारक द्वारा कोई नकद योगदान नहीं किया गया था। यह पाया गया था कि यह कंपनी मूल रूप से कर्मचारी निधि और दीर्घावधि ऋण पर चल रही है जिसमें शांकसी क्रेडिट एंड इन्वेस्टमेंट कंपनी से प्राप्त ऋण भी शामिल है।

45. लिनफेन डाइंग के शेयरधारक शांक्सी प्रांत की सरकार के स्वामित्व वाली कंपनियाँ बनी हुई हैं अतः उत्पादक कंपनी सरकार के स्वामित्व वाली और नियंत्रित कंपनी बनी हुई हैं। वर्ष 2006 में इकनॉकी एंड ड्रेड कमीशन ऑफ लिनफेर सिटी ने प्रस्तुत किए गए राज्य की स्वामित्व वाली इक्विटी अंतरण परियोजना की शुरुआत संबंधी दस्तावेज के अनुसार इकाई में अपने शेयरों के अंतरण द्वारा इकाई के निजीकरण पर विचार किया गया था। तथापि, इस परियोजना को अमल में नहीं लाया गया था।

46. कंपनी की पंजीकृत पूँजी को पूर्ववर्ती वर्ष के प्रचालनों के दौरान बेशी और अवितरित लाभ के पूंजीकरण द्वारा उसी अनुपात में प्रवर्तकों के नए पूँजी अंशदान के तहत वर्ष 2006 में बढ़ाया गया था। किसी शेयरधारक द्वारा कोई नया नकद अंशदान नहीं किया गया है।

47. कंपनी कर्मचारियों के ऋण अंशदान के आधार पर चल रही है जो कंपनी की प्रदत्त पूँजी से अधिक है। कर्मचारियों के नियंत्रणकारी हित के परिणामस्वरूप प्रबंधन शक्तियाँ वर्ष 2005 में कर्मचारियों को हस्तांतरित कर दी गई हैं और कर्मचारियों के प्रतिनिधियों की निदेशक भंडल में बहुलता है।

48. कंपनी की एक पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी अर्थात् मै. टियानजिन इंटरनेशनल ट्रेडिंग कंपनी है जो निर्यात कारोबार करती है। तथापि, इस सहायक कंपनी की स्थापना वर्ष 2007 में की गई थी और इसने जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया था। तदनुसार व्यापार कंपनी की प्रश्नावली के उत्तर के आधार पर ग्राहित निर्धारण में मै. टियानजिन इंटरनेशनल ट्रेडिंग कंपनी के नाम को त्रुटिपूर्ण ढंग से शामिल किया गया था, जिसे हटा दिया गया है।

49. उपर्युक्त जांच से यह पता चलता है कि परिसंपत्तियों के अंतरण और परिसंपत्तियों एवं देनदारियों के पूंजीकरण के समय प्रवर्तकों के बकाया ऋण संबंधी घटकों को अंतरण के समय पूर्णतः माफ कर दिया गया है। नई कंपनी के खातों में खातागत निवल परिसंपत्ति मूल्य भी अत्यंत विकृत है। चूंकि शेयरधारकों की ओर से कोई नकद योगदान नहीं किया गया है इसलिए कंपनी मूल रूप से कर्मचारियों और अन्य वित्तीय संस्थानों से दीर्घायधिक ऋण आधार पर लिए गए ऋणों से किए गए ऋण वित्तपोषण के आधार पर चल रही है।

50. कंपनी द्वारा डीएनसीटी का उत्पादन आबद्ध रूप से किया जाता है। अन्य कच्ची सामग्रियों अर्थात् क्लोरोबैंजीन तथा तरल अल्कली की पर्याप्त मात्रा में खरीद राज्य स्वामित्व वाली या राज्य के नियन्त्रण वाली कंपनियों से की जाती है। संबद्ध वस्तु के उत्पादन हेतु विद्युत की आपूर्ति राज्य की स्वामित्व वाली शांक्सी इलेक्ट्रीसिटी कंपनी लि. से होती है। जांच अवधि के दौरान इकाई विद्युत क्रय कीमत *** आरएमबी प्रति इकाई थी। यह तर्क दिया

गया है कि कोल बेल्ट होने के कारण शांकसी की बिजली इस प्रांत में सस्ती है। इस कंपनी द्वारा लिनफेन सरकार द्वारा 50 वर्ष के पट्टे पर जारी भूमि उपयोग अधिसूचना के आधार पर राज्य स्वामित्व वाली भूमि का उपयोग किया जा रहा है।

51. कंपनी ने यह तर्क दिया है कि यद्यपि लिनफेन डाइंग अभी भी स्थानीय सरकारों के शेयरधारकों के स्वामित्व वाली एक सीमित दायित्व वाली कंपनी है, तथापि ये शेयरधारक कारोबारी निर्णयों और लिनफेन डाइंग का दैनिक प्रबंधन में शामिल नहीं होते हैं और तीनों शेयरधारकों के अधिकार लाभ के वितरण को प्राप्त करने और निदेशक मंडल में अपने प्रतिनिधियों का चयन करने तक सीमित हैं।

52. यह अनुरोध किया गया है कि कंपनी के कर्मचारी विभिन्न ऋण एवं विकास निधियों के जरिए कंपनी में कर्मचारियों के दीर्घावधिक पूँजी अंशदान के रूप में इस कंपनी के दास्तिक नियंत्रक और प्रबंधक हैं जिसकी राशि कंपनी की पंजीकृत पूँजी से अधिक बनती है।

53. तथापि, उपर्युक्त जांच से यह पता चलता है कि प्रतिवादी कंपनी राज्य के स्वामित्व और नियंत्रण में बनी हुई है और ऋणों एवं ब्याज की माफी और नई कंपनी में परिवर्तन के समय कंपनी के निवल परिसंपत्ति मूल्य में विकृति के कारण लागत एवं कीमत में पर्याप्त विकृति आई है। अतः प्राधिकारी का यह मत है कि सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ इस कंपनी को बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान नहीं किया जा सकता।

छ. कीमत तुलनीयता तथा पाटन मार्जिन के निर्धारण के बारे में हितवद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए अन्य मुद्दे :

मै. डालियान ग्रीन पीक कैमिकल क. लि.

54. पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु प्रारंभिक जांच परिणामों में अंडाई गई कार्य प्रणाली पर टिप्पणी करते हुए डालियान ने अन्य बातों के साथ-साथ ये तर्क दिए हैं कि:

- जांच अधिक के दौरान सहयोगी निर्यातकों द्वारा भारत को निर्यातित संबद्ध वस्तु के प्रत्येक ग्रेड की संबंधित निर्यात कीमत को प्रत्येक निर्यातक द्वारा प्रत्येक अन्य ग्रेड की निर्यातित संबंधित मात्रा के समायोजनों के आधार पर ग्रेड 240 बीआर में समायोजन करने और बीआर 240 के लिए डालियान के सीएनवी तथा उक्त ग्रेड के लिए घरेलू उद्योग की एनआईपी के साथ संबंधित समायोजित ईपी की तुलना करने में प्राधिकारी द्वारा अपनायी गई रेखिक समायोजन की पद्धति त्रुटिपूर्ण है। सही प्रक्रिया यह रही होती कि ईपी, एवी, डीएम, एनआईपी का निर्धारण ग्रेड-दर-ग्रेड आधार पर किया जाता और तदनुसार सिफारिश की जाती।

- सत्यापन से यह सिद्ध होगा कि ग्रेडवार पाटन मार्जिन/क्षमता मार्जिन का निर्धारण अधिक उपयुक्त है और यह भी कि कम ग्रेडों की आनुपातिक उत्पादन लागत उच्च ग्रेडों की उत्पादन लागत में अधिक है ।
- समायोजन के मुद्दे पर गलत ढंग से कार्रवाई की गई है क्योंकि ऐसा भ्रम प्रतीत होता है कि "क्षमता" सांदरण का पर्यायवाची है और बीआर 240 में 100% सांदरण होता है । वस्तुतः कोई 100% सांदरण नहीं है और "क्षमता" का अलग संदर्भ होता है और इस प्रकार इस संबंध में भ्रम हुआ है । वस्तुतः "क्षमता" का तात्पर्य सल्फर ब्लैक की रंजक क्षमता से है । बीआर की संख्या का निर्धारण एक मानक की रंजक क्षमता के साथ तुलना द्वारा किया जाता है तथापि, सल्फर ब्लैक बीआर के लिए कोई सामान्य स्वीकृत मानक नहीं है । 501 बीआर 200 की क्षमता डालियान के लिए 522 बीआर 180 या 521 बीआर 180 की क्षमता के लगभग बराबर है । इसका निर्धारण और पुष्टिकरण केवल प्रयोग से ही किया जा सकता है और इसका सत्यापन मौके पर दौरे के दौरान किया जा सकता है और अलग-अलग उत्पादकों द्वारा उत्पादित सल्फर ब्लैक बीआर के तीनों प्रकार अलग-अलग हो सकते हैं ।
- सांदरण का आम तौर पर तात्पर्य अन्य पदार्थ की किसी इकाई में किसी विशिष्ट पदार्थ की मात्रा से होता है । सल्फर ब्लैक उद्योग के लिए "सांदरण" की ऐसी कोई अवधारणा नहीं है जिसका उल्लेख सल्फर ब्लैक के रूप में किया जा सके । केवल "क्षमता" का उपयोग ही सल्फर ब्लैक के वर्णन के रूप में किया जाता है । "बीआर" की संख्या से मानक की तुलना में सल्फर ब्लैक की क्षमता का पता चलता है । कभी-कभी व्यापार सौदे में संख्या के लिए "%" चिह्न का उपयोग किया जाता है । उदाहरणार्थ "बीआर 240" को "बीआर 240%" भी लिखा जाता है ।
- यद्यपि डालियान ने 17.12.2007 के कमी संबंधी पत्र के उत्तर में सांदरण का उपयोग किया था, तथापि इसका उल्लेख भारतीय घरेलू उद्योग के वर्णन के अनुसार ही किया गया था । डालियान द्वारा सल्फर ब्लैक के उल्लेख हेतु सांदरण का उपयोग नहीं किया जाता है और भारतीय घरेलू उद्योग सहित समस्त उत्पादक वस्तुतः सल्फर ब्लैक के वर्ण हेतु सांदरण का उपयोग नहीं करते हैं । डालियान को यह पता नहीं था कि प्राधिकारी द्वारा अन्य क्षमताओं में सल्फर ब्लैक को बीआर 240 में परिवर्तित करने के लिए ऐसी किसी पद्धति का उपयोग किया जाएगा और इस प्रकार डालियान ने उस समय इस प्रश्न पर खास ध्यान नहीं दिया था ।
- इस प्रकार के गलत वर्ण का उद्देश्य अन्य क्षमताओं में सल्फर ब्लैक को तथाकथित आनुपातिक आधार बीआर 240 में परिवर्तित करने के लिए प्राधिकारी को भ्रमित करना है ।
- सल्फर ब्लैक की क्षमता का निर्धारण मानक क्षमता की तुलना करते हुए किया जाता है । यदि बीआर 200 का उपयोग मानक के रूप में किया हाता है तो बीआर 240 का तात्पर्य यह है कि बीआर 240 की क्षमता मानक बीआर 200 की क्षमता की 120%

(=240/200 * 100%) है। इसी प्रकार बीआर 180 का तात्पर्य यह है कि बीआर 180 की क्षमता बीआर 200 की क्षमता की 90% (=180/200 * 100%) है।

- तथापि, यह नोट किया जाना चाहिए कि सल्फर ब्लैक बीआर अन्य मानक उत्पादों से भिन्न है। न तो चीन के उत्पादकों और भारत के उत्पादकों या विश्व भर के अन्य उत्पादकों के लिए क्षमता के बारे में सल्फर ब्लैक बीआर हेतु कोई राष्ट्रीय, औद्योगिक, अंतर्राष्ट्रीय या सामान्यतः स्वीकृत मानक नहीं है। अतः अलग-अलग उत्पादकों द्वारा उत्पादित मानक बीआर 200 की वास्तविक रंजक क्षमता या सामर्थ्य परीक्षण के समय उनका प्रयोग करने के बाद काफी अलग हो सकती है। यद्यपि, उन सबके संबंध में बीजकों में और खातों में बीआर 200 का उल्लेख किया जाता है और इसे अलग-अलग उत्पादक के मानक के रूप में उपयोग में लाया जाता है। यह साधारण सी बात है कि एक उत्पादक द्वारा उत्पादित बीआर 180 की वास्तविक क्षमता रंजक क्षमता की जांच हेतु प्रयोग करने के बाद दूसरे उत्पादक द्वारा उत्पादित बीआर 200 की वास्तविक क्षमता के समान रहती है।
- बेहतर समझ के लिए यह महत्वपूर्ण है कि अलग-अलग उत्पादक द्वारा अपने खुद के मानक को किस प्रकार सुनिश्चित किया जाता है।
 - प्रथमतः जब सल्फर ब्लैक बीआर के एक बैच का उत्पादन किया जाता है तो उत्पादक इसमें से कुछ ले लेता है और उसे बीआर 200 नाम का मान देता है। तत्पश्चात उक्त उत्पादक उसकी रंजक क्षमता का पता लगाने के लिए उस मानक का प्रयोग करता है।
 - द्वितीयतः जब सल्फर ब्लैक बीआर के दूसरे बैच का उत्पादन किया जाता है तो उत्पादक उसकी रंजक क्षमता का पता लगाने के लिए इसके कुछ भाग का प्रयोग करता है।
 - तृतीयतः उत्पादक द्वारा मानक बीआर 200 की रंजक क्षमता के साथ उसकी रंजक क्षमता की तुलना करता है।
 - चतुर्थतः तुलना के परिणाम के अनुसार यदि यह पाया जाता है कि इसकी क्षमता मानक की 120% है तो उत्पादक उसे बीआर 240 का नाम दे देता है; यदि यह पाया जाता है कि इसकी क्षमता उक्त मानक की 90% है तो उत्पादक इसे बीआर 180 का नाम दे देता है।
 - इस प्रक्रिया से स्पष्ट हो जाता है कि अलग-अलग उत्पादक द्वारा किसी एकीकृत मानक पर आधारित हुए बिना मानक बीआर 200 को सुनिश्चित किया जाता है।
- सल्फर ब्लैक बीआर के लिए राष्ट्रीय, औद्योगिक, अंतर्राष्ट्रीय या सामान्यतः स्वीकृत मानकों के अभाव में अलग-अलग उत्पादकों द्वारा प्रयुक्त मानक की क्षमता काफी अलग हो सकती है भले ही उन सबको बीआर 200 कहा जाए।
- एक कंपनी में भी बीआर 200 की वास्तविक क्षमता बीआर 200 के अलग-अलग प्रकारों के लिए अलग-अलग होती है। उदाहरणार्थ डालियान द्वारा सल्फर ब्लैक बीआर के 3 प्रकारों अर्थात् 501 सल्फर ब्लैक बीआर, 522 (528) सल्फर ब्लैक बीआर और 521

सल्फर ब्लैक बीआर का उत्पादन किया जाता है। 522 सल्फर ब्लैक बीआर का टोन 501 सल्फर ब्लैक बीआर के टोन की तुलना में अधिक लाल होता है और 521 सल्फर ब्लैक बीआर का टोन 501 सल्फर ब्लैक बीआर के टोन की तुलना में अधिक नीला होता है। इन तीनों प्रकारों में अपने-अपने मानक 501 बीआर 200, 522 बीआर 200 और 521 बीआर 200 होते हैं। 501 बीआर 200 की क्षमता 522 बीआर 180 या 521 बीआर 180 की क्षमता के लगभग बराबर होती है।

- इस कारण से सल्फर ब्लैक की विक्री सामान्यतः नमूने द्वारा की जाती है। जब कोई नया ग्राहक डालियान से सल्फर ब्लैक की खरीद करना चाहता है तो डालियान द्वारा सामान्यतः नमूने के लिए उक्त ग्राहक को उसके द्वारा उत्पादित 501 बीआर 200 या 522 बीआर 200 उपलब्ध कराया जाता है। ग्राहक द्वारा नमूने के रूप में प्राप्त बीआर 200 की जांच की जाएगी और तत्पश्चात यह निर्णय लिया जाएगा कि वह नमूना प्राप्त बीआर 200 की तुलना में किस क्षमता की खरीद करना चाहेगा। किसी नए ग्राहक द्वारा मानक पर गौर किए बिना प्रत्यक्ष रूप से यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि डालियान उसे बीआर 240 की विक्री करे।
- चूंकि सल्फर ब्लैक बीआर के लिए कोई राष्ट्रीय, औद्योगिक, अंतर्राष्ट्रीय या सामान्यतः स्वीकृत मानक नहीं है और प्रत्येक उत्पादक द्वारा प्रयुक्त मानक में काफी अंतर हो सकता है, इसलिए अलग-अलग उत्पादकों द्वारा उत्पादित अलग-अलग क्षमताओं के सल्फर ब्लैक के बीच भौतिक विशेषता संबंधी अंतर को समायोजित करने का कोई एकीकृत या उचित आधार नहीं है।
- भारतीय घरेलू उद्योग द्वारा यह बताया गया है कि दाने की क्षमता का समायोजन लवण को मिलाकर किया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय घरेलू उद्योग द्वारा सर्वप्रथम बीआर 240 का उत्पादन किया जाता है और बाद में बीआर 150, बीआर 180, बीआर 200 आदि को प्राप्त करने के लिए लवण मिलाकर सल्फर ब्लैक की क्षमता को कम कर दिया जाता है। तथापि, जब प्रेस केक में सल्फर ब्लैक सर्वप्रथम निष्पारण द्वारा मूल लिकर से प्राप्त किया जाता है तो डालियान के लिए मूल प्रेस केक की क्षमता सामान्यतया लगभग 180% होती है और उत्पादक की उत्पादन प्रौद्योगिकी काफी अच्छी न होने की स्थिति में अन्य उत्पादकों के लिए यह 140%-150% तक कम हो सकती है।
- यदि मूल प्रेस केक की क्षमता 180% है तो कास्टिक/सोडियम हाइड्रोजन सल्फाइड/सोडियम सल्फाइड के साथ अभिक्रिया करने और सुखाए जाने के बाद उत्पादक सीधे बीआर 180 प्रेस केक को प्राप्त कर सकता है। यदि बीआर 200 या बीआर 240 की जरूरत होती है तो सोडियम थियोसल्फेट, सोडियम क्लोराइड और अन्य अशुद्धताओं को दूर करने के लिए मूल प्रेस केक को उसकी क्षमता 180% से बढ़ाकर 200% या 240% होने तक प्रक्षालित किया जाता है और तत्पश्चात कास्टिक/सोडियम हाइड्रोजन सल्फाइड/सोडियम सल्फाइड से अभिक्रिया करने और सुखाने के बाद प्रक्षालित केक से बीआर 200 या बीआर 240 प्राप्त किया जाता है। यदि बीआर 130 की जरूरत होती है

तो उत्पादक द्वारा मूल प्रेस केक या पफ़ड़ी/पारउडर में सल्फर ब्लैक में लवण मिला दिया जाता है ताकि क्षमता को 180% से घटाकर 130% किया जा सके ।

- जब पहली बार निस्थारण द्वारा मूल लिकर से प्रेस केक में सल्फर ब्लैक प्राप्त किया जाता है तो समस्त उत्पादकों के लिए मूल प्रेस केक की क्षमता 240% नहीं हो सकती है । यह उत्पादकों के लिए प्रक्षालन द्वारा बीआर 180 से बीआर 240 प्राप्त करने और तत्पश्चात मूल प्रेस केक की क्षमता 180% होने की स्थिति में बीआर 240 में लवण मिलाकर बीआर 240 से बीआर 180 प्राप्त करने में फिजूल लागत आती है ।
- भारतीय घरेलू उद्योग का यह विवरण कि दाने की क्षमता को लवण मिलाकर समयोजित किया जाता है और कम सांद्रण लवण मिलाकर ही प्राप्त कर लिए जाते हैं, सही नहीं है । वस्तुतः सल्फर ब्लैक की क्षमता को लवण मिलाकर कम किया जाता है और मूल प्रेस केक से प्रक्षालित कर बढ़ाया जाता है ।
- यह नोट किया जाना चाहिए कि कम क्षमता वाले सल्फर ब्लैक अर्थात बीआर 130, बीआर 150 जिन्हें बीआर 180 जैसी उच्च क्षमता में सल्फर ब्लैक में लवण मिलाकर प्राप्त किया जाता है, की गुणवत्ता और रंजक क्षमता अच्छी नहीं होती है । डालियान द्वारा 180 से कम क्षमता वाले सल्फर ब्लैक का उत्पादन नहीं किया जाता है ।
- प्राधिकारी अलग-अलग प्रकार-दर-प्रकार और भार-दर-भार तुलना के आधार पर कार्यवाही कर सकते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सही "भद-वार" तुलना की गई है । उक्त जांच में अत्यंत अलग-अलग ग्रेडों/उत्पादों को समूहबद्ध किए जाने से पाटन भार्जिन में व्यापक विकृति आ सकती है और उन उत्पादों/ग्रेडों/खंडों के बारे में गैर-कानूनी पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की जा सकती है जिनमें स्पष्ट तौर पर कोई क्षतिकारी पाटन दिखाई नहीं देता है ।
- जब संबद्ध उत्पाद और समान उत्पाद के बीच भौतिक विशेषता संबंधी अंतर होता है, तो समायोजन समान उत्पाद के सामान्य मूल्य में ही किया जाना चाहिए ताकि समान उत्पाद क सामान्य मूल्य संबद्ध उत्पाद की नियात कीमत के साथ तुलनीय बन सके । उदाहरणार्थ यदि संबद्ध उत्पाद बीआर 200 है और समान उत्पाद बीआर 240 है, तो बीआर 240 के सामान्य मूल्य को बीआर 200 के सामान्य मूल्य के रूप में समायोजित किया जाना चाहिए और तत्पश्चात बीआर 200 के सामान्य मूल्य की तुलना बीआर 200 की नियात कीमत के साथ की जानी चाहिए । इस पद्धति में समायोजन केवल एक बार होता है ।
- सामान्यतः भौतिक विशेषता संबंधी अंतर को समायोजित करने के लिए दो प्रकार की पद्धतियां प्रचलित हैं, जिनका विश्व भर के पाटनरोधी प्राधिकारियों द्वारा व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है । एक पद्धति भौतिक विशेषताओं में अंतर द्वारा आए बाजार मूल्य में अंतर पर आधारित है और दूसरी पद्धति भौतिक विशेषताओं में अंतर द्वारा उत्पन्न लागत अंतर पर आधारित है ।
- तथापि, प्राधिकारी द्वारा प्रयुक्त समायोजन की पद्धति न तो बाजार मूल्य के अंतर पर आधारित है और न ही लागत अंतर पर आधारित । यह केवल बीआर 240 के 100%

सांद्रण की तुलना में सल्फर ब्लैक की अलग-अलग क्षमताओं के अनुपात पर आधारित है । डालियान सामान्यतः यह नहीं कह रहा है कि इस प्रकार की पद्धति सही नहीं है क्योंकि इसकी गणना बाजार मूल्य संबंधी अंतर या लागत अंतर के आधार पर नहीं की जाती है । समस्या यह है कि प्राधिकारी द्वारा प्रयुक्त इस प्रकार की पद्धति से भौतिक विशेषताओं में अंतर द्वारा उत्पन्न बाजार मूल्य अंतर या लागत अंतर का समुचित ढंग से पता नहीं चलता है अतः अलग-अलग क्षमताओं/सांद्रणों में सल्फर ब्लैक की निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य में बीआर 240 की वास्तविक कीमत और लागत की तुलना में बीआर 240 में परिवर्तित किए जाने पर विकृति आ जाती है और तदनुसार इस प्रकार की पद्धति से पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन भी विकृत हो जाते हैं ।

- चूंकि डालियान द्वारा भारत को निर्यातित सल्फर ब्लैक उच्च क्षमता (बीआर 200 और बीआर 240) क्षमता बाला है और भारतीय घरेलू उद्योग तथा चीन के अन्य सहयोगी निर्यातक द्वारा उत्पादित और विक्रीत सल्फर ब्लैक कम क्षमता (अधिकांशतः बीआर 200 से कम) का है इसलिए इस नियम के तहत डालियान की निर्यात कीमत में सुधार सामान्य मूल्य एवं क्षति रहित कीमत में हुए सुधार की तुलना में अत्यंत कम बनता है जिससे पाटन मार्जिन एवं क्षति मार्जिन अपेक्षा से काफी अधिक हो जाता है ।
- अलग-अलग क्षमताओं में सल्फर ब्लैक के बीच भौतिक विशेषता संबंधी अंतर हेतु समायोजन के लिए कोई एकीकृत आधार नहीं है । जांच अवधि के दौरान भारतीय घरेलू उद्योग ने अलग-अलग क्षमताओं में सल्फर ब्लैक का उत्पादन और विक्री की है । अनुरोध है कि प्राधिकारी द्वारा भौतिक विशेषतागत अंतर को समायोजित किए बिना एक समान क्षमता में सल्फर ब्लैक की सूचना के आधार पर प्रत्येक क्षमता में सल्फर ब्लैक के लिए निर्यात कीमत, सामान्य मूल्य, पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन की गणना की जाए ।
- तथापि यदि ऐसा समायोजन अपरिहार्य हो तो प्राधिकारी को कम से कम वह पद्धति अपनानी चाहिए जिससे भौतिक विशेषताओं में अंतर द्वारा उत्पन्न बाजार मूल्य संबंधी अंतर या लागत अंतर का समुचित ढंग से पता चल सके । ऐसी किसी स्थिति में तुलना के लिए मानक बीआर 200 लिया जाना चाहिए न कि बीआर 240 । यह नहीं कहा जा सकता कि बीआर 240 में 100% सांद्रण होता है । बीआर 240 का निर्धारण उसकी क्षमता की तुलना, मानक की क्षमता के साथ करने पर किया जाता है और समस्त सल्फर ब्लैक की क्षमता का निर्धारण उक्त मानक की क्षमता के साथ तुलना द्वारा किया जाता है । क्षमता का निर्धारण करते समय मानक आधार होता है । भारतीय घरेलू उद्योग सहित अन्य उत्पादकों द्वारा सामान्यतः मानक के रूप में बीआर 200 का उपयोग किया जाता है । तृतीयतः बाजार में उत्पादित और विक्रीत अधिकांश उत्पाद बीआर 200 है । बीआर 240 का उत्पादन और विक्री बहुत कम होती है अतः परिवर्तन आधार के लिए बीआर 200 सर्वाधिक उचित उत्पाद है । चूंकि बीआर 200 बाजार में सर्वाधिक लोकप्रिय उत्पाद है, इसलिए इससे वास्तविक विशेषता संबंधी अंतर के समायोजन के द्वारा उत्पन्न त्रुटि में कमी आएगी क्योंकि आधार के रूप में अन्य क्षमताओं में सल्फर ब्लैक के उपयोग की तुलना में कम समायोजन की जरूरत होती है ।

- प्राधिकारी के लिए यह जरूरी नहीं है कि वह भौतिक विशेषता संबंधी अंतर का समायोजन करें क्योंकि भौतिक विशेषता संबंधी अंतर का समायोजन तभी अपेक्षित होता है जब संबद्ध उत्पाद और समान उत्पाद के बीच भौतिक विशेषतागत अंतर होता है। प्राधिकारी ने बीआर 240 की सूचना में अन्य विभिन्न क्षमताओं में सल्फर ब्लैक की संगत सूचना को परिवर्तित किया है और तत्पश्चात बीआर 240 की निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य की तुलना की है जिससे भौतिक विशेषतागत अंतर की कृत्रिम समस्या उत्पन्न हो गई है।
- भारतीय घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान बीआर 200, बीआर 180 जैसी अलग-अलग क्षमताओं और मुख्यतः कम ग्रेडों में सल्फर ब्लैक का उत्पादन और बिक्री की है जब ऐसा समान उत्पाद है जो संबद्ध उत्पाद से हर प्रकार से समान अर्थात् समनुरूप है तब प्राधिकारी के पास भौतिक विशेषतागत अंतर का समायोजन (अर्थात् अन्य क्षमता में सल्फर ब्लैक की कीमत को बीआर 240 की कीमत में परिवर्तित करना) समायोजन करने का कोई तर्क और आधार नहीं है। प्राधिकारी के लिए यह अत्यंत अवैधानिक है कि वह भौतिक विशेषतागत अंतर का समायोजन करें जिससे पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 2.6 में "समान उत्पाद" की परिभाषा और पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 2.4 में निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच "उचित तुलना" की अपेक्षा का उल्लंघन होता है।
- वस्तुतः घरेलू उद्योग द्वारा भी अलग-अलग क्षमताओं में सल्फर ब्लैक की कीमत और उत्पादन लागत को अलग से लेखाबद्ध किया जाता है। प्राधिकारी इस स्थिति में हैं कि वह घरेलू उद्योग से विशिष्ट क्षमता वाले सल्फर ब्लैक की संगत सूचना उपलब्ध कराने के लिए कह सकते हैं ताकि प्राधिकारी द्वारा संबद्ध उत्पाद की निर्यात कीमत और उसी क्षमता के सल्फर ब्लैक पर आधारित समान उत्पाद की तुलना की जा सके।

55. मै. शांकरी लिनफेन ने अपने अनुरोधों में अन्य बातों के साथ यह तर्क दिया है कि,

- निर्दिष्ट प्राधिकारी ने परिकलित सामान्य मूल्य के आधार पर याचिकाकर्ता की सामान्य मूल्य की गणना को गलत ढंग से स्वीकार किया है। माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी को याचिकाकर्ता द्वारा संगणित परिकलित सामान्य मूल्य जो गोण स्रोतों पर आधारित और अपुष्टिकृत है, को स्वीकार करने के बजाय सामान्य मूल्य निकालते समय लिनफेन द्वारा अपने गोणनीय उत्तरों में दायर आंकड़ों और अनुरोधों को स्वीकार करना चाहिए।
- संबद्ध यस्तु, सल्फर ब्लैक का सामान्यतः विनिर्माण और उसकी बिक्री अलग-अलग क्षमताओं अर्थात् बीआर 100, बीआर 200, बीआर 240 आदि में की जाती है। बीआर 240 में 100% क्षमता होती है। सल्फर ब्लैक की क्षमता और शामिल उत्पादन लागत के बीच प्रत्यक्ष सह संबंध है। क्षमता जितनी अधिक होगी, लागत उतनी ज्यादा होगी और क्षमता जितनी कम होगी, लागत भी उतनी कम होगी। तथापि, प्रारंभिक जांच परिणामों की कार्रवाई इस आधार पर की गई है कि विनिर्माण प्रक्रिया और शामिल लागत में कोई अंतर नहीं है। तथापि, यह गलत है क्योंकि क्षमता एवं सांदरण के आधार पर लागत में

भारी अंतर है। क्षमता जितनी कम होगी, लागत भी उतनी ही कम होगी। इस प्रकार माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जिस आधार पर पाटन मार्जिन एवं क्षति मार्जिन संबंधी निर्धारण किए गए हैं वह गलत और असंगत हैं। क्योंकि माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी ने निर्यातक देश के बाजारों और घरेलू बाजारों में बेची गयी संबद्ध वस्तु की समस्त अलग-अलग क्षमताओं को 100% समतुल्य क्षमताओं में परिवर्तित कर दिया है। माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी ने 100% सांद्रण के लिए उत्पाद के सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है और उसकी तुलना 100% क्षमता के समतुल्य आधार पर निर्धारित निर्यात कीमत के साथ की है।

- चूंकि रेंगाई की अलग-अलग क्षमता में संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत में काफी अंतर है, इसलिए प्राधिकारी को ग्रेड-दर-ग्रेड (क्षमता-दर-क्षमता) आधार पर लागत की तुलना भी करनी चाहिए।
- जो अन्य कारक कीमत तुलनीयता को प्रभावित कर सकता है, वह संबद्ध वस्तु की अलग-अलग क्षमता के लिए पैकिंग लागत में अंतर है। कम सांद्रण के लिए वस्तुओं की सामान्यतः पैकिंग प्लास्टिक बैगों में की जाती है और उच्चतर सांद्रण/क्षमता वाली वस्तु सामान्यतः कार्टूनों में होती है। अलग-अलग पैकिंग के लिए लागत में मार्जिन/अंतर 300-350 आरएमबी प्रति मीट. के बीच होता है।

घरेलू उद्योग के विवार

56. घरेलू उद्योग ने प्रारंभिक जांच परिणाम के बाद अपने अनुरोधों में समायोजन की कार्यप्रणाली का भी खंडन किया है। यद्यपि, उन्होंने स्वयं 100% क्षमता आधार पर उसे परिवर्तित करने के बाद समस्त आंकड़े प्रस्तुत किए थे। यह तर्क दिया गया है कि बीआर 100 की उत्पादन लागत बीआर 200 की आधी नहीं होगी और इसलिए रेखिक समायोजन पद्धति उचित नहीं है। आगे यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग ने इस बात के मजबूत विश्वास को ध्यान में रखते हुए आनुपातिक लागत एवं कीमत कार्यप्रणाली स्वीकार की है कि अधिकांश निर्यात बीआर 200 श्रेणी के हुए हैं। यदि 80% आयात बीआर 200 श्रेणी के हुए हैं तो समस्त आयातों को एक सांद्रण में परिवर्तित करने से स्थिति में खास विकृति नहीं आएगी। तथापि, यदि पर्याप्त मात्रा में निर्यात कम सांद्रण क श्रेणी में किए जाते हैं तो ऐसे सांद्रण के सामान्य मूल्य से आनुपातिक परिवर्तन नहीं होगा और प्राधिकारी द्वारा अपनाया गया रेखिक समायोजन त्रुटिपूर्ण हो जाएगा। अतः प्राधिकारी को प्रत्येक सांद्रण के लिए सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण अलग-अलग करना चाहिए और तत्पश्चात संचयी पाटन मार्जिन का निर्धारण करना चाहिए। घरेलू उद्योग ने चीन के प्रतिवादी निर्यातकों के अनुरोधों के अनुसार कम ग्रेड की सामग्री के पर्याप्त आयात का भी खंडन किया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

57. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा तुलना संबंधी कार्यप्रणाली के बारे में उठाए गए मुद्दों की जांच की गई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने अपने आवेदन में यह उल्लेख किया है कि सलफर ब्लैक का उत्पादन विभिन्न सांद्रणों में किया जाता है। यह अनुरोध किया गया था कि बीआर 240 में 100% सांद्रण होता है और सलफर ब्लैक के अन्य सभी ग्रेड वस्तुतः उत्पाद के अलग-अलग सांद्रण होते हैं। तदनुसार आवेदन में ही मात्रा एवं कीमत संबंधी आंकड़े समेकित किए गए थे। उपर्युक्त आवेदन के आधार पर जांच शुरू करने के बाद सहयोगी निर्यातकों सहित किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने मामले के इस पहलू पर टिप्पणी नहीं की। डालियान ने प्रारंभिक जांच परिणाम के बाद अपने अनुरोधों में यह तथ्य स्वीकार किया है कि यद्यपि उन्होंने आवेदन में यह असंगति देखी थी, तथापि उन्होंने इसकी अनदेखी कर दी और उसे प्राधिकारी के ध्यान में नहीं लाया गया। अतः प्राधिकारी ने इस आधार पर प्रारंभिक निर्धारण की कार्रवाई शुरू की कि सलफर ब्लैक के समस्त ग्रेड एक समान उत्पाद के वस्तुतः अलग-अलग सांद्रण हैं और तदनुसार पाटन एवं क्षति मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना के अनुसार समस्त ग्रेडों को उनकी क्षमताओं के आधार पर एकल सांद्रण में परिवर्तित कर दिया गया था।

58. तथापि, हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए तर्कों के आधार पर प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद उत्पाद के स्पर्शलंप और तुलना की कार्य प्रणाली के मुद्दे की सावधानीपूर्वक पुनः जांच की गई है। प्राधिकारी की जानकारी में यह बात लाई गई है कि बीआर मूल्य में कोई सांद्रण का उल्लेख नहीं होता है बल्कि कुछेक मानकों पर उत्पाद की रंजक क्षमता का उल्लेख होता है जोकि सार्वभौमिक नहीं है। वस्तुतः इस उत्पाद के लिए "सांद्रण" की अवधारण और इसी प्रकार "बीआर" शब्द यथार्थपूर्ण नहीं है। बीआर रंगटोन "नीला-लाल" का द्योतक है और "डीआर" या "बी" जैसे रंग टोनों का कोई संयोजन नहीं हो सकता है। इन शब्दों से जुड़े हुए मूल्य से उत्पाद की रंजक क्षमता का पता चलता है।

59. प्राधिकारी की जानकारी में यह बात भी लाई गई है कि इस उत्पाद के लिए कोई सार्वभौमिक मानक नहीं है और रंग क्षमता या रंजक क्षमता या रंग/टोन के आधार पर ग्रल्यैक उत्पादक/प्रयोक्ता के अपने खुद के मानक होते हैं और ग्रेडों का अंशांकन उनके अपने मानकों पर किया जाता है। अतः एक उत्पादक/प्रयोक्ता के एक ग्रेड के बीआर या डीआर मूल्य द्वारा प्रदर्शित मानक क्षमता दूसरे उत्पादक द्वारा अपने खुद के मानक पर अंशांकित ग्रेड विवरण हेतु उसकी रंग संबंधी क्षमता से भिन्न हो सकती है। वाणिज्यिक एवं व्यापारिक शब्दावली में सामान्यतः बीआर 200 इस उत्पाद के लिए 100% क्षमता का प्रतिनिधित्व करने वाला मानक ग्रेड है जिसे कोई उत्पादक अन्य ग्रेडों का अंशांकन करने के लिए उपयोग करता है। तथापि, बीआर 200 के लिए अलग-अलग उत्पादकों या प्रयोक्ताओं का विनिर्देशन अलग-अलग हो सकता है। उदाहरणार्थ एक उत्पादक का बीआर 200 रंजक क्षमता और टोन के संबंध में

अन्य उत्पादक या प्रयोक्ता के उत्पाद अर्थात् बीआर 180 के समान हो सकता है। अतः इस उत्पाद का व्यापार नमूनों के अनुमोदन के आधार पर किया जाता है न कि किसी सार्वभौमिक ग्रेड के विनिर्देशन के आधार पर।

60. उत्पादन प्रक्रिया की भी जांच की गई थी और यह पाया गया था कि उत्पादन में कई चरण शामिल होते हैं। पहले चरण में सोडियम सल्फाइड सल्फर के साथ अभिक्रिया करता है जिससे सोडियम पॉलीसल्फाइड का उत्पादन होता है। दूसरी अभिक्रिया में डाइनोट्राफीनोल प्राप्त करने के लिए डीएनसीवी को सोडियम हाइड्रोक्साइड द्वारा हाइड्रोलाइज किया जाता है। तत्पश्चात डाइनोट्राफीनोल को सोडियम पालीसल्फाइड द्वारा डीऑक्साइड किया जाता है और तत्पश्चात अपरिष्कृत सल्फर ब्लैक नम केक प्राप्त करने के लिए संघनित और सल्फरीकरण किया जाता है। उत्पादक प्राप्त अभिक्रिया स्तर के आधार पर नम केक स्तर पर अपने खुद के मानक की तुलना में अलग-अलग क्षमताएं प्राप्त करते हैं। अभिक्रिया प्रक्रिया में प्राप्त नम केक को अपेक्षित उच्चतर क्षमताओं का उत्पाद अर्थात् बीआर 180%, बीआर 200% और बीआर 240% प्राप्त करने के लिए कई बार प्रक्षालित और परिशोधित किया जाता है। नम केक स्तर पर प्राप्त क्षमता से कम ग्रेडों का उत्पादन करने के लिए कम क्षमताओं के समायोजन हेतु लवण मिलाया जा सकता है। कुछ उत्पादकों द्वारा अपेक्षित ग्रेड प्राप्त करने के लिए अलग-अलग क्षमताओं का कुछ मिश्रण भी किया जाता है। तथापि, समस्त ग्रेड और क्षमताएं उत्पादक या प्रयोक्ता द्वारा परिभाषित होती हैं जिन्हें वे अपने खुद के मानक ग्रेडों के अनुसार निर्धारित करते हैं और यह किसी अंतर्राष्ट्रीय मानक जो विद्यमान नहीं है, से तुलनीय नहीं होता है।

61. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी का मत यह है कि घरेलू उद्योग द्वारा किए गए उल्लेख के अनुसार विभिन्न ग्रेडों के सांदर्भों के आधार पर निर्यात की मात्रा का परिवर्तन त्रुटिपूर्ण है और इससे विकृत परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। अतः प्राधिकारी ने पाठन एवं क्षति मार्जिनों के निर्धारण हेतु तुलना की अन्य पद्धति अपनाने की संभावना की जांच की।

62. हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि तुलना ग्रेड दर ग्रेड आधार पर की जानी चाहिए। इस संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यद्यपि ग्रेड दर-ग्रेड तुलना एक आदर्श तरीका है, तथापि इस मामले में तीन कारणों से ऐसा करना संभव नहीं होगा। प्रथमतः इस उत्पाद के लिए कोई सार्वभौमिक मानक नहीं है और एक उत्पादक या प्रयोक्ता का ग्रेड दूसरे उत्पादक/प्रयोक्ता के ग्रेड से भिन्न होता है जिससे ग्रेड-दर-ग्रेड तुलना निर्णयक हो जाती है। द्वितीयतः एक उत्पादक की किसी परिभाषित क्षमता के एक समान ग्रेडों के लिए प्रयोक्ता की अलग ग्रेड संबंधी परिभाषा होती है। तृतीयतः कोई भी सहयोगी निर्यातक बाजार अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों पर प्रदालन करता हुआ नहीं पाया गया है इसलिए उनकी खुद की घरेलू विक्रियों (और इस प्रकार उनकी खुद के घरेलू ग्रेडों) की तुलना पाठन मार्जिन के निर्धारण हेतु उनकी निर्यात विक्रियों (ग्रेडों) के साथ नहीं की जा सकती।

63. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु के समस्त ग्रेड उनकी संगत क्षमता को छोड़कर प्रतिस्थापनीय और समान हैं और इस बात की पुष्टि की गई है कि उत्पादों की ग्रेडिंग हेतु कोई एकीकृत मानक नहीं है। एक उत्पादक का उसके खुद के मानक के अनुसार अंशांकित एक परिमाणित क्षमता का उत्पाद अन्य उत्पादक के खुद के मानक पर अंशांकित दूसरी परिभाषित क्षमता के समान हो सकता है। अतः अत्यधिक प्रतिस्थापनीयता अन्योन्य प्रयोगिता होने के कारण ग्रेड-दर-ग्रेड तुलना करने और पाठन एवं क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा निर्यातित प्रत्येक ग्रेड के लिए पृथक सामान्य मूल्य या क्षति रहित कीमत निकालना संभव नहीं है। तथापि, हितवद्ध पक्षकारों के तर्कों से यह बात उभरकर आई है कि बीआर 240 एक अत्यंत विशिष्ट ग्रेड है जिसकी लागत और कीमत बीआर 200 से कम अन्य ग्रेडों की तुलना में अधिक होती है। अतः उचित तुलना करने के प्रयोजनार्थ बीआर 200 तक के सभी ग्रेडों के सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर भारित औसत आधार पर विचार किया गया है और बीआर 240 पर अलग से विचार किया गया है।

64. प्रकटन पश्चात अपने अनुरोधों में मै. शांकसी ने प्रकटन विवरण में प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई तुलना संबंधी कार्य प्रणाली का विवेद किया है और अन्य बातों के साथ-साथ यह तर्क दिया है कि उनके द्वारा निर्यातित सलफर ब्लैक के कम ग्रेडों की तुलना बीआर 200 ग्रेड के लिए निर्धारित एकल सामान्य मूल्य और एनआईपी के साथ करना त्रुटिपूर्ण है और इसमें अलग-अलग ग्रेडों के लागत एवं बाजार मूल्य संबंधी अंतर को ध्यान में नहीं रखा जाता है जिससे कीमत तुलनीयता प्रभावित हो जाती है। आगे यह तर्क दिया गया है कि अन्य सहयोगी निर्यातक मै. डालियान ने भी यह अनुरोध किया है कि प्रारंभिक जांच परिणाम में अपनाई गई कार्य प्रणाली गलत नहीं थी। उस पद्धति में समस्या यह थी कि इसमें ग्रेडों की लागत या बाजार मूल्यगत अंतर को ध्यान में नहीं रखा गया था। अतः प्राधिकारी को डालियान द्वारा दिए गए सुझाव के अनुसार उसके पास उपलब्ध सूचना के आधार पर विभिन्न ग्रेडों के बाजार मूल्यगत अंतर को ध्यान में रखते हुए संदर्भ ग्रेड के रूप में समस्त ग्रेडों को बीआर 200 में परिवर्तित करना चाहिए था। यह भी तर्क दिया गया था कि किसी संदर्भ ग्रेड में ऐसा परिवर्तन संभव न हो तो प्राधिकारी को उचित तुलना हेतु बीआर 200 तक के सभी ग्रेडों के लिए एकल सामान्य मूल्य और एनआईपी के बजाए उत्पाद की अपेक्षाकृत कम रेंजों के लिए सामान्य मूल्य तथा एनआईपी की गणना करनी चाहिए थी। जिसकी परिणति इस तथ्य की वजह से शांकसी के लिए अनुचित निर्धारण के रूप में हुई है कि उन्होंने भारत को इस उत्पाद के अनेक ग्रेडों का निर्यात किया है। यदि इस प्रकार की कोई तुलना संभव नहीं है तो निर्यातक ने एक विकल्प के रूप में यह सुझाव दिया है कि प्राधिकारी को लिनफेन के निर्यात आंकड़ों में से बीआर 200 से कम अन्य ग्रेडों को हटा देना चाहिए और मार्जिन की गणना हेतु केवल बीआर 200 का उपयोग करना चाहिए।

65. प्राधिकारी नोट करते हैं कि न तो मै. डालियान ने और न ही घरेलू उद्योग ने प्रकटन पश्चात अपने अनुरोधों में तुलना संबंधी कार्यप्रणाली पर कोई तर्क नहीं दिया है। यद्यपि इन पक्षकारों ने अपने पूर्ववर्ती अनुरोधों में ग्रेड-दर-ग्रेड तुलना के लिए जोरदार तर्क दिया था। घरेलू उद्योग ने अपने पूर्ववर्ती तर्कों में यहीं दोहराया है कि निर्यातक ने निर्दिष्ट प्राधिकारी के समझ झूठी सूचना दायर की है और चीन से निर्यातित वस्तुएं मुख्यतः डीआर 200 और 240 शामिल हैं। निर्यातकों ने अपनी शुल्क देनदारी कम करने के लिए ग्रेडों को बीआर 200 से कम होने के बारे में झूठी सूचना दी है। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी ने बीआर 200 तक की अलग-अलग क्षमताओं को सही ढंग से संचित किया है। इस संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि निर्यातकों की निर्यात कीमत का निर्धारण सत्यापित आंकड़ों पर आधारित है और इसलिए घरेलू उद्योग के यह तर्क कि निर्यातकों ने उनके द्वारा निर्यातित वस्तु के ग्रेडों के संबंध में झूठी या भ्रामक सूचना दायर की है, स्वीकार्य नहीं है।

66. प्रकटन पश्चात अनुरोधों में शांकसी के दिए गए तर्कों की जांच की गई है और प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस मामले में ग्रेड-दर ग्रेड तुलना की समस्या को प्रकटन में ही विस्तार से स्पष्ट किया गया है और यह नोट किया गया है कि इस उत्पाद के किसी सार्वभौमिक मानक के अभाव में और अत्यधिक ग्रेड प्रतिस्थापनीयता होने के कारण इस निर्यातक के सुझाव के अनुसार उचित तुलना हेतु ग्रेड दर ग्रेड सही तुलना करना या ग्रेडों की रेज परिभाषित करना संभव नहीं हुआ है। इन्हीं कारणों से विभिन्न ग्रेडों को एक संदर्भ ग्रेड में परिवर्तित करना भी संभव नहीं हुआ है। इसके अलावा, अलग-अलग ग्रेडों को एकल संदर्भ ग्रेड में परिवर्तित करने के लिए लागत या बाजार मूल्य के घटक भी संभव नहीं हुए हैं क्योंकि ऐसे घटकों के निर्धारण हेतु कोई सत्यापनीय सूचना उपलब्ध नहीं थी। सल्फर ब्लैक के अन्य ग्रेडों को अलग रखना और केवल बीआर 200 के आधार पर निर्धारण करना भी संभव नहीं हुआ है क्योंकि इस निर्धारण में विचाराधीन समस्त उत्पाद शामिल नहीं होगा। अतः निर्यातक द्वारा सुझाई गई कार्य प्रणालियां प्राधिकारी द्वारा इस मामले में पाठन मार्जिन के निर्धारण हेतु नहीं अपनाई जा सकती। तदनुसार प्राधिकारी इस मामले में अपनाई गई कार्यप्रणाली की पुष्टि करते हैं।

च.2 सामान्य मूल्य का निर्धारण

67. ऊपर किए गए स्कार्ड के अनुसार चीन जन.गण. का कोई भी प्रतिवादी निर्यातक सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा और अलग-अलग व्यवहार प्रदान करने का पात्र नहीं पाया गया है। अतः चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण नियमावली के अनुबंध-1 के ऐरा 7 के अनुसार करना अपेक्षित है जिसमें यह प्रावधान है कि:

गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत अथवा संरचित मूल्य, अथवा किसी

तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहां यह संभव न हो, अथवा अन्य किसी समुचित आधार पर किया जाएगा, जिसमें भारत में समान वस्तु के लिए वास्तविक रूप से संदर्भ अथवा भुगतान योग्य कीमत, जिसमें यदि आवश्यक हो तो लाभ की समुचित गुंजाइश भी समिल की जाएगी। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे समुचित देश का चयन उचित तरीके से किया जाएगा जिसमें संबंधित देश के विकास के स्तर तथा प्रश्नगत उत्पाद का ध्यान रखा जाएगा और चयन के समय उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय सूचना का भी ध्यान रखा जाएगा। जहां उचित हो उचित समयसीमा के भीतर किसी अन्य बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के संबंध में इसी प्रकार के मामले में की गई जांच पर भी ध्यान दिया जाएगा। जांच से संबंधित पक्षों को बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के उपर्युक्त प्रकार से चयन के बारे में बिना किसी अनुचित विलंब के सूचित किया जाएगा और उन्हें अपनी टिप्पणियां देने के लिए उचित अधिक प्रदान की जाएगी।

68. जांच शुरूआत अधिसूचना में यह उल्लेख किया गया था कि उपर्युक्त प्रावधान के अनुसरण में चीन जन.गण. में सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी द्वारा किसी समुचित तीसरे देश के बारे में सूचित किया जाएगा। प्राधिकारी के ध्यान में यह भी लाया गया है कि यह एक अत्यधिक प्रदूषणकारी उद्योग होने के कारण भारत और चीन में ही संबद्ध वस्तु का उत्पादन किया जाता है और इन दोनों देशों के बाहर ऐसा कोई अन्य उत्पादक नहीं है जिसे उपर्युक्त प्रयोजनार्थ समुचित बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के रूप में स्थीकार किया जाए। अतः घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि इस मामले में भारत को चीन का एक समुचित सहोदर देश माना जाए और सामान्य मूल्य का निर्धारण तदनुसार किया जाए।

69. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के द्वितीय परंतुक के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण की प्रक्रिया शुरू की है।

70. पूर्ववर्ती पैराग्राफों में रिकार्ड किए गए अनुसार प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि मानक विनिर्देशन के अभाव और उत्पादक की अत्यधिक प्रतिस्थापनीयता को ध्यान में रखते हुए संबंधित नियातकों द्वारा निर्यातित प्रत्येक ग्रेड के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण करना संभव नहीं है। आगे यह नोट किया गया था कि बीआर 240 एक अत्यंत विशिष्ट ग्रेड है जिसकी बीआर 200 से कम के अन्य ग्रेडों की तुलना में अधिक लागत और कीमत होती है और इसलिए उचित तुलना के प्रयोजनार्थ भारित औसत आधार पर बीआर 200 तक के सभी ग्रेडों के सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर विचार करना उचित होता और बीआर 240 पर अलग से विचार करना होगा।

71. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा निर्यातकों द्वारा निर्यातित समस्त उन्हीं ग्रेडों का उत्पादन नहीं किया जाता है और निर्यातकों द्वारा स्वयं भी ग्रेडवार सामान्य मूल्य की गणना हेतु पृथक ग्रेडवार लागत आंकड़े नहीं रखे जाते हैं भले ही ग्रेड की प्रतिस्थापनीयता की समस्या पर ध्यान न दिया जाए । तथापि, सहयोगी निर्यातकों द्वारा निर्यातित और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित दोनों मुख्य ग्रेडों अर्थात् बीआर 200 और बीआर 240 के लिए उत्पादन लागत और खपत संबंधी मानकों के बारे में विश्वसनीय आंकड़े उपलब्ध हैं । अतः प्राधिकारी ने इन दोनों ग्रेडों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है ।

72. इन दोनों ग्रेडों के लिए सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ भारत की आयात सांख्यिकी में दी गई सूचना के अनुसार प्रमुख कच्ची सामग्रियों के लिए सहयोगी निर्यातकों के खपत संबंधी मानदंडों और इन कच्ची सामग्रियों की अंतर्राष्ट्रीय कीमत का उपयोग घरेलू उद्योग के सर्वाधिक कारगर संघटक की परिवर्तन लागत के साथ किया गया है । इन दोनों ग्रेडों के लिए सामान्य मूल्य निकालने हेतु निमानुसार उपर्युक्त लागत में 5% का उचित लाभ मार्जिन जोड़ा गया है :

बीआर 240

कच्चे माल की लागत प्रति किग्रा.:	**** रुपए
उपयोगिता लागत प्रति किग्रा.:	**** रुपए
परिवर्तन लागत प्रति किग्रा.:	**** रुपए
एसजीए व्यय तथा वित्तीय लागत प्रति किग्रा.:	**** रुपए
निर्माण एवं बिक्री की कुल लागत प्रति किग्रा.:	**** रुपए
% की दर से लाभ की मार्जिन प्रति किग्रा.:	* रुपए
परिकलित सामान्य मूल्य प्रति किग्रा.:	**** रुपए
45.67 रुपए की विनिमय दर पर सीएनवी अम.डा./किग्रा.	**** अम.डॉलर

बीआर 200

कच्चे माल की लागत प्रति किग्रा.:	**** रुपए
उपयोगिता लागत प्रति किग्रा.:	**** रुपए
परिवर्तन लागत प्रति किग्रा.:	**** रुपए
एसजीए व्यय तथा वित्तीय लागत प्रति किग्रा.:	**** रुपए
निर्माण एवं बिक्री की कुल लागत प्रति किग्रा.:	**** रुपए
% की दर से लाभ की मार्जिन प्रति किग्रा.:	* रुपए
परिकलित सामान्य मूल्य प्रति किग्रा.:	**** रुपए
45.67 रुपए की विनिमय दर पर सीएनवी अम.डा./किग्रा.	**** अम.डॉलर

[भाग ।—खण्ड ।]

प्र.३ नियर्ति कीमत

- (i) मै. जालियान ग्रीन पीक केमिकल्स के. लि. (उत्पादक) एवं मै. जालियान डार्ट केम इंटरनेशनल कार्पोरेशन (नियांतक);

73. डालियान ग्रीन पीक द्वारा विनिर्मित संबद्ध वस्तु का भारत को निर्यात मै. डालियान डाई कैम इंटरनेशन कार्पोरेशन के जरिए किया जाता है जो कि ग्रीन पीक की एक सहायक कंपनी है। भारत को की गई निर्यात बिक्रियों का सत्यापन किया गया है। जांच अधिक के दौरान प्रतिवादी संबंधित उत्पादक और निर्यातक ने भारत को *** मी.ट. संबद्ध वस्तु के निर्यात की सूचना दी है। प्रतिवादी उत्पादक और निर्यातक ने जांच अधिक के दौरान केवल सल्फर ब्लैक सूचना दी है। ये निर्यात सीआईएफ शर्त पर भारत बीआर 200 और बीआर 240 का ही निर्यात किया है। ये निर्यात सीआईएफ शर्त पर भारत में असंबद्ध अंतिम प्रयोक्ताओं और वितरकों को किए गए हैं और भुगतान डीपी/टीटी/एलसी शतां पर प्राप्त किया गया है।

74. निर्यातक ने भारत को की गई निर्यात बिक्रियों पर किसी कमीशन अथवा रिवेट का भुगतान नहीं किया है। भारत को किए गए निर्यातों पर निर्यातकों द्वारा अंतर्देशीय परिवहन, समुद्री भाड़े व बीमा, हैंडलिंग व्यय और बैंक प्रमारों के लिए किए गए प्रत्यक्ष बिक्री व्यय का सत्यापन किया गया है और उसे निर्यात सौदों में समायोजित किया गया है। कुछ सौदों में ऋण अवधि अंतर्गत थी जिसके लिए जांच अवधि के दौरान उक्त ऋण अवधि हेतु ***% की दर से कंपनी की औसत अल्पावधिक ऋण दर के आधार पर समायोजन किया गया है।

75. कंपनी ने इस आधार पर कि घरेलू एवं निर्यात पैकिंग एक जैसी है, अपने मूल अनुरोधों में किसी पैकिंग व्यय का उल्लेख नहीं किया था। तथापि, यह नोट किया गया था कि पैकिंग मूलतः दो प्रकारों की होती है; पीपी व्यय या पेपर कार्टून। चूंकि भारतीय उत्पादकों के घरेलू बाजार में पैकिंग अलग प्रकार की होती है, इसलिए समान तुलना के प्रयोजनार्थ अलग-अलग सौदे के लिए पैकिंग लागत को सत्यापन के अनुसार कम किया गया है।

76. सरकार को प्रस्तुत वैट विवरण के अनुसार उत्पादक द्वारा सरकार को 4% के वैट संबंधी अंतर (सीमाशुल्क बीजक में घोषित एफओबी मूल्य पर 17% की दर से संदेह वैट और यस्तु के निर्यात पर उपर्युक्त मूल्य पर पात्र वैट की 13% वापसी) का सरकार को भुगातन किया जाता है जो निर्यातक के लिए लागत होती है। अतः निर्यात सौदों पर निवल दस्तूली निकालने के लिए एफओबी मूल्य के 4% की दर से इस अंतर को समायोजित किया गया है। उपर्युक्त सत्यापित आंकड़ों के आधार पर कारखाना स्तर पर इस निर्यातक की निर्यात कीमत ऐक रहित स्थिति में निम्नानुसार बनती है।

आंकड़े

कम्पनी

का उत्पाद
कोड

मात्रा (मी.ट)

निवल बीजक
मूल्य अम. डॉ.कुल समायोजन की
राशि अम. डॉ.निवल कारखाना
मूल्य अम. डॉ.

ईपी (पैक रहित)

बीआर 200

बीआर 240

कुल

(ii) मै. शेनजी लिनफेन डाइंग केमिकल्स कं. लि. (उत्पादक) एवं मै. टियानजिन इंटरनेशनल ड्रेंगिंग कंपनी (निर्यातक)

77. उत्तरदाता संबद्ध उत्पादक एवं निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तुओं की **** मी.टन का निर्यात किया है जिसमें विभिन्न ग्रेडों का सत्कर ब्लैक शामिल है। ये निर्यात सीआईएफ शर्त पर भारत में असंबद्ध अंतिम प्रयोक्ताओं तथा वितरकों को किए गए हैं और इनका भुगतान डीपी/टीटी/एलसी शर्तों पर प्राप्त किया गया है।

78. भारत को की गई निर्यात विक्रियों पर कंपनी द्वारा किसी कमीशन या रिवेट का भुगतान नहीं किया जाता है। प्रत्यक्ष बिक्री व्यय अर्थात् अंतरदेशीय परिवहन, समुद्री भाड़ और बीमा, हैंडलिंग व्यय, बैंक प्रभारों का सत्यापन कंपनी के रिकार्ड से किया गया है और उनका समायोजन निर्यात सौदों में किया गया है। चूंकि उक्त सौदे डीपी/टीटी शर्तों पर किए जाते हैं इसलिए कोई ऋण लागत अंतर्गत नहीं होती है।

79. कंपनी द्वारा उत्पाद की बिक्री दो प्रकार की पैकिंग अर्थात् पेपर कार्टून और पीपी बोबन बैगों में की जाती है। चूंकि घरेलू बाजार और निर्यातों के लिए पैकिंग एक जैसी होती है इसलिए कंपनी ने परिशिष्ट 2 में कोई पैकिंग समयोजन नहीं दर्शाया था। तथापि, चूंकि भारतीय उत्पादकों के घरेलू बाजार में पैकिंग अलग प्रकार की है, इसलिए समान तुलना के प्रयोजनार्थ पैकिंग लागत को कारखाना स्तर पर निवल निर्यात कीमत निकालने के लिए सभी सौदों में से घटा दिया गया है।

80. सरकार को प्रस्तुत वैट विवरण के अनुसार उत्पादक द्वारा सरकार को 4% के वैट संबंधी अंतर (सीमाशुल्क बीजक में घोषित एफओबी मूल्य पर 17% की दर से संदेय वैट और यस्तु के निर्यात पर उपर्युक्त मूल्य पर यात्र वैट की 13% वापसी) का सरकार को भुगतान किया जाता है जो निर्यातक के लिए लागत होती है। अतः निर्यात सौदों पर निवल वसूली निकालने के लिए एफओबी मूल्य के 4% की दर से इस अंतर को समायोजित किया गया है। उपर्युक्त सत्यापित आंकड़ों के आधार पर कारखाना स्तर पर इस निर्यातक की निर्यात कीमत पैक रहित स्थिति में निम्नानुसार बनती है।

कंपनी का उत्पाद कोड	मात्रा (मी.ट.)	निवल बीजक मूल्य (अम.डा.)	समायोजन की तुल राशि अम.डा.	निवल निर्यात मूल्य (अम.डा.)	निवल ही पी अम.डा./मी.ट.
बीआर120%	****	****	****	****	****
बीआर130%	****	****	****	****	****
बीआर150%	****	****	****	****	****
बीआर160%	****	****	****	****	****
बीआर 170%	****	****	****	****	****
बीआर 180%	****	****	****	****	****
बीआर 185%	****	****	****	****	****
बीआर 200%	****	****	****	****	****
विलेय	****	****	****	****	****
महा योग	****	****	****	****	****

च.4 पाटन मार्जिन

81. पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ कारखाना द्वार पर सामान्य मूल्य तथा इस प्रकार से निर्धारित निर्यात कीमतों की तुलना व्यापार के समान स्तर पर की गई है और संबद्ध देशों के निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :-

(i) मै. डालियान ग्रीन पीक. केमिकल्स कं. लि. (उत्पादक) एवं मै. डालियान लाई केम इंटरनेशनल कार्पोरेशन (निर्यातक)

82. इस उत्पादक-निर्यातक युगल के लिए भारित औसत पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु अलग-अलग उत्पाद श्रेणियों (सत्कर ब्लैक की शक्तियों) के कारखाना द्वार पर निवल निर्यात कीमत की तुलना अनुपातिक आधार पर उत्पाद के संरचित सामान्य मूल्य से की गई है जो निम्नानुसार है :-

उत्पाद श्रेणी	मात्रा मी.टन	अनपैकड़ स्थिति में निवल निर्यात कीमत अम.डॉ./ मी.टन	परिकलित सामान्य मूल्य अम.डॉ./ मी.टन	पाटन मार्जिन अम.डॉ./ मी.टन	पाटन मार्जिन %
बीआर200	*****	*****	*****	****	
बीआर240	*****	*****	*****	*****	
कुल	*****	*****	*****	*****	52.8%

(ii) मे. शांकसी लिनफेन डाइंग केमिकल्स कं. लि.

83. इस उत्पादक-निर्यातक युगल के लिए भारित औसत पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु अलंग-अलग उत्पाद श्रेणियों (सल्फर ब्लैक की शक्तियों) के कारखाना द्वारा पर निवल निर्यात कीमत की तुलना अनुपातिक आधार पर उत्पाद के संरचित सामान्य मूल्य से की गई है जो निम्नानुसार है :-

उत्पाद कोड	कुल मात्रा (मी.टन)	यिना पैकिंग के निवल ई पी अम.डॉ./ मी.टन	परिकलित सामान्य मूल्य अम.डॉ./ मी.टन	पाटन मार्जिन अम.डॉ./ मी.टन	पाटन मार्जिन %
बीआर 120%	*****	*****	*****	*****	
बीआर 130%	*****	*****	*****	*****	
बीआर 150%	*****	*****	*****	*****	
बीआर 160%	*****	*****	*****	*****	
बीआर 170%	*****	*****	*****	*****	
बीआर 180%	*****	*****	*****	*****	
बीआर 185%	*****	*****	*****	*****	
बीआर 200%	*****	*****	*****	*****	
दिलेय	*****	*****	*****	*****	
कुल/ भारित औसत	*****	*****	*****	*****	53.1%

(iii) चीन जन.गण. के अन्य सभी निर्यातक

84. चीन जन.गण के अन्य सभी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का अनन्तिम निर्धारण उपलब्ध तथ्यों के आधार पर सहयोगी निर्यातकों के सौदावार आंकड़ों को ध्यान में रखकर किया गया है और संबद्ध देश के अन्य सभी असहयोगी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु इसकी तुलना संरचित सामान्य मूल्य से की गई है ।

अन्य सभी	सीएनवी अम.डॉ./भी.टन.	ईपी अम.डॉ./भी.टन	पाटन मार्जिन अम.डॉ./भी.टन
अन्य सभी	***	***	***
			149%

च.5 पाटन मार्जिन का सारांश

उत्पादक	निर्यातक	पाटित मार्जिनअम.डॉ./भी.ट.	पाटित मार्जिन %
मै. डालियान ग्रीन पीक केमिकल्स कं. लि.	मै. डालियान डाई केम इंटरनेशनल कार्पोरेशन	***	52.8%
मै. शांक्षी लिनफेन डाइंग केमिकल्स कं. लि.	मै. शांक्षी लिनफेन डाइंग केमिकल्स कं. लि.	***	53.1%
अन्य सभी	अन्य सभी	***	149%

छ. क्षति निर्धारण

85. प्रारंभिक क्षति निर्धारण पर टिप्पणी करते हुए हितबद्ध पक्षकारों ने प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद अपने अनुरोधों में निम्नलिखित तर्क दिए हैं:-

शांक्षी लेनफेन के विचार:

86. मै. शांक्षी लेनफेन ने अपने प्रारंभिक जांच परिणाम के बाट किए गए अनुरोधों में अन्य बातों के साथ-साथ यह तर्क दिया है कि

- मारत और चीन के बाहर सल्फर ब्लैक का कोई उत्पादक नहीं है। सल्फर ब्लैक का उपयोग मुख्यतः सेल्युलोज फाइबर, विस्कोज स्टेपल फाइबर और धागों, कागज और चर्म की रंगाई के लिए किया जाता है। क्षति का आरोप लगाते हुए घरेलू उद्योग के अधिकथन के विपरीत मांग में काफी अधिक सकारात्मक स्थायी वृद्धि हुई है और घरेलू उत्पादन, घरेलू मांग के अनुरूप नहीं हुआ है जिसकी वजह से खासकर इस बात को ध्यान में रखते हुए कि संबद्ध वस्तु का उत्पादन केवल भारत और चीन में किया जाता है, चीन से संबद्ध वस्तु का आयात जल्दी हो गया है।
- संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु का आयात मारत में मांग एवं भारतीय घरेलू उत्पादन में अंतर के कारण किया गया है।

- याचिका के अनुसार अनेक क्षति मापदंडों से सुधार या मामूली गिरावट का पता चलता है। इससे स्वयं इस निष्कर्ष का आधार स्थापित हो जाता है कि यह पाटन नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को आरोपित क्षति हुई हो और वर्तमान याचिका कानून की प्रक्रिया के दुरुपयोग के अलावा कुछ भी नहीं है।
- लिनफेन द्वारा रिकॉर्ड में दर्शायी गई सूचना से स्पष्टतः यह पता चलता है कि भारत में विक्रीत संबद्ध वस्तु की कीमत सामान्य मूल्य के अनुरूप और उत्पादन लागत से अधिक है और उस पर लाभ प्राप्त हुआ है तथा उससे घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।
- कि घरेलू उद्योग को आरोपित क्षति घरेलू उत्पादकों की लागत संरचना और आधुनिक सुविधाओं के अभाव तथा बड़े पैमाने पर किफायतों के लाभ की कमी की वजह से प्रति इकाई उत्पादन लागत को कम करने की असमर्थता के कारण हुई है न कि किसी आरोपित पाटन के कारण।

मे. डालियान ग्रीन पीक

87. उपर्युक्त निर्यातक ने प्रारंभिक जांच परिणाम के बाद अपने अनुरोधों में अन्य बातों के साथ-साथ यह तर्क दिया है कि

- भारतीय उद्योग ने जो क्षति चीन से हुए निर्यातों की वजह से आरोपित की है, वह इस वजह से हुई है कि भारत में सल्फर ब्लैक उद्योग असंगठित क्षेत्र में आता है। संयंत्र लघु उद्योग (एसएसआई) की श्रेणी में आते हैं। भारत की सल्फर ब्लैक विनिर्माता एसोसिएशन की छत्रछाया में आने वाले संयंत्रों में 10-30 मी.ट. प्रति माह तक का मासिक उत्पादन होता है जबकि अनुल डाइ स्टफ्स लि., वलसाद एकमात्र अपवाद है जिसका मासिक उत्पादन बाजार अनुगान के अनुसार 150-200 मी.ट./माह का होता है। चूंकि यह क्षेत्र असंगठित है इसलिए अधिकांश संयंत्रों के पास अपना विपणन विभाग नहीं है और वे अपनी वस्तु की बिक्री के लिए व्यापारियों पर निर्भर हैं।
- ये व्यापारी यदाकदा विनिर्माताओं को अच्छी कीमत देते हैं और कभी-कभी वे इन व्यापारियों को कम कीमत पर अपनी वस्तु की बिक्री कर देते हैं। असमय लाभ प्राप्तकर्ता डीलर बन जाता है जो बेहतर कीमतों पर बिक्री कर देता है और सल्फर ब्लैक की बिक्री से अच्छा लाभ कमाता है। यदि बाजार विश्लेषण कराया जाए तो यह पाया जाएगा कि व्यापारी को कभी-भी सल्फर ब्लैक की बिक्री पर घाटा नहीं हुआ है जिससे इन विनिर्माताओं पर व्यापारियों के आधिपत्य का पता चलता है।
- चूंकि सल्फर ब्लैक उद्योग असंगठित क्षेत्र में बना हुआ है, इसलिए कोई आर एंड डी प्रयास नहीं किया गया है और भारतीय संयंत्र अभी भी 1940 के दशक की अत्यंत पुरानी और अप्रचलित प्रक्रिया का पालन कर रहे हैं।

- वैश्विक रूप से यह एक स्थापित तथ्य है कि केवल कही संयंत्र व्यवहारी होते हैं जिनके पास अपनी इन हाउस डी एन सीवी उत्पादन सुविधाएं होती हैं। आषधर्यजनक ढंग से यदि अनुल को छोड़ दिया जाए तो किसी भी इकाई के पास अपने डी एन सी वी संयंत्र नहीं हैं। वे उक्त रंजक मध्यवर्ती उत्पाद की बाहर से प्राप्ति करते हैं और उसकी अत्यधिक उच्च कीमत अदा करते हैं।
- अधिकांश संयंत्र उत्तरी भारत में स्थित हैं। जहाँ उन्हें विशिष्ट स्थानिक लाभ मिला हुआ है। उत्तरी भारत में स्थित इकाइयाँ अपनी प्रमुख निविटियों अर्थात् डीएनसीवी, सल्फर और सोडियम सल्फाइड की प्राप्ति भारत के पश्चिमी या दक्षिणी भाग में स्थित संयंत्रों से करती हैं और माड़े के लिए काफी अधिक व्यय करती हैं। इस प्रकार संभार तंत्र की उच्च लागत की बजाह से ये संयंत्र आर्थिक रूप से अव्यवहार्य बन जाते हैं।
- इसके अलावा, घरेलू उद्योग द्वारा मुख्यतः बीआर 180 ग्रेड से कम और ग्रेडल 1 टन का उत्पादन किया जाता है जिससे इन कम ग्रेडों में सत्पादित मूल्यवान सह उत्पाद का स्तर कम रहता है जिसके परिणामस्वरूप उच्चतर ग्रेडों की उच्चतर हिस्सेदारी वाले उत्पाद मिश्रण तथा अधिक कारगर परिवर्तनों से युक्त चीन के नियातिकों की तुलना में घरेलू उद्योग के लिए उत्पादन लागत संरचना तुलनात्मक रूप से अधिक हो जाती है। अलग-अलग ग्रेडों की पैकिंग लागत में भी कुछ अंतर होता है।
- कि सुनवाई के दौरान घरेलू उद्योग की चिंता मुख्यतः 200 बीआर और कम ग्रेडों के संदर्भ में थी न कि 240 वी आर के संदर्भ में जिसकी आयात मात्रा कम रही है (जांच अद्यि के दौरान भारत को हुए डालियान के नियातिकों के 5% से कम) और घरेलू उद्योग द्वारा 250 बीआर या उससे अधिक ग्रेडों का उत्पादन या बिक्री नहीं की जाती है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग द्वारा स्वयं 240 बीआर का आयात किया जाता है ज्योंकि घरेलू उत्पादन अपर्याप्त है। अतः डालियान का अनुरोध है कि इन उच्च ग्रेडों के कारण प्रथम दृष्टया कोई क्षति नहीं हो सकती है और इन्हें अलग रखा जाए।
- घरेलू उद्योग द्वारा आरोपित क्षति चीन के आयातों के कारण नहीं हुई है बल्कि उनकी अव्यवस्थित लागत, अप्रचलित प्रौद्योगिकी और खराब भड़ार सूची/संभार तंत्र के कारण हुई है।

घरेलू उद्योग के विचार

88. घरेलू उद्योग ने अपने अनुरोधों में क्षति एवं कारणात्मक संबंध के बारे में नियातिकों के तर्कों का खंडन किया है और अन्य बातों के साथ-साथ यह तर्क दिया है कि इन तर्कों का कोई आधार नहीं है कि भारतीय उत्पादकों के समक्ष समस्याएं इसलिए उत्पन्न हुई हैं कि वे लघु क्षेत्र में हैं। यही उत्पादक कुछ समय पूर्व व्यवहार्य थे, वे अब अव्यवहार्य बन गए हैं जिसकी एकमात्र बजह चीन से हुआ पाठन है। इसके अलावा संगठित क्षेत्र में होने के बावजूद अनुल लि. को भी क्षति हुई है। यह तथ्य कि क्या उत्पादक के पास अपनी खुद की डीएनसीवी

सुविधा है या नहीं इस वजह से कोई प्रासंगिकता नहीं रखता है कि पाटनरोधी जांच उत्पाद विशिष्ट होती है जहाँ आंदोलनियों की कीमतें बाजार मूल्य पर ली जानी अपेक्षित होती हैं। यदि इनमें से किसी भी उत्पादक के पास खुद की डीएनसीवी है तो उससे उन्हें कोई लाभ नहीं मिल सकता है।

89. आगे यह तर्क दिया गया है कि इस तर्क का कोई आधार नहीं है कि घरेलू उद्योग द्वारा मुख्यतः बीआर 180 से कम ग्रेड का उत्पादन किया जाता है। इसके विपरीत घरेलू उद्योग द्वारा मुख्यतः बीआर 200 और कुछ मात्रा में बीआर 240 का उत्पादन किया जाता है। घरेलू उद्योग का तर्क यह है कि चीन के उत्पादकों ने भी मुख्यतः बीआर 200 का निर्यात किया है इस आशय का कोई दावा भ्रामक है कि निर्यातित सामग्री कम क्षमता की थी। इस आशय के विवरण का भी कोई आधार नहीं है कि बीआर 240 का अपर्याप्त उत्पादन होता है। क्षमतायार निर्यात विवरण से स्पष्टतः यह पता चलता है कि बीआर 240 का आयात 5% से कम हुआ है जबकि बीआर 240 का घरेलू उत्पादन आयात मात्रा से अधिक होता है।

90. आगे यह तर्क दिया गया है कि डालियान ने मुख्यतः विभिन्न विधिक उपबंधों और निर्णयों को पुनः प्रस्तुत किया है। तथापि, डालियान ने ऐसे किसी कारण को अभिज्ञात नहीं किया है जिसे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो। जैसा कि उत्पादन, बिक्री, क्षमता उपयोग आदि से संबंधित मापदंडों से स्पष्ट हो जाता है, घरेलू उद्योग की वृद्धि उस स्तर से काफी कम रही थी जिसे वर्ष 2003-04 और 2005-06 के बीच हुए घरेलू उद्योग के उत्पादन पर विचार करते हुए पाठित आयातों के अभावों में प्राप्त किया जा सकता था। यह भी स्पष्ट हो जाता है कि पाठित आयातों के कारण घरेलू उद्योग अपना उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा और बाजार हिस्से को बढ़ाने से वंचित हुआ है। इसके अलावा पाठित आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही थी और इस प्रकार लाभ, निवेश पर आय और नकद प्रवाह के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन खराब हुआ है।

छ.1 क्षति की जांच एवं कारणात्मक संबंध

91. अनुबंध-II के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम-11 में यह प्रावधान है कि क्षति निर्धारण में उन कारकों की जांच शामिल है, जिनसे घरेलू उद्योग को क्षति इंगित होती हो, सभी संबद्ध तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, जिनमें पाठित आयातों की मात्रा, घरेलू बाजार में समान वस्तु की कीमतों पर उनके प्रभाव तथा ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामकारी प्रभाव शामिल हैं" कीमतों पर पाठित आयातों के प्रभाव की जांच में यह जांच करना जरूरी समझा गया कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाठित आयातों के कारण उल्लेखनीय कीमत कटौती हुई है, अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव का उद्देश्य कीमतों में उल्लेखनीय स्तर तक अन्यथा मंदी लाना अथवा कीमत में वृद्धि को रोकना है, जो अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक होती।

92. प्राधिकारी विभिन्न क्षति मापदंडों और कारणात्मक संबंध की जांच हेतु ऊपर दर्ज किए गए अनुसार निम्नलिखित खंड में घरेलू उद्योग के क्षति संबंधी दावों के बारे में हितबद्ध पार्टियों के तर्कों को नोट करते हैं :

93. पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबंधित आवेदन सत्फर लैक उत्पादक एसोसिएशन द्वारा संबद्ध वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों की ओर से प्रस्तुत किया गया है। तथापि, दो घरेलू उत्पादकों अर्थात् मै. अनुल लि. और मै. भानु केमिकल्स, जिनका भारत में संबद्ध वस्तुओं के कुल उत्पादन में प्रमुख हिस्सा है, ने क्षति से संबंधित पूर्ण सूचना प्रस्तुत की है। नियमावली के नियम-2 (ख) की शर्तों के अनुसार उक्त उत्पादकों को इस जांच के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग माना गया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि यद्यपि भारत में संबद्ध वस्तुओं के अन्य अनेक ज्ञात उत्पादक हैं, तथापि वे सभी असंगठित क्षेत्र में हैं और उनका अलग-अलग उत्पादन अत्यंत कम है। आवेदकों ने यह नियेदन किया है कि चीन से लंबे समय तक हुए प्रारी पाटन के कारण अनेक उत्पादक बाजार छोड़कर चले गए हैं। अन्य उत्पादकों से भी अपनी लागत एवं क्षति से संबंधित सूचना प्रदान करने का अनुरोध किया गया, जो अब तक प्राप्त नहीं हुई है। अतः प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ उपर्युक्त घरेलू उत्पादक, जो नियम 2(ख) में यथा परिभाषित घरेलू उद्योग हैं, द्वारा प्रस्तुत लागत एवं क्षति से संबंधित सूचना की जांच की गई है। तथापि, जिस सीमा तक सूचना उपलब्ध है, समग्र घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के समग्र प्रभाव की जांच की गई है।

94. भारत में घरेलू उद्योग की स्थिति और घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच के लिए नियमावली के अनुबंध-2 के अनुसरण में इस उद्योग की स्थिति को प्रभावित करने वाले सूचकों जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक, लाप्रप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की सीमा एवं मार्जिन आदि पर विचार किया गया है। घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले उपर्युक्त आर्थिक मानदंडों जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा आदि की जांच निम्नानुसार की गई है:-

(क) पाटित आयातों की मात्रा का प्रभाव : आयात की मात्रा एवं बाजार हिस्सा

(क) आयात की मात्रा तथा संबद्ध देशों का हिस्सा

95. जहां तक पाटित आयातों की मात्रा का प्रश्न है, प्राधिकारी द्वारा यह विचार किया जाना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में निपरेक्ष रूप में अथवा भारत में उत्पादन अथवा खपत के सापेक्ष उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि डीजीसीआईएंड एस के आंकड़े आयात से संबंधित पूर्ण आंकड़े नहीं दर्शाते और डीजीसीआईएंडएस द्वारा सूचित आंकड़ों की तुलना में आयात की मात्रा अधिक है। अपने इस दावे के समर्थन में घरेलू उद्योग ने आईबीआईएस द्वारा संकलित सौदेवार आंकड़े प्रस्तुत किए हैं। यह तर्क दिया गया है कि

संबद्ध वस्तुओं का आयात अनेक शीर्षों के अंतर्गत किया जाता है और डीजीसीआईएस के आंकड़ों में अनेक वर्गीकरणों के अंतर्गत आयातों को शामिल नहीं किया गया है।

96. प्राधिकारी ने डीजीसीआईएडएस द्वारा प्रदत्त सौदेवार आयात आंकड़ों और घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त आईबीआईएस आंकड़ों के आधार पर संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा की जांच की है। चीन के उत्तरदाता निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत निर्यात संबंधी आंकड़ों पर भी विचार किया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि उत्तरदाता निर्यातकों द्वारा सूचित संबद्ध देश से निर्यात डीजीसीआईएस द्वारा सूचित आयात आंकड़ों की तुलना में अधिक पाया गया परन्तु यह आईबीआईएस द्वारा सूचित आयात मात्रा से संबंधित आंकड़ों के निकट है। डीजीसीआईएडएस के आंकड़ों तथा आईबीआईएस के आंकड़ों की जांच से यह ज्ञात होता है कि संबद्ध वस्तुओं का आयात टैरिफ शीर्ष 32.04 के अंतर्गत अनेक वर्गीकृत शीर्षों के तहत किया जा रहा है, जिस पर डीजीसीआईएडएस के आंकड़ों में उचित ध्यान नहीं दिया गया है। अतः अंतिम निर्धारण के प्रयोजनार्थ मात्रा एवं कीमत के विश्लेषण हेतु आईबीआईएस के सौदेवार आंकड़ों में सूचित मात्रा पर विचार किया गया है।

97. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि सलफर ब्लैक का आयात संबद्ध देश तथा अन्य देशों से विभिन्न क्षमताओं में किया जाता है। प्रारंभिक निर्धारण में विभिन्न क्षमताओं की आयात मात्रा को मात्रा एवं कीमत विश्लेषण हेतु सलफर ब्लैक 100% क्षमता (बीआर 240 के समतुल्य) के समतुल्य परिवर्तन किया गया था। तथापि, पूर्व में किए गए विचार-विमर्श के अनुसार उत्पाद के सांदरण के आधार को ही गलत पाया गया है। यह पाया गया है कि इस सामग्री के विभिन्न ग्रेडों या क्षमताओं के लिए कोई अंतर्राष्ट्रीय मानूक न होने के कारण अलग-अलग उत्पादक के विभिन्न ग्रेडों के समतुल्य किसी उचित तर्क पर पहुंचना संभव नहीं है। अतः अंतिम निर्धारण हेतु आयात आंकड़ों में सूचित आयात मात्रा और मूल्य तथा घरेलू उद्योग की उत्पादन एवं विक्री की मात्रा एवं मूल्य को किसी समतुल्य ग्रेड में परिवर्तन के बिना उसी रूप में स्वीकार किया गया है। उपर्युक्त आधार पर संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा निम्नानुसार बनती है:

मात्रा मी.ट. में

देश	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि (जन.,06 से दिस.,06)
चीन जन.गण.	927	1,184	3,398	4,340
प्रवृत्ति(सूचीबद्ध)	100	128	367	468
अन्य	-	-	19	-
कुल	927	1,184	3,417	4,340
प्रवृत्ति(सूचीबद्ध)	100	128	369	468

संबद्ध देशों का हिस्सा	100%	100%	99%	100%
------------------------	------	------	-----	------

98. इन आंकड़ों से ज्ञात होता है कि भारत में संबद्ध वस्तुओं का 100% आयात चीन जून.गण. से किया जाता है, सिवाय पूर्ववर्ती वर्ष में अन्य देशों से अल्प भान्ता में हुए आयात के, जो संभावित यानांतरण के कारण है, क्योंकि यह प्रतीत होता है कि उक्त देश में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की कोई सुविधा नहीं है। प्राधिकारी के ध्यान में यह लाया गया है कि यह एक अत्यंत प्रदूषणकारी उद्योग होने के कारण अधिकांश देशों में यह उद्योग समाप्त हो गया है और भारत और चीन ही विश्व में इस उत्पाद के दो प्रमुख उत्पादक हैं। संबद्ध देशों से आयात में आधार वर्ष की तुलना में 360% से अधिक की वृद्धि हुई है।

(ख) उत्पादन एवं क्षमता उपयोग पर वास्तविक एवं संभावित प्रभाव

99. मांग के आकलन तथा घरेलू उद्योग के घरेलू प्रचालन पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच के लिए घरेलू उत्पादन की मात्रा एवं बिक्री की जांच की गई है। घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन एवं बिक्री तथा भारतीय बाजार में कुल मांग निम्नानुसार बनती है :-

मात्रा भी.ट. में

अवधि	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की स्थापित क्षमता	भी.ट.	3,800	3,800	3,800	3,800
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	100	100
अन्य उत्पादकों की क्षमता	भी.ट.	3000	2000	2000	1000
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	67	67	33
कुल क्षमता	भी.ट.	6,800	5,800	5,800	4,800
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	85	85	71
उत्पादन (घ.उ.)	भी.ट.	2,946	3,466	3,934	4,334
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	118	134	147
उत्पादन (अन्य)	भी.ट.	2500	2300	900	900
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	92	36	36
कुल घरेलू उत्पादन	भी.ट.	5,446	5,766	4,834	5,234
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	89	96
घरेलू उद्योग की क्षमता उपयोग	%	78	91	104	114
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	118	134	147

100. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि जहाँ आवेदक घरेलू उद्योग की क्षमता एक समान बनी रही है और उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि हुई है, वहीं इस उत्पाद की कुल घरेलू क्षमता

में लगभग 30% की पर्याप्त गिरावट आई है। घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि संबद्ध देश से सतत पाटन के कारण असंगठित क्षेत्र के उत्पादक बाजार से बाहर होने के लिए विवश हुए हैं। अतः आवेदक घरेलू उद्योग के उत्पादन और क्षमता उपयोग में सुधार को असंगठित क्षेत्र में लगभग 25 उत्पादकों के अलग होने की पृष्ठभूमि में देखना होगा और अन्य उत्पादकों के उत्पादन और बिक्री में गिरावट भी घटे हुए स्तर पर चल रही है।

101. घरेलू उद्योग एवं अन्य घरेलू उत्पादकों की मांग संबंधी पद्धति और बिक्री निष्पादन की जांच भी निम्नानुसार की गई है :

जांच अवधि

उत्पादन, बिक्री तथा मांग	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि(जन.,06 से दिसं.,06)
घ.उ. की घरेलू बिक्री	2,414	2,695	3,262	3,419
प्रवृत्ति	100	112	135	142
अन्य घरेलू उत्पादकों की बिक्री	2,471	2,152	749	730
प्रवृत्ति	100	87	30	30
कुल घरेलू बिक्री	4,884	4,847	4,011	4,149
प्रवृत्ति	100	99	82	85
आयात	927	1,184	3,417	4,340
प्रवृत्ति	100	128	369	468
कुल मांग	5,811	6,031	7,428	8,489
प्रवृत्ति	100	104	128	146

102. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में इस उत्पाद की घरेलू बिक्री में 15% से अधिक की गिरावट आई है। यद्यपि क्षति जांच अवधि के दौरान आवेदक घरेलू उद्योग की बिक्री में वृद्धि हुई जबकि इस उत्पाद की घरेलू मांग में आधार वर्ष की तुलना में लगभग 46% की वृद्धि हुई है और संबद्ध देशों से आयात जो कुल आयातों के 100% हैं, में 360% से अधिक की वृद्धि हुई है। जहां समेची क्षति जांच अवधि के दौरान आवेदक घरेलू उद्योग की क्षमता 3800 मी.ट. के स्तर पर बनी रही है वहीं प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि अनेक लघु उत्पादक इस उत्पाद के विनिर्माण से अलग हो गए हैं जिससे आधार वर्ष की तुलना में 70% से अधिक की बिक्री में गिरावट का पता चलता है। अतः आंकड़ों से यह पता चलता है कि भारत में लघु उत्पादकों द्वारा रिक्त किए गए स्थान की भरपाई मुख्यतः संबद्ध देश से हुए पाटित आयातों द्वारा और आंशिक रूप से आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा की गई है।

103. आधार वर्ष की तुलना में आवेदक घरेलू के क्षमता उपयोग में सुधार हुआ है किन्तु इसके साथ-साथ संबद्ध वस्तु के कई लघु एवं मझौले उत्पादक संबद्ध देश से सतत पाटन के कारण बाजार से बाहर हो गए हैं।

104. प्रकटन विवरण के पश्चात अपने अनुरोधों में घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग में वृद्धि ठोस एवं तरल सल्फर ब्लैक को जोड़ने के कारण हुई है। यदि उत्पादन और बिक्री को अलग से देखा जाए तो यह प्राया जाएगा कि वर्ष 2005-06 तक वृद्धि होने के बाद जांच अधिक में ठोस रूप के उत्पादन और बिक्री में गिरावट आई है जबकि तरल रूप के उत्पादन और बिक्री में बढ़ोत्तरी हुई है। द्वितीयतः वस्तुस्थिति यह है कि याचिकाकर्ता कंपनियों ने भारत में पाटन के कारण उत्पादन क्षमताओं का उपयोग नहीं किया था। तरल एवं ठोस रूप की साधारण वृद्धि के परिणामस्वरूप क्षमता उपयोग 100% से अधिक प्रतीत होता है। इस संबंध में ग्राधिकारी नोट करते हैं कि ठोस और तरल दोनों प्रकार के सल्फर ब्लैक को समान वस्तुएं माना गया है और उन्हें विद्याराधीन उत्पाद में शामिल किया गया है। अतः क्षति निर्धारण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग के सुझाव के अनुसार पृथक विश्लेषण उचित नहीं है।

105. तथापि, ग्राधिकारी यह नोट करते हैं कि नियामावली के अनुबंध ॥ के पैरा 1 में ग्राधिकारी के लिए संबद्ध वस्तु के घरेलू उत्पादकों पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करना अपेक्षित है। अतः केवल आवेदकों की उत्पादन मात्रा और क्षमता उपयोग से इस मामले में संबद्ध वस्तु के घरेलू उत्पादकों की सही स्थिति उपलब्ध नहीं होती है। यह तथ्य कि लगभग 25 लघु एवं मझौले उत्पादक बाजार से बाहर हो गए हैं और आवेदकों से भिन्न घरेलू उत्पादकों की मात्रा में आधार वर्ष के बाद तेजी से गिरावट आई है, से यह पता चलता है कि आवेदकों की क्षमता की तुलना में देश में उपलब्ध अप्रयुक्त क्षमता काफी अधिक है।

ग) बाजार हिस्से पर वास्तविक एवं संभावित प्रभाव:

106. घरेलू बिक्री एवं बाजार हिस्से पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच की गई है, जो निम्नानुसार है:

मांग में बाजार हिस्सा (%)

बाजार हिस्सा	2003-04	2004-05	2005-06	अवधि(जन.,06 से दिसं.,06)
संबद्ध देश	15.95%	19.63%	45.74%	51.13%
प्रवृत्ति	100	123	287	321
अन्य देश	0	0	0.26%	0
घरेलू उद्योग	41.53%	44.68%	43.92%	40.28%

प्रवृत्ति	100	108	106	97
अन्य घरेलू उत्पादक	42.52%	35.69%	10.08%	8.80%
प्रवृत्ति	100	84	24	20
सभी घरेलू उत्पादक	84.05%	80.37%	54.00%	48.87%
प्रवृत्ति	100	96	64	58

107. जहाँ घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं की मांग में लगभग 46% की वृद्धि हुई है, यहाँ कुल मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में केवल 1% की वृद्धि हुई है और घरेलू उत्पादकों के हिस्से में आधार वर्ष में 85% से जांच अवधि में कुल मांग में 48% से अधिक की भारी गिरावट आई है, जबकि पाटित आयातों का हिस्सा जो आधार वर्ष में 16% था, जांच अवधि में बढ़कर कुल मांग का 51% हो गया है, जो यह दर्शाता है कि पाटित आयातों ने संबद्ध वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों की बिक्री की मात्रा एवं बाजार हिस्से को उल्लेखनीय रूप से प्रभावित किया है। यह इस तथ्य से भी ज्ञात होता है कि लगभग 25 लघु तथा मध्यम आकार की यूनिटों ने इस अवधि में उत्पादन बंद कर दिया है जो आवेदकों से अन्य घरेलू उत्पादकों की बिक्री की मात्रा में आई गिरावट से प्रदर्शित होता है।

(ख) घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

108. जहाँ तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का प्रश्न है प्राधिकारी से यह विचार करने की अपेक्षा की जाती है कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण उल्लेखनीय कीमत कटौती हुई है, अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव का उद्देश्य कीमतों में उल्लोनीय स्तर तक अन्यथा मंदी लाना अथवा कीमत में वृद्धि को रोकना है, जो अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक होती है।

109. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के रूप में केवल विभिन्न क्षमताओं वाले दानेदार सल्फर ब्लैक का निर्यात किया गया है। अतः कीमत प्रभाव की जांच के लिए पाटित आयातों के पहुंच मूल्य की उचित तुलना समान वस्तु की घरेलू बिक्री से करने के लिए घरेलू बिक्री कीमत और दानों की क्षति रहित कीमत पर विचार किया गया है।

(इ) कीमत कटौती तथा यम कीमत पर बिक्री का प्रभाव

110. कीमत कटौती के अनंतिम निर्धारण हेतु जांच की समस्त अवधि के दौरान संबद्ध देश से पाटित आयातों के भारित औसत पहुंच मूल्य की तुलना उसी अवधि के लिए केवल सल्फर ब्लैक के दानों से घरेलू उद्योग को प्राप्त भारित औसत निवल बिक्री से की गई है। आयातों के पहुंच मूल्य की गणना करते समय संबद्ध देश से आईबीआईएस आंकड़ों के अनुसार सूचित

आयात कीमतों में 1% प्रहस्तन प्रभाग तथा लागू आधारभूत सीमासुल्क को जोड़ दिया गया है।

111. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण करते समय घरेलू उद्योग द्वारा दिए जाने वाले रिबेट, छूट तथा कमीशन एवं भुगतान किए गए केन्द्रीय उत्पाद शुल्क को घटा दिया गया है। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति की गणना केवल सल्फर ब्लैक के दानों के लिए की गई है।

112. कम कीमत पर बिक्री के निर्धारण के प्रयोजनार्थ संबद्ध देश से आयातों की भारित औसत पहुंच कीमत सल्फर ब्लैक के दानों के संबंध में जांच अधिकारी द्वारा निर्धारित घरेलू उद्योग की क्षमता रहित बिक्री कीमत से की गई है।

रु./किलो

विवरण	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अधिकारी(जन.,06 से दिस.,06)
घरेलू उद्योग की बिक्री, लागत (दाने)	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	93	97	100
घ.उ. की नि.बि.प्रा.(दाने)	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	98	106	103
पहुंच मूल्य - चीन जन.गण. (दाने)	43.24	41.24	39.06	39.52
प्रवृत्ति	100	95	90	91
कीमत कटौती	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	105	152	136
कीमत कटौती(%)	30-40%	30-40%	50-60%	50-60%
भारित औसत एनआईपी (दाने)				****
कम कीमत पर बिक्री				****
कम कीमत पर बिक्री %				75-85%

113. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि यद्यपि घरेलू उद्योग की भारित औसत बिक्री लागत आधार वर्ष की तुलना में लगभग समान रही है और पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में उसमें लगभग 3% की वृद्धि हुई है। तथापि, पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में घरेलू उद्योग की भारित औसत बिक्री प्राप्ति में 3% की गिरावट आई है। आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि पाटित

आयातों के भारित औसत पहुंच मूल्य में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 9% की गिरावट आई है।

114. पाटित आयातों का भारित औसत पहुंच मूल्य समूची क्षति जांच अवधि के लिए घरेलू उद्योग की भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति से पर्याप्ततः कम रहा है और उससे घरेलू उद्योग पर अत्यधिक कीमत कटौती का प्रभाव पड़ा है। पहुंच मूल्य क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री लागत और जांच अवधि के लिए निर्धारित क्षति रहित कीमत से भी काफी कम रहा है जिससे अत्यधिक कम कीमत पर बिक्री हुई है।

(ii) पाटित आयातों के कारण कीमत न्यूनीकरण तथा कीमत ह्रास

115. घरेलू कीमतों पर पाटित आयातों के कीमत न्यूनीकरण प्रभाव की जांच के लिए घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति की प्रवृत्ति की तुलना उत्पादन लागत से की गई है।

रु./किग्रा.

विवरण	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि(जन.-विसं. 06)
बिक्री लागत (दाने)	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	93	97	100
बिक्री कीमत (दाने)	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	93	99	96
पहुंच मूल्य	43.24	41.24	39.06	39.52
प्रवृत्ति	100	95	90	91

116. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि जहां घरेलू उद्योग के उत्पादन लागत में पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में 3% की वृद्धि हुई है, वहीं उसी अवधि के दौरान बिक्री मूल्य, जो घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और बिक्री की लागत से बहुत कम है, में लगभग 3% की गिरावट आई है। पहुंच मूल्य जो घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और बिक्री लागत से काफी कम था, उसमें आगे और जांच अवधि के दौरान लगभग 9% की गिरावट आई है। इसके परिणामस्वरूप घरेलू बाजार में मांग में अच्छी वृद्धि होने के बावजूद उत्पादन लागत निकालने के लिए घरेलू उद्योग अपनी कीमतें नहीं बढ़ा सका। घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत की जांच की अवधि के दौरान बिक्री की घरेलू लागत से बहुत कम रही है। अतः यह प्रतीत होता

है कि यद्यपि लागतों में वृद्धि हुई है, तथापि, घरेलू उद्योग अपने बाजार हिस्से को बढ़ाए रखने के लिए पाटित आयातों की स्थिति के कारण कीमतों को कम बनाए रखने के लिए विवश रहा है। इस कीमत न्यूनीकरण प्रभाव के कारण घरेलू उद्योग को वित्तीय नुकसान हुआ प्रतीत होता है क्योंकि यह उद्योग घरेलू बाजार में अपनी लागत निकाल पाने में असमर्थ रहा है।

117. उपर्युक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि पाटित आयातों की मात्रा में वृद्धि, निरपेक्ष रूप में तथा घरेलू बाजार में मांग के हिस्से के रूप में, दोनों रूपों में पाटित आयातों का घरेलू उद्योग पर मात्रा तथा कीमत प्रभाव के रूप में प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है और घरेलू बाजार में उत्तरेखणीय कीमत कटौती के कारण घरेलू उद्योग को अपनी कीमतों कम रखने पर विवश होना पड़ा है।

छ.2 क्षति से संबंधित अन्य कारकों की जांच

118. पिछले खंड में ऊपर उल्लिखित कुछेक क्षति से संबंधित कारकों जैसे बिक्री तथा बाजार हिस्से में वास्तविक एवं संभावित गिरावट, आयातों की मात्रा में वास्तविक एवं संभावित वृद्धि आदि की जांच के बाद प्राधिकारी द्वारा इस खंड में क्षति से संबंधित अन्य अनिवार्य मानदंडों की जांच की गई है :

(क) सामग्रदता पर वास्तविक तथा संभावित प्रभाव

119. घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा घरेलू समान वस्तु (सल्फर ब्लैक दानों तथा तरल) की बिक्री से अर्जित लाभ की जांच की गई है जो निम्नानुसार है :-

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि(जन.,06 से विसं.,06)
बिक्री की घरेलू लागत (समस्त उत्पाद)	रु./किग्रा.	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	107	105
घरेलू बिक्री कीमत (समस्त उत्पाद)	रु./किग्रा.	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	98	105	99
प्रति इकाई लाभ/हानि	रु./किग्रा.	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	(496)	(777)	(1,736)

120. आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष भी घरेलू बाजार में उद्योग को बेची गई प्रति इकाई पर मामूली घाटा हुआ था। किन्तु बिक्री लागत में वृद्धि के कारण जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा बिक्रीत उत्पाद पर प्रति इकाई घाटा पर्याप्ततः बढ़ा है जबकि पूर्ववर्ती वर्ष में पर्याप्त सुधार प्रदर्शित करने के बाद जांच अवधि के दौरान बिक्री प्राप्ति में आगे और गिरावट आई है।

(ख) नकद प्रवाह पर वास्तविक एवं संभावित प्रभाव

121. घरेलू प्रचालनों पर घरेलू उद्योग का नकद लाभ निम्नानुसार बनता है :-

नकद लाभ	नकद लाभ	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि(जन,06 से दिस.,06)
कर पूर्व कुल लाभ	कर पूर्व कुल लाभ	लाख रुपए	****	****	****	****
प्रवृत्ति	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	554	1,050	2,459
घरेलू बिक्री पर मूल्यांकन	घरेलू बिक्री पर मूल्य छाप	लाख रुपए	****	****	****	****
प्रवृत्ति	प्रवृत्ति		100	104	128	102
नकद लाभ: घरेलू बिक्री	नकद लाभ: घरेलू बिक्री	लाख रुपए	****	****	****	****
प्रवृत्ति	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	(5)	(96)	(470)

122. घरेलू उद्योग को अपने घरेलू प्रचालनों में पर्याप्त नकद घाटा हुआ है। आधार वर्ष में सकारात्मक नकद प्रवाह से हटकर घरेलू उद्योग जांच अवधि में अत्यधिक नकद घाटे की स्थिति में पहुंच गया है।

(ग) निवेश से हुई आय एवं वास्तविक एवं संभावित प्रभाव

123. निवेश अथवा परिसंपत्तियों तथा घरेलू प्रचालन हेतु नियोजित कार्यशील पूँजी से हुई आय की जांच की गई है, जो निम्नानुसार है :-

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधिजन,06 से दिसं.,06)
कर गूर्ख कुल लाभ	रुपए/लाख	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	554	1,060	2,459
म्याज	रुपए/लाख	****	****	****	****
पीवीआईटी	रुपए/लाख	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	97	122	95
घरेलू प्रवालनों हेतु नियोजित पूँजी (एनएफए + उच्चसूची)	रुपए/लाख	****	****	****	****
प्रवृत्ति	किंग्रा.	100	109	134	134
नियोजित पूँजी से आय	%	****	****	****	****
प्रवृत्ति	किंग्रा.	100	89	91	71

124. क्षति की जांच की अवधि के दौरान कीमतों में मंदी के कारण घरेलू बिक्री पर उल्लेखनीय नकद धाटे के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग द्वारा घरेलू निवेश से प्राप्त अद्य में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान उल्लेखनीय गिरावट आई है, जो 30% से अधिक है।

(घ) माल सूचियां

125. औसत स्टॉक तथा बिक्री के प्रतिशत के रूप में स्टॉक की दृष्टि से घरेलू उद्योग की माल सूची धारिता में गिरावट देखी गई है।

मालसूची	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि (जन.,06 से दिसं.,06)
प्रारंभिक स्टॉक	किंग्रा.	****	****	****	****
अंतिम स्टॉक	किंग्रा.	****	****	****	****
औसत स्टॉक	किंग्रा.	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	76	97	60
बिक्री के % के रूप में मालसूची	%	14.60	9.29	10.16	6.35

उ) उत्पादकता

126. श्रमिक उत्पादकता तथा दैनिक उत्पादन के रूप में घरेलू उद्योग की उत्पादकता की जांच की गई है जो श्रमिक उत्पादकता तथा दैनिक उत्पादकता के रूप में उत्पादकता में चल्लेखनीय सुधार दर्शाती है। अतः घरेलू उद्योग की उत्पादकता से घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संकेत नहीं मिलता है।

उत्पादकता	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
उत्पादन (भी.ट.)	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	118	134	147
कर्मचारियों की संख्या	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	81	72	71
दिवसों की संख्या	350	350	350	350
उत्पादकता (भी.ट./कर्मचारी)	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	146	186	208
प्रतिदिन उत्पादकता (भी.ट./दिवस)	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	118	134	147

च) रोजगार तथा मजदूरी

रोजगार तथा मजदूरी	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि(जन.,06 से दिस.,06)
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	****	****	****	****
प्रवृत्ति		100	81	72	71
मजदूरी	लाख रु.	****	****	****	****
प्रवृत्ति		100	72	62	65
प्रति कर्मचारी मजदूरी	लाख रु.	****	****	****	****
प्रवृत्ति		100	90	86	92

127. रोजगार के स्तर तथा घरेलू उद्योग द्वारा भुगतान की गई मजदूरी से संबंधित आंकड़ों की जांच से ज्ञात होता है कि इस अवधि के दौरान उत्पादन में वृद्धि के बावजूद रोजगार के स्तर तथा घरेलू उद्योग द्वारा भुगतान की गई मजदूरी में गिरावट आई है।

छ. नव्या निवेश जुटाने की क्षमता

128. घरेलू उद्योग ने क्षति जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु में पूँजी विस्तार हेतु कोई नया निवेश नहीं किया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु के उत्पादन में आभी भी

सलग्न अन्य घरेलू उत्पादकों ने अपने उत्पादन और बिक्री स्तर में भारी कमी की है और लघु एवं असंगठित क्षेत्र में लगभग 25 अन्य उत्पादक बाजार से बाहर हो गए हैं जिससे यह पता चलता है कि यह उत्पाद आगे निवेश के लिए अधिक आकर्षक नहीं रहा है और उद्योग नए निवेश को जुटाने में असमर्थ है, यद्यपि घरेलू मांग में योग्यता यृद्धि हुई है।

ज) वृद्धि

129. विभिन्न भौतिक एवं वित्तीय मानदंडों के रूप में घरेलू उद्योग की वृद्धि यह दर्शाती है कि आवेदक घरेलू उद्योग की उत्पादन तथा क्षमता उपयोग में वृद्धि सकारात्मक है। तथापि, यह वृद्धि मुख्यतः इस तथ्य के कारण हुई है कि अन्य कई अन्य घरेलू उत्पादक बाजार छोड़कर चले गए हैं। तथापि, इन यूनिटों के बंद होने के कारण घरेलू बाजार में अप्राप्यता क्षमता काफी अधिक है। घरेलू मांग की स्थिति सकारात्मक होने तथा घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार होने के बावजूद घरेलू बिक्री से हुए लाभ तथा लगाई गई पूँजी से आय के रूप में वित्तीय कार्य निष्पादन में क्षति की जांच की अवधि के दौरान उल्लेखनीय गिरावट आई है। बाजार हिस्सा, लाभ, नकद प्रवाह तथा निवेश से आय और मानदंड नकारात्मक वृद्धि दर्शाते हैं।

(अ) पाटन की सीमा

130. घरेलू उद्योग को हुई क्षति के सूचक के रूप में पाटन मार्जिन दर्शाती है कि संबद्ध देश के सहयोगी निर्यातकों के लिए निर्धारित मार्जिन न्यूनतम स्तर से काफी अधिक है।

(1) कीमतों को प्रभावित करने वाले काशक

131. पाटित आयातों की मात्रा की प्रवृत्ति तथा संबद्ध देशों से कीमतों तथा घरेलू कीमतों की जांच से यह ज्ञात होता है कि पाटित आयातों ने मात्रा तथा कीमत प्रभाव के माध्यम से घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित किया है।

छ.3 समग्र अकलन

132. कारकों के उपर्युक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि क्षमता, उत्पादन एवं बिक्री में सुधार के बावजूद घरेलू उद्योग को बाजार हिस्से, निवल बिक्री प्राप्ति, लाभप्रदता, निवेश पर आया और नकद प्रवाह एवं वृद्धि में गिरावट के कारण क्षति हुई कठै। संबद्ध देश से प्राप्ति आयात की मात्रा में कई गुना वृद्धि हुई है और पाटित आयातों की कीमतों से घरेलू उद्योग की कीमतों में भारी कटाती हो रही है जिससे घरेलू उद्योग उत्पादन लागत को लाभकारी स्तर तक बढ़ाने और उसकी प्राप्ति करने के लिए कीमतों में वृद्धि करने से चंचित रहा है। घरेलू

उद्योग द्वारा कीमत न्यूनीकरण के कारण लाभकारी कीमत प्राप्त करने में असफल रहने के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को भारी वित्तीय घाटा हुआ है। कई इकाइयों के बंद होने और अन्य घरेलू उत्पादकों की क्षमता, उत्पादक और बिक्री में भारी गिरावट आने से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति वास्तविक और पर्याप्त है।

अ. कारणात्मक संबंध तथा अन्य कारक

133. वास्तविक क्षति के अस्तित्व तथा घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाठित आयातों की मात्रा तथा कीमत प्रभाव की, कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री और कीमत न्यूनीकरण एवं कीमत हास के प्रभाव की जांच के पश्चात भारतीय नियमों एवं पाटनराधी करार में सूचीबद्ध अन्य संकेतात्मक मानदंडों की भी जांच की गई है ताकि यह देखा जा सके कि क्या पाठित आयातों के अलावा किसी अन्य कारक का घरेलू उद्योग को हुई क्षति में योगदान रहा है। तदनुसार निम्नलिखित मानदंडों की जांच की गई है।

(i) अन्य देशों से आयातों की मात्रा तथा कीमतें

134. प्रयुक्त आयात सांख्यिकी के अनुसार संबद्ध वस्तुओं का आयात केवल जांच में दिवाराधीन देश से ही किया जा रहा है। अतः अन्य देशों से आयातित संबद्ध वस्तुओं की मात्रा तथा मूल्यों का घरेलू उद्योग पर प्रभाव नहीं पड़ा होगा।

(ii) मांग में संकुचन एवं /अथवा खपत के पैटर्न में परिवर्तन

135. जांच की समस्त अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की मांग में अच्छी वृद्धि देखी गई है, अतः घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण मांग में संभावित संकुचन को नहीं माना जा सकता। खपत तथा मांग से संबंधित आंकड़े इस उत्पाद के खपत के पैटर्न में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं दर्शाते।

(iii) विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों की व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां एवं उनके वीच प्रतिस्पर्धा

136. वस्तुएं मुक्त रूप से आयात योग्य हैं। आवेदक संबद्ध वस्तुओं के प्रमुख उत्पादक हैं और घरेलू उत्पादन एवं बिक्री में उनका सर्वाधिक योगदान है। अन्य घरेलू उत्पादक या तो बाजार से बाहर थले गए हैं अथवा उन्होंने अपना उत्पादन बहुत कम कर दिया है। किसी भी हितबद्ध पक्षकार द्वारा प्राधिकारी के ध्यान में प्रतिस्पर्धा की कोई शर्त अथवा व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियों से संबंधित कोई साक्ष्य नहीं लाया गया है।

(IV) प्रौद्योगिकी का विकास

137. हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग को उत्पादन की अप्रचलित प्रौद्योगिकी एवं अव्यहार्य भान्ना के कारण क्षति हुई है। तथापि, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उत्पादकों एवं संबद्ध देश के निर्यातकों द्वारा संबंध वस्तु के उत्पादन हेतु प्रयुक्त की गई प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी एक समान है और उत्पादन प्रक्रिया में कोई खास अंतर नहीं है।

(V) घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन

138. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि क्षति जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की निर्यात बिक्री में पर्याप्त गिरावट प्रदर्शित होती है, तथापि क्षति की अवधि के दौरान निर्यात कीमत में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। तथापि, क्षति के विश्लेषण के प्रयोजनार्थ केवल घरेलू बिक्री पर ही विचार किया गया है और घरेलू उद्योग के निर्यात कार्य निष्पादन के कारण हुई क्षति, यदि कोई हुई हो, को पाटित आयातों का कारण नहीं माना गया है।

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
निर्यात बिक्री	मी.ट.	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	77	53	66
कीमत	रु./किग्रा.	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	123	118

VI) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

139. जैसा कि पूर्व में नोट किया गया है, कुल उत्पादन तथा कर्मचारियों द्वारा उत्पादन के रूप में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार हुआ है। अतः इसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं माना जा सकता।

VII) अन्य कारक

140. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के इन तर्कों को नोट किया है कि घरेलू उद्योग को क्षति अलाभकारी आकार, स्थानिक अलाभ और उच्च संभार तंत्र तथा पुरानी प्रौद्योगिकी जैसे भारत में घरेलू उत्पादकों में अंतरनिहित अनेक कारकों के कारण हुई है। इस संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि भारत में संबद्ध वस्तु का प्रमुख उत्पादक अर्थात् मै. अनुल लि.का आदेदकों का कुल उत्पादक का 63% और कुल घरेलू उत्पादन का 52% बनता है और उसके पास भारत के पश्चिमी भाग में अवस्थित समेकित आषुनिक संघट्र है जो बड़े पैमाने पर किफायतों और प्रौद्योगिकी अलाभ के कारण किसी स्थानानिक घाटे या अकुशलताओं से दो-

चार नहीं हुआ है, जैसा कि हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है किंतु फिर भी उसे क्षति हुई है। वस्तुतः ऐसे कारकों, यदि कोई हो द्वारा उत्पन्न क्षति को अलग करने के लिए सर्वाधिक कुशल उत्पादक के निष्पादक के संबंध में अत्यधिक क्षति मापदंडों की जांच की गई है। हितबद्ध पक्षकारों ने यह भी तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति मध्यर्ती व्यापारियों द्वारा धारित उच्च मार्जिन के कारण हुई है। तथापि, ऐसे तर्कों की पुष्टि सत्यापनीय साक्ष्य के साथ नहीं की गई है। अतः हितबद्ध पक्षकारों के इन तर्कों कि घरेलू उद्योग को क्षति उपर्युक्त कारकों की वजह से हुई है, जो इस मामले के तथ्यों पर निर्भर नहीं हैं।

141. उपर्युक्त अनंतिम विश्लेषण यह दर्शाता है कि पाटित आयातों को छोड़कर किसी अन्य ज्ञात कारक ने घरेलू उद्योग को प्रभावित नहीं किया है। दूसरी ओर पाटित आयातों के मात्रात्मक और कीमत प्रभावों की वजह से घरेलू उद्योग को हुई क्षति प्रतीत होती है।

I. कारणात्मक संबंध को स्थापित करने वाले कारक

142. क्षति की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में यास्तविक गिरावट आई है। अतः पाटित आयातों एवं घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध निम्नलिखित आधारों पर स्थापित होता है:-

- क. क्षति की जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि हुई है और पहुंच कीमत में अत्यधिक गिरावट आई है, जिसके कारण उल्लेखनीय कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री हुई है। इसके प्रत्यक्ष परिणाम के तौर पर घरेलू उद्योग लाभदायक कीमतें प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।
- ख. आयात की मात्रा में वृद्धि और उत्पादन लागत को वसूल करने के लिए कीमतें बढ़ाने के संबंध में घरेलू उद्योग की असमर्थता के कारण कंपनी के लाभ, नकद प्रयाह तथा निवेश से आय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।
- ग. उल्लेखनीय सकारात्मक कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री के कारण भारत में घरेलू बाजार से अनेक उत्पादक बाहर हो गए हैं और अप्रयुक्त उत्पादन क्षमता काफी अधिक बढ़ी है।

143. प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने प्रकटन विवरण के पश्चात अपने अनुरोधों में क्षति एवं कारणात्मक संबंध के निर्धारण के बारे में कोई खास तर्क या अनुरोध नहीं किया है। अतः प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है और यह क्षति संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा और कीमत प्रभाव के कारण हुई है।

ट. क्षति की मात्रा एवं क्षति मार्जिन

144. जैसा कि पूर्व में नोट किया गया है, विभिन्न क्षमताओं के सत्पर ब्लैक के दानों का आयात जांच अधिकारी के दौरान भारत में किया गया है। तथापि, प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि ग्रेडों को परिभाषित करने के लिए उत्पाद में कोई अतरास्ट्रीय मानक निहित नहीं है। अलग-अलग उत्पादकों के ग्रेडों को उनके मानक ग्रेडों के अनुसार परिभाषित किया जाता है, जो अन्य उत्पादकों या प्रयोक्ताओं के ग्रेडों के साथ पर्याप्तता प्रसिद्धापनीय होते हैं जिनका सत्यापन इस तथ्य से किया जाता है कि उत्पादकों और निर्यातकों के पास उसी उत्पाद के अलग-अलग ग्रेड हैं। प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि चूंकि संबद्ध वस्तु के अलग-अलग ग्रेड समान वस्तुएँ हैं, इसलिए संबद्ध वस्तु के एक ग्रेड के आयात से समस्त अन्य ग्रेडों के उत्पादन और उसकी मात्रा पर वास्तविक क्षति पहुंचती है। अतः क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु घेड-दर-घेड तुलना न तो संभव है और न ही अपेक्षित है। घरेलू उत्पादकों द्वारा दो घरेलू प्रमुख ग्रेडों, अर्थात् बीआर 200 और बी आर 240 का उत्पादन किया जाता है, तो संबद्ध देश के निर्यातकों द्वारा उत्पादित और निर्यातित विभिन्न ग्रेडों से तुलनीय है। तदनुसार संबद्ध देश के निर्यातकों के लिए भारित औसत क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु अनपैकड़ रूप में हुए संबद्ध देश से निर्यातों के भारित औसत पहुंच मूल्य की तुलना हेतु पैक रहित स्थिति में स्थर्युक्त दोनों ग्रेडों की क्षति रहित कीमत का निर्धारण किया गया है। तदनुसार क्षति मार्जिन निम्नानुसार निकाला गया है :-

उत्पादक	निर्यातक	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन
		अम.डॉ./ मी.ट.	%
मे. डालियान ग्रीन पीक केमिकल कं. लि.	मे. डालियान डाइ केम इंटरनेशन कार्पोरेशन	****	35-45%
मे. शांक्षी लिनफेन डाइग केमिकल कं. लि.	मे. शांक्षी लिनफेन डाइग केमिकल कं. लि.	****	35-45%
अन्य सभी	अन्य सभी	****	105- 115%

ठ. निष्कर्ष

145. हितबद्ध पक्षों द्वारा उठाए गए मुद्दों, किए गए प्रस्तुतीकरण तथा प्राधिकारी को उपलब्ध कराए गए तथ्यों, जिन्हे इस जांच परिणाम में दर्ज किया गया है, की जांच के उपरात प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि :-

- (i) संबद्ध वस्तुओं का संबद्ध देशों से भारतीय बाजार में प्रवेश निर्यातक देशों के घरेलू बाजारों में उनके सामान्य मूल्य से कम कीमतों पर हुआ है;

(ii) संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तुओं की पाटन मार्जिन अत्यधिक तथा न्यूनतम से अधिक हैं;

(iii) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है और यह क्षति संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों की मात्रा तथा कीमत प्रभाव दोनों के कारण हुई है।

उ भारतीय उद्योग का हित तथा अन्य मुद्दे

146. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य पाटन की अनुचित व्यापार पद्धतियों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करके भारतीय बाजार में खुली तथा उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को बहाल करना है, जो देश के भी सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपाय लागू करने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी प्रकार से प्रतिबंधित नहीं होंगे अतः उपभोक्ताओं के लिए इस उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

द. सिफारिशें

147. प्राधिकारी ने निर्धारित नियमों के अनुसार संबद्ध देश से पाटन तथा क्षति के बीच कारणात्मक संबंध के बारे में जांच शुरू की है। संबद्ध देश के खिलाफ सकारात्मक पाटन मार्जिन की पुष्टि करने और इस आशय का निष्कर्ष का निष्कर्ष लेने के बाद कि ऐसे पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है, प्राधिकारी का यह मत है कि पाटन एवं घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करने के लिए निश्चयात्मक उपाय लागू करना अपेक्षित है। तदनुसार प्राधिकारी नीचे निर्धारित रूप और ढंग से निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं।

148. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कम से कम शुल्क के नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति की मार्जिन से कमतर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की संस्तुति करते हैं, ताकि घरेलू उद्योग की क्षति को दूर किया जा सके। प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि उत्पाद की क्षमता और कीमत के संबंध में भारी अंतर है। अतः संदर्भ कीमत या नियत शुल्क के संबंध में निश्चयात्मक शुल्क इस भावले में उचित रहेगा। अतः प्राधिकारी मूल्यानुसार निश्चयात्मक उपाय को लागू करने की सिफारिश करते हैं जिसका आकलन संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों के सीआईएफ मूल्य के प्रतिशत के रूप में किया जाएगा। तदनुसार संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर इसके साथ संलग्न शुल्क तालिका के कॉलम 9 में इंगित राशि के तुल्य पाटनरोधी शुल्क के

केन्द्रीय सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से लगाए जाने की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका

क्र.सं	उप शब्द अथवा ट्रिप्पि वाद	वस्तुओं का विवरण	दिनेदर्शन	उद्गम का देश	निवात का देश	उत्पादक	निवातक	शुल्क दर्दि शारी
1	2	3.	4	5	6	7	8	9.
1	32.04	सल्फर स्लैक	सभी रूपों और क्षमताओं में	यौन जन.गण.	कोई	मै. डालियान यौन पीक केमिकल्स कं. लि.	मै. डालियान यौन पीक केमिकल्स कं. लि. इंटरनेशनल कमर्सेन्स	42.4%
2.	32.04	सल्फर स्लैक	सभी रूपों और क्षमताओं में	यौन जन.गण.	कोई	मै. शावसी लिनफेन डाइग केमिकल्स कं. लि.	मै. शावसी लिनफेन डाइग केमिकल्स कं. लि.	41.3%
3	32.04	सल्फर स्लैक	सभी रूपों और क्षमताओं में	यौन जन.गण.	कोई	उपर्युक्त के अलावा अन्य कोई स्थायोंजन		116.8%
4	32.04	सल्फर स्लैक	सभी रूपों और क्षमताओं में	यौन जन.गण. से इतर अन्य कोई	यौन जन.गण.	कोई	कोई	116.8%

३. आगे की प्रक्रिया

149. इस सिफारिश के परिणामस्पूर्ति केन्द्र सरकार के आदेश के खिलाफ कोई अपील अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क औषध सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकारण में दायर की जा सकेगी।

150. प्राधिकारी द्वारा अधिनियम के संगत प्रावधानों और समय-समय पर इस संबंध में जारी की गई सार्वजनिक सूचनाओं के अनुसार इसमें संस्तुत निश्चयात्मक उपायों को जारी रखने, संशोधन करने या उन्हें समाप्त करने की जरूरत की समय-समय पर समझा जा सकती है। प्राधिकारी द्वारा ऐसी किसी समीक्षा के लिए कोई अनुरोध तक तक स्वीकृत नहीं किया जाएगा जब तक कि उसे इस प्रयोजनार्थ निर्धारित समय सीमा के भीतर किसी हितबद्ध प्रकार द्वारा दायर न किया गया हो।

आर. गोप्तवन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)
(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)
NOTIFICATION
New Delhi, the 24th September, 2008
FINAL FINDINGS

Sub: Anti-Dumping Investigation involving import of Sulphur Black from China PR.

F. No. 14/16/2006-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, (hereinafter referred to as the Rules) thereof:

2. WHEREAS Sulphur Black Manufacturers' Association (herein after referred to as the applicant) has filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as this Authority), in accordance with the Act, and the Rules, alleging dumping of Sulphur Black, originating in or exported from the China PR (herein after also referred to as subject country) and requested for initiation of an investigation for levy of anti dumping duties on the subject goods.

3. AND WHEREAS, the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicants issued a public notice dated 26th June 2007, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject country, in accordance with the sub-Rule 5(5) of the Rules, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of antidumping duty, which, if levied would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

4. The Authority notified its preliminary findings vide Notification dated 10th March 2008 recommending imposition of provisional measure and the vide Notification No. 48/2008-Customs dated 11th April 2008, the Central Government has imposed provisional antidumping duty on import of the subject goods from the subject country. On the request of the Designated Authority the Central Government extended the time period for completion of this investigation till 25th September 2008, in terms of Rule 17 of the Rules.

A. Procedure

5. Procedure described below has been followed with regard to this investigation after issuance of the Preliminary Findings by the Authority.

- (i) The Designated Authority sent copies of preliminary finding dated 10th March 2008 to all interested parties to this investigation, including the Embassy of the subject country in India, cooperating exporters from the subject country, domestic industry and the importers participating in the investigation requesting them to make their views known in writing within 40 days of the notification of the preliminary findings.
- ii) The comments of the interested parties in response to the preliminary findings have been taken on record and the Authority has examined the issues raised therein.
- iii) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- iv) The Authority held a public hearing on 1st April 2008 to provide an opportunity to all interested parties to present there views. The oral submissions made by the parties during the public hearing reproduced in writing have been taken on record for the purpose of this investigation.
- v) The Authority has examined the confidentiality claims of various interested parties in respect of the data submitted by them. The information, which is by nature confidential or which has been provided on a confidential basis by the interested parties, alongwith non-confidential summary thereof, has been treated confidential. *** in this findings represents information furnished by the petitioner on confidential basis and so considered by Authority under the Rules;
- vi) The Authority conducted on the spot verification of the co-operating exporters and domestic industry to the extent considered necessary
- vii) The Authority disclosed the essential facts of the case vide disclosure statements dated 9th September 2008. The interested parties have filed their comments to the disclosure statements and the same has been taken on record and addressed, to the extent the same are substantiated by the parties concerned;
- (viii) Investigation was carried out for the period starting from Jan 2006 to December 2006 (POI). However, injury investigation has been carried out for a period from 2003-04, 2004-05, 2005-06 and POI.

ix) For the sake of brevity issues addressed in the preliminary findings, to the extent they have not been contested by the interested parties, have not been repeated in this finding

B. Product under Consideration and Like Article

6. The product under consideration in the present petition is Sulphur Black. Sulphur black is produced either in grains/flake form or in liquid form. Sulphur Black in grain form is a lustrous grain, imparts full black shade with a slight reddish or greenish tone. Sulphur Black is mainly used for dyeing cellulose fiber. Sulphur Black is also useful for dyeing viscose staple fiber and yarn, paper and leather.

7. In the preliminary findings the Authority noted that none of the interested parties have raised any issue regarding the product under consideration and like articles as indicated in the petition and on the basis of information available with it, the Authority provisionally held that sulphur black produced in flake/grain form and liquid form, as well as sulphur black produced in various concentrations are physically and chemically alike, use same production process and are technically and commercially interchangeable. Accordingly, it was held that the product under consideration in this investigation covers sulphur black in all forms and all concentrations. However, in the post preliminary submissions the interested parties have raised certain technical issues regarding the product scope, nature of the product and comparability, for like article determination. The issues have been summarized as follows:

M/s Shanxi Linfen Dyeing Chemicals Co. Ltd

8. M/s Shanxi Linfen, in its submissions, has argued inter alia that

- The subject good is generally manufactured and sold in different strengths namely, BR 100, BR 200, BR 240, etc. BR 240 represents 100% strength. There is a direct co-relation between the strength of Sulphur Black and cost of production involved. Higher the strength, higher the cost and lower the strength, lower the cost. However, the Preliminary Findings proceed on the premise that there is no difference in the manufacturing process and the cost involved, which is incorrect as there is significant difference in cost depending upon the strength and concentration. Lower the strength/ concentration lower is the cost.
- It is well recognized custom trade and practice that different strength of Sulphur Black can only be compared on strength to strength basis. Different strengths of the subject good are used for different purposes and cannot be substituted and therefore, as per trade practice difference in strength acquire significance.

M/s Dalian Green Peak

9. The above exporter in its submissions has argued inter alia that

- There appears to be a confusion that 'strength' is synonymous with "concentration" and that BR240 represents 100% concentration. In fact there is no 100% concentration and 'Strength' has a different context altogether. Dalian had noted this confusion in the Notice of initiation and Petition but had not pointed it out earlier as there was no proposal to adjust on the basis in effect of 'Concentration'. Hence, it was seen merely as terminology adopted by the Hon'ble Authority and of no consequence.
- Actually, 'strength' refers to the dyeing ability of the sulphur black. The number following BR is determined compared to the dyeing ability of standard. For example, the standard BR200 of one KG is used to dye the fabric of 1 square in controlled conditions; then the tested sulphur black of one KG also used to dye the fabric of 1 square in the same controlled conditions. The experienced technician usually compares the dyeing result of the fabrics dyed by the BR200 and the tested sulphur black by eye to determine the strength of the tested sulphur black.
- Chinese producers produce 3 tones for each grade. For the argument that the strength of 501 BR200 is almost equal to the strength of 522 BR180 or 521 BR180 for Dalian, it can only be determined and proved through experiment and can be verified during the on-site visit. Since there is no generally accepted standards for sulphur black BR, the three types of sulphur black BR produced by different producers may be different. Therefore, sulphur black with specific strength should be the like product of the sulphur black with the same strength, when there is such sulphur black produced and sold by the Indian domestic industry according to the definition of "like product".
- BR200 is also the largest product of the cooperating producers from China PR and the only grade that both the cooperating exporters have exported to India during the POI and was the main grade exported by each cooperating exporter.
- The domestic industry's concerns during the public hearing was chiefly in context of 200BR and lower grades and not 240BR of which import volumes are low and DI does not produce or sell 250BR or higher grades. Moreover, DI itself imports 240BR as there is insufficient domestic production. Therefore, there can prima facie be no injury on account of these high grades and they may be excluded.
- Since BR240 is mainly used in India for liquid form which has limited market only for high end, high volume textiles /garments producers often for exports, there would, in fact be a good case for excluding BR240 and higher grades of the subject goods that are presently neither produced or sold in India by DI or exported to India from China.

- Although BR240 and the sulphur black in liquid form are covered by this investigation up to now, they should be excluded from the calculation of the dumping margin and the injury margin. BR240 was not exported by other Chinese exporters to India during the POI and the BR240 exported by Dalian did not enter into the commerce of India and thus should not be regarded as export sales to India.
- It is stated that there was no sulphur black in liquid form exported to India from China during the POI. The cost and price of the sulphur black in liquid form is higher than those of the sulphur black in grain/flake form.
- As there were actually no export sales of BR240 and the sulphur black in liquid form to India during the POI, for fair comparison of the export price and normal value stipulated in Article 2.4 of the AD Agreement, BR240 and the sulphur black in liquid form should be excluded from the calculation of the normal value and non-injurious price, and thus be excluded from the calculation of the dumping margin and the injury margin.
- Similarly, higher grades of the Subject Goods may be excluded as they were neither produced in India nor sold in India during the POI by DI or exporters.

Examination by the Authority

10. The Authority has noted the views expressed by various interested parties on the scope of the product under consideration and like articles. The issue was also examined in detail during the verification of production process and technical details of the product at the premises of the exporters concerned, on the basis of these arguments. The interested parties have argued and Authority notes that it is not appropriate to describe sulphur black in terms of 'concentration', as various BR values, by which the product is described, does not denote concentration of the product, but the dying strength of the product, calibrated with reference to a standard specified by the producer of such products. It is also noted that a universal standard does not exist for the product. It is also noted that BR value is not the only description of the product but represents the tone (Blue-Red) of the product. Similarly, other tones of the product are also available and are denoted such as DR etc. However, in trade parlance the product is described in various BR or DR values, which represents the dyeing strength of the product compared to the standard product of manufacturer or user.

11. The Authority noted in the preliminary findings that only sulphur black in grain/flakes form has been imported during the POI from the subject country. However, sulphur black produced in flake/grain form and liquid forms are physically and chemically alike, use same production process and the products are technically and commercially interchangeable. Though the interested parties have argued that liquid should be excluded from the scope

of product under consideration, since this product has not been exported from China, no significant argument has been made by any interested party to show that these two types of the product are not technically or commercially interchangeable. On the other hand it has been argued by the domestic industry that both grain and liquid are interchangeably used by the user industry for dyeing cotton fabrics, paper and leather. The liquid sulphur black provides a more consistent dyeing property and reduces use of other chemicals in the dyeing process at the users end. Use of liquid dyes also reduces use of process water, steam, power and increases productivity. Therefore, the Authority does not find any convincing ground to find that liquid sulphur black is not a like product compared to the grains and therefore, to remove the same from the scope of investigation.

12. As regards exclusion of various strength of sulphur black, particularly BR 240, as argued by the exporters, there has been no significant argument by any interested party to establish that they are not inter se substitutable. Merely because the domestic industry does not produce significant quantity of this product type or there is no significant import of this product type during the POI, the product cannot be excluded from the scope of the investigation, as long as the product type is physically and chemically similar, inter se substitutable and alike to the other product types within the same general description of the product i.e., sulphur black. In fact the domestic industry produces BR240. The Authority also noted above that there is no universal/international standard for this product. Therefore, one grade of one producer could match with another grade of another producer, or a user defined grade, on the basis of the standards set by the producer or user. Therefore, there is a considerable degree of interchangeable use of various grades. None of the interested parties have filed any significant argument on this issue in their post disclosure submissions.

13. In view of the above, the Authority holds that sulphur black in all forms and all strengths are inter se technically and commercially substitutable and therefore, like articles for the purpose of this investigation. Accordingly, this investigation covers sulphur black in all forms and all strengths (hereinafter referred to as subject goods). The product is classified under Chapter 32 of the Customs Tariff Act. Specific tariff head at Eight Digit level is 32041907.

C. Domestic Industry and Standing

14. The application for this investigation was filed by the Sulphur Black Manufacturers' Association on behalf of its members supported by a resolution of the association.

15. The Authority recorded in the preliminary findings that it has been brought to the notice of the Authority that there are ten known active producers of subject goods in India, namely M/s Atul Limited, M/s Bharti

Chemicals Pvt. Ltd., M/s Apco Dyechem Pvt. Ltd., M/s Madhav Dye & Chemicals, M/s Rajasthan Dye and Chemicals, M/s Maulick Dyechem, M/s S M Chemicals, M/s Nitin Industries, M/s Khera Chemicals, M/s Dyechem India. Apart from these known producers, there were a large number of small producers (about 25) of subject goods, who have either suspended production or exited from this product segment due to intense dumping of the product in the Country. Two major producers of the subject goods i.e., M/s Atul Limited and M/s Bhanu Chemicals, accounting for 83% of total production of the subject goods, have provided relevant information in the present petition. Balance quantity is produced by other small producers as above, in small scale sector, who have supported the application made by the association. Therefore, the applicants command the standing to file the application.

16. It was also recorded in the preliminary findings that one of the applicant domestic producers i.e., M/s Bhanu Chemicals, and one of its sister concerns had imported certain quantities of sulphur black in grain form during the POI under advance licensing scheme and otherwise, for processing them into liquid form for export purpose. The applicants have argued that such small quantity of imports by the applicant should not disqualify it to be treated as one of the constituents of the domestic industry, for the purpose of examination of standing and injury as per the Indian Rules. It has also been argued that even if this producer is disqualified to be treated as a part of the domestic industry, the other producer i.e. M/s Atul limited, with a production of 2723 MT, commands about 52% of the total production of the subject goods in India. It has also been argued that as per the Indian Rules, the exclusion of an importing domestic producer from the domain of domestic industry, for the purpose of determination of standing and injury, is not automatic and depends upon the merit of the case.

17. Other interested parties have not disputed the preliminary determination of standing and domestic industry. Only Dalian in its comments on the preliminary findings has submitted that the Authority should consider that the applicants account for less than 45% of total domestic production during POI and not 54% during POI as claimed. However, the basis on which they have arrived at this figure has not been provided. As per the information available with the Authority Atul Limited commands 52% of total production of sulphur black in the country (including all grades on actual strength basis) and therefore, the contention of the exporter is not correct. It has been further argued that the production of BR240 in domestic market was limited, there is no domestic production of grades BR250 and higher, and many of the Applicants (including Bhanu) import BR240 from China, including Dalian, during the POI and to date. This issue has already been addressed in the like article determination and therefore, does not affect the standing and domestic industry determination. None of the interested parties have filed any argument on standing issue in their post disclosure submissions. Therefore, the Authority confirms its findings in the preliminary findings in respect of domestic industry and its standing to file the application.

18. As recorded in the preliminary findings the applicant Association was requested to file the cost and injury data in respect of other existing producers. However, the other producers are mostly in the unorganized sector and have not filed any cost and injury data. Therefore, the cost and injury information of the participating domestic industry, which constitutes about 83% of total domestic production, has been considered for the final determination.

D. De Minimis Limits

19. As per the import data received by the Authority from the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) and other secondary sources, as well as the data furnished by the cooperating exporters from the subject country, the imports of the subject goods, from the subject country, are above the de minimis level.

E. Other submissions and issues raised

M/s Shanxi Linfen Dyeing Chemicals Co. Ltd

20. In addition to specific comments on the methodology of determination of dumping, injury and causal links, recorded in the respective sections in this finding the above exporter, in its various submissions, has inter alia made the following general arguments:

- That the allegations of dumping, injury and causal link have not been duly substantiated by the domestic industry in its application and without ascertaining the adequacy and accuracy of the information filed the Authority should not have initiated this investigation;
- The Domestic Industry has claimed excessive confidentiality on information and documents that are already in the public domain. No reasons have been accorded by the Domestic Industry regarding the confidentiality of data;

M/s. Dalian Green Peak Chemicals Co. & M/s Dalian Dye Chon International Corporation

21. In addition to specific comments on the methodology of determination of dumping, injury and causal links, recorded in the respective sections in this finding the above exporter, in its various submissions, has inter alia made the following general arguments:

- The exporter has argued that the Authority failed to communicate the possibility of an adjustment to the cooperating exporters and to invite comments thereon. Though in some jurisdictions provisional duty may be levied without a preliminary determination, Rule 13 in India explicitly requires a preliminary determination to precede any Provisional duty to

- avoid 'ambushing' exporters and importers. In this spirit the exporters could have been informed that the Hon'ble Authority was considering adjustment and the methodology thereof and invited comments on the same.
- the issue of adjustment has been wrongly proceeded on as there appears to be a confusion that 'Strength' is synonymous with Concentration and that BR240 represents 100% concentration.
 - Even if the Authority confirms NME treatment to Dalian, it may note Dalian's co-operation and offer a higher standard of disclosure or construction of Dalian's normal value than the disclosure available in case of construction of normal value of non-cooperating exporters that have in effect waived or forfeited their respective legal rights by non-cooperation.
 - That the benefit of the lesser duty norm not be extended to non-cooperating exporters since this discourages cooperation.
 - When there is physical characteristics difference between the subject product and the like product, the adjustment should be made only to the normal value of the like product so that the normal value of the like product is comparable to the export price of the subject product.
 - Normally there are two kinds of methods to adjust the physical characteristics difference which are widely used by the anti-dumping authorities around the world. One method is based on the market value difference incurred by the difference in physical characteristics and other method is based on the cost difference incurred by the difference in physical characteristics.
 - The Applicant has kept certain crucial information, pertaining to the costing information and the methodology adopted to arrive at the normal value, confidential without providing meaningful non-confidential summaries thereof. Therefore, the Applicant has not fulfilled requirement of providing non-confidential summaries of the costing information and the calculation of the normal value and has significantly hampered the right of Dalian to defend itself in this investigation.

Examination by the Authority

22. As far as the adequacy and accuracy of information at the time of initiation of the investigation is concerned, it is noted that the investigation was initiated upon *prima facie* satisfaction of the Authority regarding the adequacy and accuracy of information submitted by the applicants in respect of dumping, injury and causal links. Therefore, the arguments of the interested parties are not tenable.

23. The Authority notes that neither the Antidumping Agreement, nor the Rules requires the Authority to make a pre-preliminary determination disclosure of the methodology to be adopted by the Authority in its preliminary determination and seek comments of parties. The provisional measure is aimed at providing a temporary relief to the domestic industry from the

onslaught of dumping and continued injury during the investigation phase. Therefore, preliminary determination is a provisional assessment, mostly based on table analysis of the data; and does not require same standard of analysis as in the case of final determination. Neither the Agreement, nor the Rules require the Authority to issue a disclosure of the determination made in the preliminary findings. The methodology of provisional determination had been adequately explained in preliminary findings. Only disclosure provision, under the Rule, is in terms of Rule 16, to be made before the final findings. Therefore, the arguments of Dalian that they should have been given a full disclosure of the methodology before determination or a disclosure of the determination after the provisional finding, does not hold good.

24. As regards higher standard of disclosure to cooperating exporters vis-à-vis non-cooperating exporters and differential treatment in respect of lesser duty rules, the Authority notes that general disclosures are issued to all interested parties and confidential disclosures are issued to the participating exporters in respect of their data. Therefore, higher disclosure standards are already built into the system and do not require any special treatment for Dalian, as has been argued. Neither the Rules, nor the Agreement provides for preferential treatment to cooperating exporters in respect of lesser duty application. Therefore, the arguments of this party are not tenable.

25. As far as the methodology of comparison and adjustments are concerned, the comments and arguments of the interested parties have been duly addressed in the relevant section for proper comparison and determination of final dumping margins.

26. The interested parties have also raised the issue of inadequate non-confidential disclosures by the opposing parties. It has been argued that the Non Confidential Petition filed by the Petitioner remains defective, and the evidence as to calculation of normal value in the Non Confidential version is incomplete and the interested parties are unable to comment upon the allegations of dumping of the subject goods for the reason that methodology along with the evidence used for constructing the normal value for China PR have not been disclosed. In this connection the Authority notes that the non-confidential submissions made by the interested parties and confidentiality claims of the respective parties have been examined at the time of submission and the parties were asked to make adequate non-confidential disclosures for the benefit of other parties. On the basis of the submissions made, the information, which are by nature confidential, viz. cost and selling information and other information which are commercially sensitive and have been submitted in confidential manner by a party supplying such information, have been treated so. No information has been treated as confidential in an automatic manner or without application of mind as has been argued by the parties. The information submitted on non-confidential basis and indexed or summarized information of confidential information as submitted by the parties, have been placed in the public folder.

F. Determination of Dumping Margin

27. The Authority notes that responses to exporter's questionnaire have been received from the following exporters of the subject goods from the subject countries:

1. M/s. Dalian Green Peak Chemicals Co. Ltd (Producer) alongwith Dalian Dye Chem International Corporation (Exporter)
2. M/s Shanxi Linfen Dyeing Chemicals Co. Ltd.

28. The questionnaire responses of these producers and exporters were examined and further information was called from them. The responding producers/exporters have filed additional submissions which were also taken on record and examined in the preliminary finding. The exporters concerned have rebutted the non-market economy presumption. On the basis of preliminary examination of the questionnaire responses and the Market economy responses of the responding producers and exporter and supplementary submissions made by them the Authority provisionally held that the responding producer/exporters from China are not operating under market economy conditions. In their post preliminary finding submissions the responding exporters have disputed these provisional findings. None of the interested parties have filed any significant argument on this issue in their post disclosure submissions. The views of the responding exporters, on the preliminary market economy determination, have been summarized as follows:

Views of M/s. Dalian Green Peak Chemicals Co. Ltd (Producer) and M/s Dalian Dye Chem International Corporation (Exporter);

29. In the submissions made on behalf of this producer/exporter it has been argued inter alia that

- The Authority may note that a number of leading trading countries have decided to recognize China as a market economy and that these include developed market economies like Singapore and New Zealand. This makes less relevant the decision by some other jurisdictions/WTO members as criteria to presume NME Status for China.
- There should not be any hostile discrimination qua China in respect of the NME issue. It may be recalled here that since certain jurisdictions have conferred MET recognition to Russia the Hon'ble Authority has ceased to treat Russia as a NME in recent investigations though Russia has been treated as NME in other jurisdictions within the past 3 years.
- there is, *prima facie*, no reasonable basis to assume that the said subject goods business sector in China operates as a NME and thus Dalian may be excluded from being deemed to be operating under NME conditions and the information furnished by Dalian clearly shows that Dalian makes

its business decisions exclusively in a manner of business in a market economy.

- The laws introduced in China in recent years as applicable to this business sector and to Dalian are similar to the comparable laws in market economies and had begun to be enforced by the POI.
- Dalian does not enjoy a monopoly on Subject Goods production, trade or exports and that there is no State/Government control on pricing and costing of Dalian. Producer purchases the raw materials and sells the finished products at market driven prices that are not regulated by the State/Government. In turn, Exporter exports the Subject Goods, *inter alia*, to India during the said POI at market driven prices not influenced by the Government. Further, there is no State/Government management control of the Producers or their respective prices and costs.
- The accounting system used by Dalian is consistent with International norms in a market economy. Dalian does not receive any subsidies other than permitted VAT reimbursement that are levied on domestic sales and purchases its foreign exchange through the authorized dealer bank, as in a market economy like India and maintains its accounts consistently with international norms.
- It is also submitted that the prices paid in India for the subject goods exported by Dalian during the POI include a reasonable profit margin. It is submitted that the decisions of Dalian with respect to prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment, are made in response to market signals reflecting supply and demand and the costs of the inputs reflect market values. It is submitted that there is neither any State regulation of costs or prices of these inputs in China, nor any system of 'administered prices'.
- Further, there is no distortion of production costs and financial situation as the Producer has not converted former State assets, or distorted depreciation thereof, or engaged in barter trade or debt forgiveness or debt/equity swaps, or received the benefit of any write-off.
- Dalian has exported the subject goods to India during the POI consistent with its normal value and, in fact, the Export Price of Dalian to India during the POI, as may be verified, is the highest from China. Thus, the Export Price of Dalian to India has been determined by market signals and commercial considerations and not by Government influence. The Producer and Dalian have also repaid any debt consistently as required.
- Dalian, like Shanghai and Shenzhen, has high FDI concentration and that these cities exporters ordinarily have high EP in different investigations reflecting the greater influence of international pricing and MET norms in the supply chains and management of exporters from these cities. Local economic environment of Dalian is positively market oriented and is remarkably exposed to both domestic and foreign competitions.
- Dalian is subject to China's laws and regulations with respect to bankruptcy and property respectively. There are a number of bankruptcies in China of similar firms, including in the POI.

- As in India the exchange rate is based on the market rate as determined by the Central Bank as is reflected in the confidential data furnished along with the said Confidential Response. Further, Dalian has borrowed from the banks on market terms and repaid its loans as per schedule as in a market economy Dalian has acquired its land through market economy mechanisms.
- In any case the practice in other jurisdictions is not to reject or disregard an exporter's efforts to exclude itself from NME treatment without verification of the information furnished by the said exporter in this regard. Dalian agrees to verification of the same and the information furnished.
- Dalian has a Union and wage rates are well above the prescribed minimum wages applicable. Dalian has also paid for its land-use during the POI. Dalian is repaying its loan and market based interest as per the payments schedule. Therefore, Dalian submits that it isn't appropriate to conclude that the enterprise will work under the guidance of the State relating to production, sales, pricing etc for the law.
- that full or part 'state ownership' is not listed as a published criterion, relevant for price/behavior comparability, in either the said Protocol or the said Rules and may not be read into the phrase 'interference by the State' since the said Protocol contemplates price comparability only and the said Rules provide for 'operate as a market economy firm' indicating behavior.
- that the stated purpose of NME is to correct for possible price distortions. Dalian submits that conversion ratios in accordance with different economies of scale are well known. Thus, if keeping in mind Dalian's verified conversion ratio based on its economies of scale, the price of its key raw materials are comparable with the international price of these raw materials than it is clear that there has been no price distortion and thus, no reason to deny MET to Dalian.
- Dalian has earned and distributed profits regularly during POI and thus Dalian is behaving/operating like a market economy firm.
- Ownership of Dalian appears to be the main issue in respect of grant of MES.

Views of M/s Shanxi Linfen Dyeing Chemicals Co. Ltd

30. In the submissions made on behalf of this producer/exporter it has been argued inter alia that

- In 1997, Linfen Dyeing was converted into a limited liability company in accordance with PRC Company Law, which is a different legal form from the Solely State-funded Company provided by Article 65 of the Company Law. The employees are the real controllers and managers of Linfen Dyeing. As a result of the above, in 2005 the shareholders agreed to transfer the managing power to the employees by re-allocation of members of board of directors. Thus, the representatives of employees constitute a majority in the board of directors, which ensures the employees' managing power in the day to day operation of Linfen Dyeing.

- Linfen Dyeing is in fact controlled by its employees through the board of directors and management. The representatives of the employees occupy a majority in the board of directors. These representatives are elected through the employees at a meeting.
- Linfen Dyeing is not a part of a Group. Linfen Dyeing has two subsidiaries. The first is Shanxi Sino-wide Dyeing Chemicals Co., Ltd, which is responsible for production of medical intermediates; the other is Tianjin International Trading Co., Ltd., which is responsible for exporting the products manufactured by Linfen Dyeing. Tianjin International Trading Co., Ltd was established in 2007. During PGI, Linfen Dyeing did not have any related company engaged in production, sale or distribution of the subject merchandise.
- No local/regional authority or State is involved in setting prices/ quantities of the product concerned. All the sales decisions are made by Linfen Dyeing's management freely and independently, according to the market conditions.
- Linfen Dyeing sets the prices of the subject merchandise exported to India and other countries according to the production costs and the international market situation. The sales manager of Linfen Dyeing negotiates with customers directly. These negotiations are not subject to any review or guidance from governmental authority.
- No organization outside the company reviews or approves any aspect of the sales transaction and no local/regional authority or State is involved in setting prices/ quantities.
- Linfen Dyeing is not subject to any direct or indirect quantitative or other restriction for any of these activities.

F.1 Examination by the Authority

31. The Authority, notes that in the past three years China PR has been treated as a non-market economy country in the anti-dumping investigations by other WTO Members. Therefore, in terms of para 8 (2) of the annexure 1 of AD rules, China PR has been treated as a non-market economy country, subject to rebuttal of the above presumption by the exporting country or individual exporters, in terms of the above Rules.

32. As per Paragraph 8, Annexure 1 to the Anti Dumping Rules as amended, the presumption of a non-market economy can be rebutted if the exporter(s) from China provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) in Paragraph 8 and prove to the contrary. The cooperating exporters/producers of the subject goods from People's Republic of China were required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:-

- a) the decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
- b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
- c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
- d) the exchange rate conversions are carried out at the market rate.

In the light of the above the market economy claims of the responding exporters have been examined as follows:

a. **M/s. Dalian Green Peak Chemicals Co. Ltd (Producer) and M/s Dalian Dye Chem International Corporation (Exporter)**

33. On the basis of information submitted by this responding exporter the Authority notes that the producing Company, i.e. M/s Green Peak, one of the major producers of the subject goods in China, is a joint stock company controlled by Dalian Dyestuff & Chemicals Corporation, which is in turn 100% held by Dalian Dyestuff & Chemicals Group. Dalian Dyestuff & Chemicals Group is a state-owned entity. Green Peak was established on Dec. 26, 2000 by Dalian Dyestuff & Chemicals Corporation along with other 4 shareholders, which are themselves state-owned.

34. The production facility of the subject goods was established in August, 1999 in Dalian Free Trade Zone (FTZ) and was put into use since October, 1999. This production facility was owned by Dalian Dyestuff & Chemicals Corporation before Green Peak was established and was transferred to Green Peak as capital contribution in the new Company. The examination of the formation and status of the Companies indicates that Companies continue to be fully owned and controlled by the Government through its holdings in promoter Companies. It is also noted that net asset value of the erstwhile entity, capitalized at the time of formation of the new Company, was significantly lower compared to the book value of the assets. Therefore, significant distortions appear to have been carried over from the previous entity affecting the cost and price structure of the Company.

35. Green Peak has a board of directors with 9 directors out of which 6 directors represent the investors, which are state-owned entities. The exporting company i.e. M/s Dalian Dyechem is 100% held by Green Peak and therefore, continues to be under the control of the Government.

36. The producing company draws all utilities from its parent company i.e. M/s Dalian Dyeatuffs & Chemicals Corporation. The Company does not have any specific contract with the parent Company for the supply of utilities viz. Electricity, Steam and Water. However, the utility price is charged based on price determined by the State. The major raw materials for the subject goods, i.e. DNCB and Sodium Hydroxide are captively produced by Dalian Green Peak and other raw materials are sulphur, sodium sulfide (both purchased from unrelated private suppliers through short-term contract or spot market).

37. In its post preliminary finding submissions the responding exporter has argued that since the producer has not been converted from State Assets, there is no distortion of depreciation etc., no involvement in better trade, debt forgiveness or debt equity swap or write off etc. They have also raised the issue of recognition of China as a market economy by other market economy countries and the sulphur black sector in China does not operate under non-market economy condition.

38. The Authority notes that Indian Rules, in this context, are clear. As long as China does not fulfill the conditions stipulated in Para 8 in Annexure I to the Rules the Authority has to make a determination in respect of individual responding companies from China, on case to case basis, as per the criteria prescribed in the provisions quoted above.

39. Examination of the submissions made by the responding producer and exporter indicate that the Government continues to have full controlling interest in the producing Company.

40. The Authority also notes that the producing and exporting Companies are significantly owned and controlled by the Government and cost and prices are distorted due to carry over of distortion at the time of transfer of the production unit from the promoting Company to the new Company. Several inputs and utilities are also provided by the related companies, which are under government control. Therefore, the Authority is of the view that this producer-exporter from China cannot be granted market economy status for the purpose of determination of its Normal Value:

a) M/s Shanxi Linfen Dyeing Chemicals Co. Ltd (Producer)

41. M/s Shanxi Linfen Dyeing Chemicals Co. Limited (Shanxi) was established in 1997 as a Limited Liability Company, as per the Company Law of PRC. Shanxi is the biggest manufacturer of Sulphur Black in China with annual capacity of **** MT and produces two types of Sulphur Black-Solubilised SB (SSB) and Non-Solubilised SB (NSB) in various strengths, both in grain as well as in liquid forms and sales the same in various markets.

42. M/s Shanxi Linfen Dyeing, earlier existed as Shanxi Linfen City Dyeing Material Factory, established under the centrally planned economy system at

Xinjiang Town under Shanxi Linfen Economic & Trade Commission and later moved to the south of Linyi City in 1984. In June 1995, three State-owned entities signed an Article of Association to form a Limited Liability Company in the name and style of M/s Shanxi Linfen Dyeing Chemicals Co. Ltd, in accordance with PRC Company Law. Out of total registered capital, ***% was contributed by the Shanxi Linfen Government in the form of assets of Shanxi Linfen Dyeing Factory, referred above. The Company was formally established on 7th July 1997.

43. The process of formation and capital contribution at the time of formation of the new Company and transfer of assets of the old factory shows that against total assets of the Company of RMB ***/- the liability stood at RMB ***/-. Therefore, the net asset value of the Company on the date of transfer was RMB ***/-. The Linfen Government has used this net asset value as the ownership equity in the new Company formed in 1995, after adjusting for outstanding loan interests of the enterprise, which stood at ***/-. Therefore, capital contribution of Linfen Government to the net Company was only RMB ***/-, contributed in the form of assets of the old factory, whose asset value was RMB ***.

44. As far as other shareholders are concerned, Shanxi Economy Development and Investment Company have also capitalized its loans standing at RMB ***/– to equity in the new Company. The third shareholder i.e., Shanxi Economy and Trade Assets Management Company also capitalized its outstanding loans standing at RMB ***/– into equity in the new Company. Therefore, there was no cash contribution by any shareholder in the new Company. It was found that the Company is basically running on the loan from employees fund and long term loans, including loan from Shanxi Credit and Investment Company.

45. The shareholders of Linfen Dyeing continue to be companies owned by Shanxi Province government. Therefore, the producing company continues to be a government owned and controlled company. In 2006, Economy and Trade Commission of Linfen City contemplated privatization of the unit by transferring its shares in the unit as per the State-owned Equity Transfer Project Introduction document submitted. However, the project did not materialize.

46. The registered capital of the Company was raised in 2006 by fresh capital contribution by the promoters in the same proportion by capitalizing the surplus and undistributed profits during the previous years' operations. No fresh cash contribution has been made by any shareholder.

47. The Company is running on the basis of the loan contribution of the employees which is more than the paid-up Capital of the Co. As a result of controlling interests of the employees, the managing powers have been

transferred in 2006 to the employees and representatives of the employees constitute a majority in the board of directors.

48. The Company has a wholly owned subsidiary i.e., M/s Tianjin International Trading Co., who is engaged in export business. However, this subsidiary Company was established in 2007 and had not exported the subject goods to India during the POI. Accordingly, erroneous inclusion of the name of M/s Tianjin International Trading Co in the preliminary determination, based on their questionnaire response of the trading Company, has been removed.

49. The above examination shows that at the time of transfer of assets and capitalization of the assets and liabilities, the promoters' loan components outstanding at the time of the transfer, have been waived completely. Net asset value booked in the new company's books is also highly distorted. Since there is no cash contribution from the shareholders, the Company is basically running on debt financing from the loan taken from Employees and other financial institutions on long term borrowing basis.

50. The Company produces DNB captively. Significant quantity of other raw materials i.e., Chlorobenzene and Liquid Alkali is purchased from State-owned or State-controlled entities. For production of the subject goods electricity is supplied from state-owned Shanxi Electricity Co. Ltd. Unit power purchase price during the POI was RMB **** per unit. It has been argued that Shanxi being a coal belt, the electricity is cheaper in this province. The Company is using state-owned land on the basis of land use notification issued by Linfen Govt. for 50 years lease.

51. The Company has argued that although Linfen Dyeing is still a limited liability company owned by shareholders of local governments, these shareholders are not involved in the business decisions and day-to-day management of Linfen Dyeing and the rights of three shareholders are limited to receive the profits distribution and elect their representatives in board of directors.

52. It has been submitted that the employees of the Company are the real controllers and managers of the Company as the long term capital contribution of the employees in the Company through various loan and development funds which exceeds the registered capital of the company.

53. However, the above examination shows that the responding Company continues to be owned and controlled by the Government and there is a significant distortion in the cost and prices due to waiver of loans and interests and distortion in the net asset value of the company at the time of transformation into the new entity. Therefore, the Authority is of the view that this Company cannot be granted market economy treatment for the purpose of determination of its normal value.

G. Other issues raised by the interested parties regarding price comparability and dumping margin determination

M/s. Dalian Green Peak Chemicals Co. Ltd

54. Commenting upon the methodology adopted in the preliminary findings for determination of dumping margin Dalian has inter alia argued that

- the linear adjustment method adopted by the Authority in adjusting the respective export prices of each grade of the Subject Goods exported to India by the cooperating exporters during POI into grade 240BR based on adjustments of the respective quantities exported, of each other grade by each exporter, and comparing the respective adjusted EPs with CNV of Dalian for BR240 and the NIP of DI for that grade, is erroneous. The correct procedure would have been to determine the EP, NV, DM, NIP on Grade to Grade basis and recommend accordingly.
- Verification will establish that grade-wise dumping margin/injury margin determinations are most appropriate and also that the pro rata cost of production of the lower grades is relatively higher than that of the higher grades.
- The issue of adjustment has been wrongly proceeded on, as there appears to be a confusion that 'Strength' is synonymous with Concentration and that BR240 represents 100% concentration. In fact there is no 100% concentration and 'Strength' has a different context altogether and thus there has been confusion in this regard. Actually, 'strength' refers to the dyeing ability of the sulphur black. The number following BR is determined by comparing with the dyeing ability of a standard. However, there is no general accepted standard for sulphur black BR. The strength of 501 BR200 is almost equal to the strength of 522 BR180 or 521 BR180 for Dalian. It can only be determined and proved through experiment and can be verified during the on-site visit, and the three types of sulphur black BR produced by different producers may be different.
- Concentration usually means the amount of a specified substance in a unit amount of another substance. For sulphur black industry, there is no such concept of "concentration" to describe the sulphur black. There is only "strength" that is used to describe the sulphur black. The number following "BR" represents the strength of the sulphur black compared to the standard. Sometimes, "%" sign is used following the number in business transaction. For example, "BR240" is also written as "BR 240%"
- Although Dalian used concentration in its response to the deficiency letter dated 17.12.2007, it was just simply made according to the description of the Indian domestic industry. Dalian does not use concentration to describe the sulphur black and actually all the producers including the Indian domestic industry do not use concentration to describe the sulphur black. Dalian did not know that the Authority would use such a method to

- convert the sulphur black in other strengths to BR240 and so Dalian did not pay much attention to this question at that time.
- The purpose of such kind of wrong description is to mislead the Authority to convert sulphur black in other strengths to BR240 on so called pro rata basis.
 - The strength of sulphur black is determined compared to the strength of the standard. If BR200 is used as the standard, then BR240 means the strength of BR240 is 120% ($=240/200 \times 100\%$) of the strength of the standard BR200. Similarly, BR180 means the strength of BR180 is 90% ($=180/200 \times 100\%$) of the strength of BR200.
 - However, it should be noted that the sulphur black BR is different from other standard products. There are no national, industrial, international or generally accepted standards for sulphur black BR for either Chinese producers or Indian producers, or other producers around the world regarding the strength. Therefore, actual dyeing ability or strength of the standard BR200 produced by different producers may be much different after conducting an experiment on them to test, although all of them are written as BR200 in the invoices and the accounts and used as standard for individual producer. It is very normal that the actual strength of BR180 produced by one producer is the same as the actual strength of BR200 produced by another producer after conducting the experiment on them to test the dyeing ability.
 - For a better understanding it is important to know how the individual producer ascertains its own standard.
 - First, when a batch of the sulphur black BR is produced, the producer takes some of it and regards it as the standard named BR200. Then the producer conducts the experiment to the standard to see the dyeing ability of it.
 - Second, when another batch of the sulphur black BR is produced, the producer takes some of it to conduct the experiment to see its dyeing ability.
 - Third, the producer compares its dyeing ability to the dyeing ability of the standard BR200.
 - Fourth, according to the comparison result, if it is found that its strength is 120% of the standard, the producer names it as BR240; if it is found that its strength is 90% of the standard, the producer names it as BR180.
 - From the process, it is clear that the individual producer ascertains the standard BR200 itself without based on any uniform standards.
 - Due to the absence of the national, industrial, international or generally accepted standards for sulphur black BR, the strength of the standard used by different producers may be much different even if all of them are called BR200.
 - Even in the same company, the actual strength of BR200 is different for different types of BR200. For example, Dalian produces three types of sulphur black BR, that is 501 sulphur black BR, 522(588) sulphur black BR and 521 sulphur black BR. The tone of 522 sulphur black BR is redder

than the tone of 501 sulphur black BR, and the tone of 521 sulphur black BR is bluer than the tone of 501 sulphur black BR. The three types have their own standard 501 BR200, 522 BR200 and 521 BR200. The strength of 501 BR200 is almost equal to the strength of 522 BR180 or 521 BR180.

- For this reason, the sales of sulphur black are usually made by sample. When a new customer wants to purchase the sulphur black from Dalian, Dalian usually provides 501 BR200 or 522 BR200 produced by it to the customer for a sample. The customer will test the sampled BR200 and then decide what strength he would like to buy compared to the sampled BR200. A new customer will not directly require Dalian to sell BR240 to him without looking into its standard.
- As there is no national, industrial, international or generally accepted standards for sulphur black BR and the standard used by every producer may be much different, there is no an uniform and reasonable basis to adjust the physical characteristics difference between sulphur black in different strengths produced by different producers.
- It is stated by the Indian domestic industry that the strength of the grain is adjusted by adding salt. It seems that the Indian domestic industry produces BR240 first and then lowers the strength of the sulphur black by adding salt to get BR150, BR180, BR200, etc. However, when the sulphur black in press cake is recovered from the mother liquor by filtration for the first time, the strength of the original press cake usually is about 180% for Dalian, and may be as low as 140%-150% for other producers, if the production technology of the producer is not very good.
- If the strength of the original press cake is 180%, then the producer can get BR180 directly after the press cake is treated with caustic/sodium hydrogen sulphide/ sodium sulphide and dried. If BR200 or BR240 is needed, the original press cake is washed to get rid of sodium thiosulphate, sodium chloride and other impurities until the strength of the press cake is improved from 180% to 200% or 240%, then get BR200 or BR240 after the washed press cake is treated with caustic/sodium hydrogen sulphide/ sodium sulphide and dried. If BR130 is wanted, the producer can add the salt to the original press cake or to the sulphur black in flake/powder form to lower the strength from 180% to 130%.
- When the sulphur black in press cake is recovered from the mother liquor by filtration for the first time, the strength of the original press cake may not be 240% for all the producers. It is a wasted cost for producers to get BR240 from BR180 by washing, and then get BR180 from BR240 by adding salt to BR240 if the strength of the original press cake is 180%.
- The statement by the Indian domestic industry that the strength of the grain is adjusted by adding salt and lower concentrations are achieved simply by addition of salt is not correct. Actually, the strength of the sulphur black is lowered by adding salt or improved by washing from the original press cake.
- It should be noted that the quality and dyeing ability of sulphur black in low strengths such as BR130, BR150 which is obtained by adding salt to

- sulphur black in high strengths such as BR180 is poor practice. Dalian does not produce the sulphur black in strengths which is lower than 180%.
- The Authority may proceed on the basis of individual type to type and weight to weight comparison in order to ensure that there is correct 'apple-to apple' comparison. The grouping together of very disparate grades/products in the said investigations leads to severe distortion of the dumping margins and to unlawful antidumping duty being recommended on products/grades/segments that have admittedly not seen any injurious dumping.
 - When there is physical characteristics difference between the subject product and the like product, the adjustment should be made only to the normal value of the like product so that the normal value of the like product is comparable to the export price of the subject product. For example, if the subject product is BR200 and the like product is BR240, the normal value of BR240 should be adjusted as the normal value of BR200 and then the normal value of BR200 is compared to the export price of BR200. The adjustment is only made once in this method.
 - Normally there are two kinds of methods to adjust the physical characteristics difference which are widely used by the anti-dumping authorities around the world. One method is based on the market value difference incurred by the difference in physical characteristics and other method is based on the cost difference incurred by the difference in physical characteristics.
 - However, the adjustment method adopted by the Authority is neither based on the market value difference nor based on the cost difference. It is just simply based on the ratio of different strengths of sulphur black compared to 100% concentration of BR240. Dalian is not generally saying that this kind of method is incorrect, just because it is not calculated on the basis of the market value difference or the cost difference. The problem is that this kind of method adopted by the Authority does not reasonably reflect the market value difference or the cost difference incurred by the difference in the physical characteristics. Therefore, export price and normal value of the sulphur black, in different strengths/concentrations, are rather distorted when converted to those of BR240, compared to the actual price and cost of BR240, and accordingly the dumping margin and injury margin are also distorted by this kind of method.
 - As the sulphur black exported by Dalian to India is in high strength (BR200 and BR240) and the sulphur black produced and sold by the Indian domestic industry as well as the other cooperating exporter from China is in low strength (most are below BR200), this rule makes the improvement on the export price of Dalian is much smaller than the improvement on the normal value and non-injurious price, so that makes the dumping margin and injury margin much higher than what they should be.
 - There is no uniform basis for the adjustment for the physical characteristics difference between sulphur black in different strengths. The Indian domestic industry produced and sold the sulphur black in different strengths during the POI. It is requested that the Authority calculate the

- export price, normal value, dumping margin and the injury margin for sulphur black in each strength based on information of the sulphur black in the same strength without adjusting the physical characteristics difference.
- However, if such adjustment is unavoidable the Authority should at least adopt a method that reasonably reflects the market value difference or the cost difference incurred by the difference in the physical characteristics. In such a situation the standard for comparison should be taken as BR200 and not BR240. It cannot be said that BR240 represents 100% concentration. BR240 is determined by comparing its strength to the strength of the standard, and the strength of all sulphur black is determined by comparing its strength to the strength of the standard. When determining the strength, the standard is the basis. Usually producers including the Indian domestic industry use BR200 as the standard. Third, most of the product produced and sold on the market is BR200. BR240 is much less produced and sold. So BR200 is the most appropriate product to be the conversion basis. As BR200 is the most popular product in the market, it will reduce the inaccuracy caused by the physical characteristics difference adjustment as less adjustment is required than using the sulphur black in other strengths as the basis.
 - It is not necessary for the Authority to make the physical characteristics difference adjustment, as the physical characteristics difference adjustment is only required when there is physical characteristics difference between the subject product and the like product. The Authority converted the relevant information of sulphur black in other different strengths to the information of BR240 and then compared the export price and normal value based on BR240, which artificially produced the problem of physical characteristics difference.
 - The Indian domestic industry produced and sold the sulphur black in different strengths such as BR200, BR 180 and mainly lower grades during the POI. When there is like product which is identical, i.e. alike in all respects to the subject product, the Authority has no reason and basis to make the physical characteristics difference adjustment (i.e. convert the price of sulphur black in other strength to the price of BR240). It is quite illegal for the Authority to make the physical characteristics difference adjustment which violates the definition of "like product" in Article 2.6 of the AD Agreement and the requirement of "fair comparison" between export price and normal value in Article 2.4 of the AD Agreement.
 - Actually the price and cost of production of the sulphur black in different strengths are separately accounted by the DI too. The Authority is in the position to require the DI to provide the relevant information of sulphur black with specific strength, so that the Authority may compare the export price of the subject product and the normal value of the like product based on the sulphur black with the same strength.

55. M/s Shanxi Linfen in its submissions has inter alia argued that,

- DA has wrongly accepted the Petitioner's calculation of normal value on the basis of a constructed normal value. Hon'ble DA must take cognizance of the data and submissions filed by Linfen in their Confidential Responses while arriving at the normal value instead of accepting the constructed Normal value calculated by the Petitioner, which is based on secondary sources and is unsubstantiated per se.
- The subject good, Sulphur Black, is generally manufactured and sold in different strengths namely, BR 100, BR 200, BR 240, etc. BR 240 represents 100% strength. There is a direct co-relation between the strength of Sulphur Black and cost of production involved. Higher the strength, higher the cost and lower the strength lower the cost. However, the Preliminary Findings proceed on the premise that there is no difference in the manufacturing process and the cost involved. This is however, incorrect as there is significant difference in cost depending upon the strength and concentration. Lower the strength, lower is the cost. Thus the premise on which the dumping margin and injury margin determinations have been made by the Hon'ble DA is incorrect and is flawed as the Hon'ble DA has converted all different strengths of the subject goods sold in exporting country markets, as well as in the domestic markets, to 100% equivalent quantities. The Hon'ble DA has determined the normal value for the product for 100% concentration and compared the same with export price determined on equivalent of 100% strength basis.
- As the cost of production of the subject goods, in different strengths of dyeing, varies significantly the Authority also must compare the cost on a grade to grade (strength to strength) basis.
- Another factor which affects the price comparability is the difference in packaging cost for different strengths of the subject good. For lower concentration, the goods are usually packed in plastic bags and higher concentration/strength goods usually in cartons. The margin/ variation in cost for different packaging are in the range of RMB 300-350 per MT.

Views of the domestic Industry

56. The domestic industry, in its preliminary finding submissions, has also disputed the adjustment methodology though they themselves had presented all data after converting the same to 100% strength basis. It has been argued that the cost of production of BR 100 would not be half of BR 200 and therefore, linear adjustment method is not appropriate. It has been further argued that the domestic industry adopted the proportionate cost & price methodology in view of their strong belief that majority of the exports occurred in the category of BR 200. If 80% of the imports are in BR 200 category, conversion of all imports into one concentration would not materially distort the picture. However, if significant exports are in the lower concentration category, the normal value of such concentration would not

proportionately change and linear adjustment adopted by the Authority would be erroneous. Therefore, the Authority should determine normal value, export price and dumping margin separately for each concentration and thereafter determine cumulative dumping margin. The domestic industry has also disputed substantial import of lower grade material as per the submissions of responding exporters from China.

Examination by the Authority

57. The issues of comparison methodology, raised by the interested parties, have been examined. The Authority notes that the domestic industry, in its application indicated that sulphur black is produced in various concentrations. It was submitted that BR240 represents 100% concentration and all other grades of sulphur black are actually different concentrations of the product. Accordingly, in the application itself the volume and price data were consolidated. After initiation of the investigation based on the above application, none of the interested parties, including the responding exporters, commented upon this aspect of the case. Dalian in its post preliminary submissions admits the fact that though they noticed this anomaly in the application they ignored this and did not bring it into the notice of the Authority. Therefore, the Authority proceeded with the preliminary determination on the premise that all grades of Sulphur Black are actually different concentrations of the same product and accordingly, for the purpose of determination of dumping and injury margins all grades were converted to single concentration based on their respective strengths, as per the information provided by the domestic industry.

58. However, on the basis of the arguments made by the interested parties, after the preliminary findings, the issue of the nature of the product itself and the comparison methodology has been examined again carefully. It has been brought to the notice of the Authority that the BR values do not represent any concentration but the dyeing strength of the product against certain standards which are not universal. In fact the concept of 'concentration' is a misnomer for this product, so also the term 'BR'. BR represents the colour tone 'Blue-Red' and there could be many combinations of such colour tones such as 'DR' or 'B'. The value suffixed to these terms represents the dying strength of the product.

59. It has also been brought to the notice of the Authority that there is no universal standard for this product and each producer/user has his own standard, depending upon the colour strength or dyeing strength and colour/tones, and grades are calibrated against their own standards. Therefore, standard strength represented by BR or DR value of one grade of one producer/user may vary from the colour strength of another producer for the grade description calibrated against his own standard. Usually in commercial and trade parlance, BR200 is the standard grade for this product representing 100% strength, which a producer uses to calibrate other grades.

However, the specification of different producers or users for BR200 may vary. For example BR200 of one producer may match with say BR180 of another producer or user in terms of its dyeing strength and tones. Therefore, the trade in this product takes place on the basis of sample approval, rather than any universal grade specification.

60. The production process was also examined and it was noticed that production involves several stages. In the first stage, sodium sulphide is reacted with sulphur to produce sodium polysulphide. In another reaction, DNB is hydrolyzed by sodium hydroxide to obtain dinitrophenol. Dinitrophenol is then deoxidized by sodium polysulphide and then condensed and sulphurified to obtain crude sulphur black wet cake. The producers achieve different strengths, compared to their own standard, at the wet cake stage, depending upon the reaction levels achieved. The wet cake obtained in the reaction process is washed and purified several times to obtain product of desired higher strengths, i.e., BR180%, BR200% and BR240%. For producing lower grades than the strength achieved at wet cake stage salt may be added to adjust to lower strengths. Some producers also do some blending of different strengths to achieve required grades. However, all grades and strengths are producer or user defined against their own standard grades and not compared to any international standard, which does not exist.

61. In view of the above, the Authority is of the view that conversion of the quantity of exports based on the concentrations of various grades, as indicated by the domestic industry, is erroneous and leads to distorted results. Therefore, the Authority examined the possibility of adopting other comparison methods for determination of dumping and injury margins.

62. The interested parties have argued that comparison should be done on grade to grade basis. In this connection the Authority notes that though grade to grade comparison is the ideal method, it would not be possible to do so in this case because of three reasons. Firstly, there is no universal standard for this product and grade of one producer or user differs from that of another producer/user, thereby making any grade to grade comparison meaningless. Secondly, for the same grades of a defined strength of a producer, the user has a different grade definition. Thirdly, none of the cooperating exporters are found to be operating on market economy principles and therefore, their own domestic sales (and thereby their own domestic grades) cannot be compared with their export sales (grades) for determination of their dumping margins.

63. The Authority also notes that all the grades of the subject goods are substitutable and alike, except their relative strengths and it has been established that there is no uniform standard for grading the products. Product of a defined strength of one producer, calibrated against his own standard, can match with another defined strength of another producer, calibrated against his own standard. Therefore, there being a very high degree of interchangeability and substitutability it is not possible to work out separate

normal value or non-injurious price for each grade exported by the responding exporters for the purpose of grade to grade comparison and determination of dumping and injury margins. In view of the above, the Authority proceeds to compare the export prices at weighted average level for both dumping and injury margin determination. However, it emerges from the arguments of the interested parties that BR240 is a significantly distinct grade with a higher cost and price compared to other grades below BR200. Therefore, for the purpose of fair comparison Normal value and export prices of all grades up to BR 200 have been considered on weighted average basis and BR240 has been considered separately.

64. In its post disclosure submissions M/s Shanxi has disputed the comparison methodology adopted by the Authority in the disclosure statement and has *inter alia* argued that the comparison of lower grades of sulphur black exported by them, to a single normal value and NIP determined for BR200 grade, is erroneous as it does not take into account the cost and market value difference of different grades which affects price comparability. It has been further argued that even the other cooperating exporter, M/s Dalian, has submitted that the methodology adopted in the preliminary findings was not *per se* wrong. Only problem in that method was that it did not take into account the cost or market value differential of the grades. Therefore, the Authority should have converted all grades to BR200 as the reference grade, as suggested by Dalian, taking into the market value differential of different grades as per the information available with the Authority. It has also been argued that if such conversion to a reference grade was not possible, the Authority should have worked out Normal values and NIPs for narrower ranges of the product for fair comparison, instead of a single Normal Value and NIP for all grades upto BR200 which results in a unfair determination for Shanxi because of the fact that they have exported several grades of the product to India. If such a comparison is also not possible, as an alternative the exporter has suggested that the Authority should remove other grades lower than BR 200 from Linfen's export data and use BR 200 only for the margin calculation.

65. Authority notes that neither M/s Dalian, nor the domestic industry, has raised any argument on the comparison methodology in their post disclosure submissions though these parties had vehemently argued for a grade to grade comparison in their previous submissions. The domestic industry has only reiterated its earlier arguments that the exporter has filed false information before the Designated Authority and goods primarily exported from China include DR 200 and 240. The exporters have been falsely describing the grades below BR200 to reduce their duty liability. Under the circumstances the Authority has rightly cumulated different strengths upto BR-200. In this connection the Authority notes that the determination of export price of the exporters is based on the verified data and therefore, the contentions of the domestic industry that the exporters have filed false or misleading information in respect of the grades of the goods exported by them are not tenable.

66. The arguments of Shanxi, in its post disclosure submissions, have been examined and the Authority notes that the problem of grade to grade comparison in this case has been explained in detail in the disclosure itself and it was noted that in the absence of any universal standard for the product and significant grade interchangeability it has not been possible to resort to an exact grade to grade comparison or defining ranges of grades for fair comparison as suggested by this exporter. For the same reasons conversion of various grades to a reference grade is also not possible. Moreover, the cost or market value factors for conversion of different grades to single reference grade is also not possible as no verifiable information was available for determining such factors. Exclusion of other grades of Sulphur black and determination based on only BR200 is also not possible as the determination would not cover the entire product under consideration. Therefore, the methodologies suggested by the exporter could not be adopted by the Authority for determination of the dumping margins in this case. Accordingly, the Authority confirms the methodology adopted in this case.

F.2 Determination of normal value

67. As recorded above, none of the responding exporters from China PR have been found to be eligible for grant of market economy status and individual treatment for the purpose of determination of their normal values. Therefore, normal value in China is required to be determined in terms of Para 7 of Annexure I of the Rule which provides that

In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis if the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments.

68. It was indicated, in the initiation notification, that the Authority may notify an appropriate third country, in the due course, for the purpose of determination of normal value in China PR in terms of the above provision.

However, it has been brought to the notice of the Authority that being a highly polluting industry, the subject goods are produced only in China and India and there is no other producer outside these two countries, which can be adopted as an appropriate market economy third country for the above purpose. Therefore, the domestic industry has submitted that India should be treated as an appropriate surrogate country for China in this matter and the normal value should be determined accordingly.

69. In view of the above the Authority proceeds to determine the normal value in terms of second proviso of para 7 of Annexure 1 to the Rules on facts available basis.

70. As recorded in the foregoing paragraphs, the Authority notes that in view of lack of standard specification and high degree of product interchangeability it is not possible to determine normal value for each grade exported by the exporters concerned. It was further noted that BR240 is a significantly distinct grade with a higher cost and price compared to other grades below BR200 and therefore, for the purpose of fair comparison it is appropriate to consider Normal value and export prices of all grades up to BR 200 on weighted average basis and BR240 has to be considered separately.

71. The Authority also notes that the domestic industry does not produce all exact grades exported by the exporters and the exporters themselves do not maintain separate grade-wise cost data for construction of grade-wise normal value, even if the problem of interchangeability of the grade is ignored. However, for two main grades i.e. BR200 and BR240, exported by the cooperating exporters and also produced by the domestic industry, credible data for cost of production and consumption norms are available. Therefore, the Authority has determined the normal values based on these two grades.

72. For the purpose of determination of normal values for these two grades the consumption norms of the cooperating exporters for the major raw materials and international prices of these raw materials, as reported in the import statistics of India, have been used alongwith the conversion cost of the most efficient of the constituents of the domestic industry. A reasonable profit margin of 5% has been added to the above cost to arrive at the normal value for these two grades as follow:

BR240

Cost of raw materials per Kg:	Rs ****
Utilities Cost per Kg:	Rs ****
Conversion Cost, SGA Expenses and Finance cost per Kg	Rs ****
Total Cost to make and sale per Kg	Rs ****
Profit margin per Kg @ ****%:	Rs ****
Constructed Normal Value Per Kg:	Rs ****

CNV USD/Kg @ Exchange Rate Rs45.67	US\$ ****
BR200	
Cost of raw materials per Kg:	Rs ****
Utilities Cost per Kg:	Rs ****
Conversion Cost, SGA Expenses and	
Finance Cost per Kg	Rs ****
Total Cost to make and sale per Kg	Rs ****
Profit margin per Kg @ ****%:	Rs ****
Constructed Normal Value Per Kg:	Rs ****
CNV USD/Kg @ Exchange Rate Rs45.67	US\$ ****

F.3 Export Price

i) M/s. Dalian Green Peak Chemicals Co. Ltd (Producer) and M/s Dalian Dye Chem International Corporation (Exporter);

73. The subject goods manufactured by Dalian Green Peak are exported to India through M/s Dalian Dyechem International Corporation, which is a subsidiary of Green Peak. The export sales to India have been verified. The responding related producer and exporter have reported export of **** MT of the subject goods to India during the POI. The responding producer and exporter have exported only Sulphur Black BR200 and BR240 during the POI. The exports are to unrelated end users as well as distributors in India on CIF term and the payment has been realized on DP/TT/LC terms.

74. The exporter has not paid any commission or rebate against the export sales to India. Direct selling expenses incurred by the exporters towards inland transportation, ocean freight and insurance, handling expenses and bank charges against exports to India have been verified and adjusted against the export transactions. Few transactions involved credit period for which an adjustment has been made based on the average short term borrowing rate of the Company @****% during the POI, for the credit period.

75. The Company had not indicated any packing expenses in the original submissions on the ground that the domestic and export packing are same. However, it was noted that the packing is basically of two types, PP bags or Paper Cartons. Since the packing in the domestic market of the Indian producers is different, for the purpose of like to like comparison, the cost of packing against individual transaction has been deducted as verified.

76. As per the VAT statement submitted to the Government the producer pays differential VAT of 4% (VAT payable @17% on FOB value declared in the customs invoice and 13% VAT refund entitled on the above value on export of the goods) to the government, which is a cost to the exporter. Therefore, for arriving at net realization against the export transactions differential @ 4% of FOB value has been adjusted. On the basis of above

verified data, the export price of this exporter at ex-works level, in unpacked condition, works out as under.

Product category	Sum of Quantity (MT)	Sum of Net Invoice Value USD	Sum of Total Adjustments USD	Sum of Net ex-works Value USD	Net EP (Unpacked) USD/MT
BR 200	****	****	****	****	****
BR240	****	****	****	****	****
Total	****	****	****	****	****

ii) Ms Shanxi Linfen Dyeing Chemicals Co. Ltd

77. The responding related producer/ exporter have exported **** MT of the subject goods to India during the POI, which includes Sulphur Black of several grades. The exports are to unrelated end users as well as distributors in India on CIF term and the payment has been realized on DP/TT terms.

78. No commission or rebate is paid by the company against the export sales to India. Direct selling expenses, viz. inland transportation, ocean freight and insurance, handling expenses, bank charges were verified from the records of the Company and have been adjusted against the export transactions. Since the transactions are against DP/TT terms no credit cost is involved.

79. The Company sales the product using two kind of packaging i.e., paper cartons and PP woven bags. Since the packing for home market and exports are same, the Company had not shown any packing adjustment in Appendix 2. However, for the purpose of like to like comparison since the packing in the domestic market of the Indian producers is different, packing costs have been deducted from all transactions to arrive at net export price at ex-works level.

80. As per the VAT statement submitted to the Government the producer pays differential VAT of 4% (VAT payable @17% on FOB value declared in the customs invoice and 13% VAT refund entitled on the above value on export of the goods) to the government, which is a cost to the exporter. Therefore, for arriving at net realization against the export transactions differential @ 4% of FOB value has been adjusted. On the basis of above verified data, the export price of this exporter at ex-works level, in unpacked condition, works out as under:

Company's Product code	Sum of Quantity(MT)	Sum of Net Invoice Value(USD)	Sum of Total Adjustments USD	Sum of Net Export Value (USD)	Net EP USD/MT
BR 120%	****	****	****	****	****
BR 130%	****	****	****	****	****
BR 150%	****	****	****	****	****
BR 160%	****	****	****	****	****
BR 170%	****	****	****	****	****
BR 180%	****	****	****	****	****
BR 185%	****	****	****	****	****
BR 200%	****	****	****	****	****
solubilized	****	****	****	****	****
Grand Total	****	****	****	****	****

F.4 Dumping Margins

81. For the purpose of determination of dumping margin the ex-works normal value and export prices so determined have been compared at the same level of trade and dumping margins have been determined for the exporters from the subject country as follows:

i) **M/s. Dalian Green Peak Chemicals Co. Ltd (Producer) and M/s Dalian Dye Chem International Corporation (Exporter);**

82. The net ex-factory export prices of individual product types (strengths of sulphur black) have been compared with the constructed normal value the product as explained earlier on prorate basis to determine the weighted average dumping margin of this producer-exporter combination as follows:

Product category	Qty MT	Net Export Price Unpacked US\$/MT	Constructed Normal Value US\$/MT	Dumping Margin US\$/MT	DM %
BR200	****	****	****	****	
BR240	****	****	****	****	
Total	****	****	****	****	52.8%

II) **M/s Shanxi Linfen Dyeing Chemicals Co. Ltd**

83. The net ex-factory export prices of individual product types (strengths of sulphur black) have been compared with the constructed normal value the product as explained earlier to determine the weighted average dumping margin of this producer/exporter as follows:

Product code	Sum of Quantity (MT)	Net EP US\$/MT without packing	Constructed Normal Value US\$/MT	Dumping Margin US\$/MT	DM %
BR 120%	****	****	****	****	
BR 130%	****	****	****	****	
BR 150%	****	****	****	****	
BR 160%	****	****	****	****	
BR 170%	****	****	****	****	
BR 180%	****	****	****	****	
BR 185%	****	****	****	****	
BR 200%	****	****	****	****	
solubilized	****	****	****	****	
Total/ Weighted average	****	****	****	****	53.1%

iii) All other exporters from China PR

84. The export price for all other exporters from China PR has been determined on facts available basis taking into account the transaction data of the cooperative exporters and the same has been compare with the constructed normal value to determine the dumping margin for all other non-cooperative exporters in the subject country.

All Others	CNV USD/MT	EP USD/MT	DM US\$/MT
All Others	****	****	****
			149%

F.5 Dumping Margin Summary

Producer	Exporter	Dumping Margin USD/MT	DM %
M/s. Dalian Green Peak Chemicals Co. Ltd	M/s Dalian Dye Chem International Corporation	****	52.8%
M/s Shanxi Linfen Dyeing Chemicals Co. Ltd	M/s Shanxi Linfen Dyeing Chemicals Co. Ltd	****	53.1%
All Others	All Others	****	149%

G. INJURY DETERMINATION

85. Commenting upon the preliminary injury determination the interested parties, in their post preliminary finding submissions, the interested parties have made the following arguments:

Views of Shanxi Linfen

36. M/s Shanxi Linfen, in its post preliminary finding submissions, has inter alia argued that

- There are no producers of Sulphur Black outside India and China. Sulphur Black is mainly used for dyeing cellulose fibre, viscose staple fibre and yarn, paper and leather. Contrary to the assertion of the Domestic Industry alleging injury, there has been a large positive lasting growth in demand and domestic production has not been able to keep pace with the domestic demand, necessitating imports of the subject goods from China, especially in view of the fact that the subject product is manufactured only in India and China.
- The imports of the subject goods from the subject country are on account of the gap in demand in India and the Indian domestic production.
- As per the petition, many of the injury parameters indicate improvement or a marginal decline. This itself leads, a priori, to the conclusion that it is not dumping, which is the cause of alleged injury to the domestic industry and the present initiation is nothing but the abuse of the process of law.
- Information brought on record by Linfen clearly demonstrates that the subject goods sold in India are at a price consistent with the normal value and above the cost of production and at profits and have not caused any injury to the domestic industry.
- That alleged injury to the domestic Industry is on account of the cost structures of the domestic producers and their inability to reduce per unit cost of production, due to lack of modern amenities and lack of benefits of economies of scale and not due to any alleged dumping.

W/o Dalian Green Peak

37. The above exporter, in its post preliminary finding submissions, has inter alia argued that

- The Injury that the Indian industry alleges against the Chinese exports is because the Sulphur Black Industry in India is under the unorganized sector. The plants fall under Small Scale Industry (SSI) category. Most of the plants falling under the umbrella of Sulphur Black Manufacturer Association of India have a monthly production ranging from 10-30 MT per month with the sole exception of Atul Dyestuffs Ltd., Valsad who have a monthly production of 150-200 MT/month according to market estimation. As the sector is unorganized, most of the plants do not have their marketing department and are dependent on the traders for selling their goods.
- These traders seldom give good prices to the manufacturers and they sometimes end up selling their goods at low prices to these dealers.

Ultimately, the gainer is the dealer who sells at a better price and makes good profit from the sales of Sulphur Black. If the market analysis is done, then it will be found that the dealer has never made losses on the sales of Sulphur Black clearly highlighting the dominance of dealers over these manufacturers.

- As the sulphur black industry remains under the unorganized sector, there has been no R & D effort and Indian plants are still following very old and outdated process of 1940's.
- It is a globally accepted fact that only such plants are viable who have their own in-house DNCB production facilities. Surprisingly, with the exception of Atul, none of the units have their own DNCB plants. They are outsourcing the said dye intermediate and end up paying a very high price.
- Most of the plants have mushroomed in Northern India where they have a distinct locational disadvantage. The units in North India are sourcing their major inputs such as DNCB, Sulphur and Sodium Sulphide from plants located in western or southern part of India and incurs high expenses towards freight. Hence, the high cost of logistics makes these plants economically unviable.
- Moreover, the DI produces mainly below BR 180 grade and one tone only which result in lower levels of the valuable byproduct produced in these lower grades resulting in comparatively higher COP structure for DI compared to Chinese exporters with a product mix with higher share of higher grades and more efficient conversions. There are some differences in packing costs too of the different grades.
- That the concerns of DI at the hearing are chiefly in context of 200BR and lower grades and not 240BR of which import volumes are low (less than 5% of Dalian's exports to India during POI) and DI does not produce or sell 250BR or higher grades. Moreover, DI itself imports 240BR as there is insufficient domestic production. Hence, Dalian submits there can *prima facie* be no injury on account of these high grades and they may be excluded.
- The Injury alleged by the domestic industry is not because of the Chinese imports, but due to their own mismanaged costs, out dated technology and poor inventory/logistics.

Views of the domestic industry

88. The domestic industry in its submissions has refuted the arguments of the exporters regarding the injury and causal links and has inter alia argued that there is no basis for the arguments that problems of the Indian producers are because they are in the Small Scale Sector. The very same producers were viable some time back. They have now become unviable only because of dumping from China. Further, Atul Ltd also suffered injury in spite of being in the organized sector. The fact whether the producer has its own DNCB facility or not is of no relevance for the reason that dumping investigations are product specific where prices of captive inputs are required to be taken at

market value. If any of these producers are having their own DNBC, the same can not lead to any advantage to them.

89. It has been further argued that there is no basis for the argument that the domestic industry produces mainly below BR 180. On the contrary, the domestic industry produces primarily BR-200 and some volumes of BR-240. The argument of the domestic industry is that even Chinese producers have largely exported BR 200. Any claim now that the exported material was of lower strength is misleading. There is also no basis for the statement that there is insufficient production of BR-240. Strength-wise import statement clearly shows that imports of BR-240 are less than 5% whereas domestic production of BR-240 is more than the import volumes.

90. It has been further argued that Dalian has merely reproduced various legal provisions and decisions. Dalian, however, has not identified any factor which could have contributed to the injury to the domestic industry. As is evident with regard to parameters relating to production, sales, capacity utilization etc., growth of the domestic industry was significantly below what it could have been in the absence of dumped imports, considering the production of domestic industry between 2003-04 and 2005-06. It is also evident that dumped imports have prevented domestic industry from increasing its production, capacity utilization, sales volumes and market share. Further, dumped imports were undercutting prices of the domestic industry and thus led to deterioration in the performance of the domestic industry in terms of profit, return on investment and cash flow.

G.1 Examination of Injury and Causal Link:

91. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure -II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, "... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

92. The Authority notes the arguments of the interested parties in respect of the injury claims of the domestic industry as recorded above, for examination of various injury parameters and causal links in the following section.

93. The application for imposition of antidumping duty has been filed by the Sulphur Black Producers Association on behalf of the domestic producers of the subject goods. However, two domestic producers i.e, M/s Atul Limited and

M/s Bhanu Chemicals, who command a major proportion of total production of the subject goods in India, have filed complete injury information. In terms of Rule 2(b) of the Rules the above producers have been treated as the domestic industry for the purpose of this investigation. The Authority also notes that though there are other known producers of the subject goods in India they are all in unorganized sectors commanding very small productions individually. It has been submitted by the applicants that a significant number of producers have exited the market due to severe dumping from China for a long time. The other producers were asked to provide their cost and injury information, which has not been submitted so far. Therefore, for the purpose of injury determination the cost and injury information of the above domestic producer, constituting the domestic industry as defined in Rule 2(b), has been examined. However, overall impact of the dumped imports on the domestic industry as a whole has been examined to the extent information is available.

94. For the examination of the condition of the domestic industry and the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the Rules. All economic parameters affecting the Domestic Industry as indicated above such as production, capacity utilization, sales volume etc. have been examined as under:-

A) Volume Effects of Dumped Imports: Import volumes and market shares

a) Import volumes and share of subject countries:

95. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports; either in absolute terms or relative to production or consumption in India. The domestic industry has argued that the DGCI&S data does not reflect the complete import data and the import volume is higher than that has been reported in the DGCI&S data. In support of its claim the domestic industry has produced the transaction wise data compiled by IBIS. It has been argued that the subject goods are imported under several heads and DGCIS data does not cover imports under a number of classifications.

96. The Authority has examined the volume of imports of the subject goods from the subject country and other countries based on the transaction-wise import data provided by DGCI&S as well as IBIS data provided by the domestic industry. The export data of the responding exporters from China have also been taken into consideration. The Authority notes that the export from the subject country as reported by the responding exporters is found to be much higher than the import reported in the DGCIS data but closer to the import volumes reported in the IBIS data. Examination of DGCI&S data and

IBIS data indicates that imports of the subject goods are taking place under several classifications heads under tariff heading 32.04, which has not been properly captured in DGCI&S data. Therefore, for the purpose of final determination, the export volume reported in the transaction-wise BIS data has been considered for volume and price analysis.

97. The Authority also notes that sulphur black is imported from the subject country in different strengths. In the preliminary determination the import volumes of various strengths were converted to equivalent of sulphur black 100% strength (BR240 equivalent) for volume and price analysis. However, as discussed earlier the very premise of concentration of the product has been found to be erroneous. It has also been found that there being no international standard for various grades or strengths of this material, it is not possible to arrive at any reasonable equivalence of various grades of different producer. Therefore, for the final determination the import volumes and values as reported in the import statistics and volume and value of production and sales of the domestic industry have been adopted as it is, without conversion to any equivalent grade. On the basis of the above, the quantities of imports of the subject goods work out as follows:

Country	Quantity in MT			
	2003-04	2004-05	2005-06	POI (Jan,06 to Dec,06)
CHINA P.R.P	927	1,184	3,398	4,340
Trend(Indexed)	100	128	367	468
Others	-	-	19	-
Total	927	1,184	3,417	4,340
Trend(Indexed)	100	128	369	468
Share of subject country	100%	100%	99%	100%

98. The data indicates that the imports from China PR constitutes 100% of imports of the subject goods to India, except a small volume imported from another country in the preceding year, which is also a likely transhipment as that country apparently does not have any production facility for the subject goods. It has been brought to the notice of the Authority that this being a highly polluting industry, this industry has exited from most of the countries and India and China are the two major producers of this product in the world. Import from the subject country has increased by over 360% compared to the base year.

b) Actual and potential effect on production and capacity utilization:

99. The volume of domestic production and sale has been examined for assessment of demand and to examine the effects of dumped imports on the domestic operation of the domestic industry. Capacity, production and sales of the domestic industry and total demand in Indian market are as follows:

Quantity in MT

Period	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Installed Capacity of DI	MT	3,800	3,800	3,800	3,800
Trend	Indexed	100	100	100	100
Capacity of other producers	MT	3000	2000	2000	1000
Trend	Indexed	100	67	67	33
Total Capacity	MT	6,800	5,800	5,800	4,800
Trend	Indexed	100	85	85	71
Production (DI)	MT	2,946	3,466	3,934	4,334
Trend	Indexed	100	118	134	147
Production (others)	MT	2500	2300	900	900
Trend	Indexed	100	92	36	36
Total Domestic Production	MT	5,446	5,766	4,834	5,234
Trend	Indexed	100	106	89	96
Capacity Utilization DI	%	78	91	104	114
Trend	Indexed	100	118	134	147

100. The above data shows that while the capacity of the applicant domestic industry remains same and there is a significant increase in their production, total domestic capacity of the product has significantly declined by about 30%. The domestic industry has argued that sustained dumping from the subject country has forced the producers in the unorganized sector to exit the market. Therefore, improvement of the production and capacity utilization of the applicant domestic industry is to be seen in the background of the exit of about 25 producers in the unorganized sector and decline in production and sale of other producers still in production at a much reduced level.

101. The demand pattern and sales performance of the domestic industry and other domestic producers have also been examined as follows:

Quantity in MT

Production, Sales and Demand	2003-04	2004-05	2005-06	POI(Jan,06 to Dec,06)
Domestic Sales of DI	2,414	2,695	3,262	3,419
Trend	100	112	135	142
Sales of other domestic Producers	2,471	2,152	749	730
Trend	100	87	30	30
Total domestic sales	4,884	4,847	4,011	4,149
Trend	100	99	82	85
Imports	927	1,184	3,417	4,340
Trend	100	128	369	468
Total Demand	5,811	6,031	7,428	8,489
Trend	100	104	128	146

102. The above data shows that total domestic sales of the product has declined by over 15% compared to the base year though sales of the applicant domestic industry has increased during the injury investigation period, while total demand for the product has increased by about 46% compared to the base year and imports from the subject country, which is 100% of total imports, has increased by over 360%. While the capacity of the applicant domestic industry remains same at 3800 MT level through out the injury investigation period, the Authority notes that a large number of small producers have exited from the manufacturing of this product, which is reflected in decline in their sales by over 70% compared to the base year. Therefore, the data indicates that the space vacated by the small producers in India has been largely cornered by the dumped imports from the subject country and partly by the applicant domestic industry.

103. The capacity utilization of the applicant domestic industry has improved compared to the base year but at the same time a large number of small and medium producers of the subject goods have exited the market due to prolonged dumping from the subject country.

104. The domestic industry in its post disclosure submissions has argued that increase in production, sales & capacity utilization is because of addition of solid and liquid sulphur black. If the production and sales are seen separately, it would be found that the production and sale of solid form has declined in the investigation period after increasing upto 2005-06, whereas that of liquid form has increased. Secondly, the fact is that the petitioner companies had unutilized production capacities because of dumping in India. The capacity utilization appears more than 100% as a result of simple addition of liquid and solid form. In this regard the Authority notes that both solid and liquid sulphur blacks have been treated as like articles and included in the product under consideration. Therefore, segregated analysis for the purpose of injury examination, as suggested by the domestic industry, is not appropriate.

105. However, the Authority notes that Para 1 of Annexure II to the Rules requires the Authority to examine the impact of dumped imports on the domestic producers of the subject goods. Therefore, the production volume and capacity utilization of the applicants alone does not provide the correct picture of the condition of the domestic producers of the subject goods in this case. The fact that about 25 small and medium producers have exited the market and sales volume of domestic producers other than the applicants has declined sharply since the base year indicates that available unutilized capacity in the country is significantly high compared to the capacity of the applicants.

c) Actual and potential effect on market share:

106. Effects of the dumped imports on the domestic sales and market shares have been examined as follows:

Market Share	Market Share in Demand (%)			
	2003-04	2004-05	2005-06	POI(Jan,06 to Dec,06)
Subject Country	15.95%	19.63%	45.74%	51.13%
Trend	100	123	287	321
Other countries	0	0	0.26%	0
Domestic Industry	41.53%	44.68%	43.92%	40.28%
Trend	100	108	106	97
Other domestic producers	42.52%	35.69%	10.08%	8.60%
Trend	100	84	24	20
All domestic producers	84.05%	80.37%	54.00%	48.87%
Trend	100	96	64	58

107. While the demand of the subject goods in the domestic market has increased by about 46%, the share of the domestic industry in the total demand has declined by over 1% and the share of all domestic producers has drastically declined from over 85% in the base year to only little over 48% of total demand in the POI, whereas the share of the dumped imports has increased from about 16% in the base year to 51% of the total demand in the POI, indicating that the dumped imports have significantly impacted the sales volumes and market shares of the domestic producers of the subject goods. This is corroborated with the fact that about 25 small and medium units which have since been closed during this period, as reflected in the decline in sales volumes of domestic producers other than the applicants.

B) Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

108. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

109. The Authority notes that the exports of the subject goods from the subject country is of sulphur black grains only in various strength. Therefore, for fair comparison of the landed value of dumped imports with the domestic sales of the like goods for price effects examination, the domestic selling price and non-injurious price of the grains only have been considered.

i) Price undercutting and underselling effects

110. Price undercutting has been determined by comparing the weighted average landed value of dumped imports from the subject country, over the entire period of investigation, with the weighted average net sales realization of the domestic industry for the same period for sulphur black grains only. Landed value of imports has been calculated by adding 1% handling charge and applicable basic customs duty to the value reported in the IBIS data of import prices from the subject country.

111. In determining the net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid have been rebated. The net sales realization of the domestic industry has also been computed for grains only.

112. For the purpose of price underselling determination the weighted average landed price of imports from subject country, as explained above, has been compared with the non-injurious price of the domestic industry determined for the POI in respect of sulphur black grains.

Particulars	2003-04	2004-05	2005-06	Rs/Kg POI(Jan,06 to Dec,06)
Cost of sales of DI (Grains)	****	****	****	****
Trend	100	93	97	100
NSR of DI (Grains)	****	****	****	****
Trend	100	98	106	103
Landed Value - China PR (Grains)	43.24	41.24	39.06	39.52
Trend	100	95	90	91
Price Undercutting	****	****	****	****
Trend	100	105	152	138
Price Undercutting (%)	30-40%	30-40%	50-60%	50-60%
Weighted Average NIP (Grains)				****
Price Underselling				****
Price Underselling %				75-85%

113. The above data shows that while the weighted average cost of sales of the DI has remained almost same compared to the base year and increased by about 3% compared to the previous year, weighted average sales realization of the domestic industry has declined by 3% compared to the previous year. The data also shows weighted average landed value of dumped imports has declined by 9% in the POI as compared to base year.

114. Weighted average landed value of the dumped imports has been significantly below the weighted average net sales realization of the domestic industry for the entire injury investigation period and has significant price undercutting effect on the domestic industry. The landed value is also significantly below the cost of sales of the domestic industry during the injury period and non-injurious price determined for the POI, resulting in significant price underselling.

II) Price suppression and depression effects of the dumped imports:

115. To examine the price suppression effect of the dumped imports on the domestic prices the trend of net sale realization of the domestic industry has been compared with the cost of production.

Particulars	2003-04	2004-05	2005-06	POI (Jan-Dec 06)	Rs/Kg
Cost of Sales (Grains)	****	****	****	****	
Trend	100	93	97	100	
Selling Price (Grains)	****	****	****	****	
Trend	100	93	99	96	
Landed Value	43.24	41.24	39.06	39.52	
Trend	100	95	90	91	

116. The data indicates that while the cost of production of the domestic industry has increased by 3% compared to the previous year, the selling price has declined by 3% in the same period. Landed value, which is significantly below the selling price and cost of sales of the domestic industry, has further declined by about 9% during the injury investigation period. This in effect has prevented the domestic industry to increase the prices to realize the cost of production in spite of the fact that there is a healthy growth in demand in the domestic market. The selling price of the DI has remained significantly below the domestic cost of sales in the injury investigation period. It therefore, appears that while the costs have increased, the domestic industry has been forced to keep its prices suppressed in the presence of dumped imports, in order to retain its market share. This price suppression appears to have caused financial loss to the domestic industry as the industry is unable to realize its cost in the domestic market.

117. The above analysis shows that the dumped imports have adverse volume and price effect on the domestic industry in terms of increase in volume of dumped imports, both in absolute terms and as a share of demand in the domestic market, and by forcing the domestic industry to keep its prices suppressed, while significantly undercutting and underselling the prices in the domestic market.

G.2 Examination of other injury factors

118. After examining some of the injury factors as above i.e. actual and potential decline in sales and market share; actual and potential increase in volume of imports etc. in the previous section, the Authority has examined the other mandatory injury parameters in this section as follows:

a) Actual and Potential effects on profitability

119. Profits earned by the domestic industry from the sales of the domestic like product (sulphur black grains and liquids) in the domestic market has been examined as follows: -

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI(Jan,06 to Dec,06)
Domestic Cost of Sales (All Products)	Rs./kg	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	100	107	105
Domestic selling price (All Products)	Rs./kg	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	99	105	99
Profit / Loss per unit	Rs./kg	****	****	****	****
Trend	Indexed	(100)	(496)	(777)	(1,736)

120. The data shows that the industry was suffering marginal loss per unit sold in the domestic market even in the base year. But loss per unit of the product sold by the domestic industry has increased significantly during the POI due to increase in cost of sales while the sale realization, after showing significant improvement in the previous year, has further declined in the POI.

b) Actual and potential effect on Cash Flow

121. Cash profit of the domestic industry on its domestic operations work out as under:

Cash Profit	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI(Jan,06 to Dec,06)
Total profit before tax	Rs. Lacs	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	554	1,050	2,459
Depreciation on Domestic Sales	Rs. Lacs	****	****	****	****
Trend		100	104	128	102
Cash Profit: Domestic Sales	Rs./Kg	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	(5)	(96)	(470)

3722.GI/08-14

122. The domestic industry suffers significant cash loss in its domestic operations. From a positive cash flow in the base year the domestic industry has suffered significant cash loss in the POI.

c) Actual and potential effect on return on investments

123. Return on net fixed assets and working capital employed on its domestic operation have been examined as follows:

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI(Jan,06 to Dec,06)
Total profit before tax	Rs./Lacs	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	554	1,050	2,459
Interest	Rs./Lacs	****	****	****	****
PBIT	Rs./Lacs	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	97	122	95
Capital Employed (NFA + WC)	Rs./Lacs	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	109	134	134
Return on capital employed	%	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	89	91	71

124. As a result of significant loss on domestic sales due to suppressed prices during the injury investigation period, return on the domestic investments of the domestic industry has declined significantly during the POI as compared to the base year by over 30%.

d) Inventories

125. Inventory holding of the domestic industry, in terms of average stock and stock as a percentage of sales, shows decline.

Inventory	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI(Jan,06 to Dec,06)
Opening Stock	Kg	****	****	****	****
Closing Stock	Kg	****	****	****	****
Average Stock	Kg	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	76	97	60
Inventory as a % of sales	%	14.60	9.29	10.16	6.35

e) Productivity

126. Productivity of the domestic industry in terms of its labour productivity and daily output has been examined which shows significant improvement in productivity in terms of labour output as well as daily productivity. Therefore,

productivity of the domestic industry does not show sign of injury to the domestic industry.

Productivity	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Production (MT)	****	****	****	****
Trend	100	118	134	147
No of Employees	****	****	****	****
Trend	100	81	72	71
No of Days	350	350	350	350
Productivity (MT/Employee)	****	****	****	****
Trend	100	146	186	208
Daily Productivity (MT/Day)	****	****	****	****
Trend	100	118	134	147

f) Employment and wages

Employment & Wages	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI(Jan,06 to Dec,06)
No of Employees	No	****	****	****	****
Trend		100	81	72	71
Wages	Rs.Lacs	****	****	****	****
Trend		100	72	62	65
Wages per Employee	Rs.Lacs	****	****	****	****
Trend		100	90	86	92

127. Examination of the data on employment level and wages paid by the domestic industry indicates that the employment level and wages paid by the domestic industry has declined in spite of increase in production during this period.

g) Ability raise fresh investment

128. Domestic industry has not made any fresh investment for capital expansion in the subject goods during the injury investigation period. The Authority also notes that other domestic producers, still in production of the subject goods, have substantially reduced their production and sales level and about 25 other producers in small and unorganized sector, have exited from the market, indicating that the product is no more attractive for further investment and the industry is unable to raise fresh investment though there is a healthy growth in domestic demand.

h) Growth

129. Growth of the domestic industry in terms of various physical and financial parameters shows that while the applicant domestic industry shows positive growth in production and capacity utilization, this growth is primarily

due to the fact that several other domestic producers have exited the market. Closure of these units has however, left a large unutilized capacity in the domestic market, while there is a huge increase in demand in the domestic market. The financial performance in terms of profit on domestic sales and return on capital employed shows significant decline over the injury investigation period in spite of the fact that the domestic demand situation is positive and productivity of the domestic industry has improved. Parameters such as market share, profit, cash flow, and return on investments shows negative growth.

i) Magnitude of Dumping

130. The dumping margins, as an indicator of injury to the domestic industry, shows that the margins determined for the cooperating exporters from the subject country are significantly above de minimis level.

ii) Factors affecting prices

131. Examination of trend in the volume of dumped imports and prices from the subject country and the domestic prices indicate that the dumped imports through volume and price effects have affected the prices of the domestic industry.

G.3 Overall assessment

132. The above analysis of the factors indicate that in spite of the improvement in capacity, production, and sales, the domestic industry suffered injury on account of decline in market share, net sales realization, profitability, return on investments cash profits and growth. Volume of dumped import from the subject country has increased many fold and the prices of dumped imports, are significantly undercutting the prices of the domestic industry, preventing the domestic industry to raise the prices to remunerative level and recover the rising costs of production. Failure to command remunerative price due to price suppression by the domestic industry has resulted in significant financial losses to the domestic industry. Closure of several units and significant decline of capacity, production and sale of other domestic producers indicates that the injury suffered by the domestic industry is material and significant.

H. Causal link and other factors

133. Having examined the existence of material injury and volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry, in terms of its price undercutting, price underselling and price suppression, and depression effects, other indicative parameters listed under the Indian Rules and Agreement on Anti Dumping have been examined to see whether these any other factor, other than the dumped imports could have contributed to

injury to the domestic industry. Accordingly, the following mandatory parameters have been examined:

I) Volume and prices of imports from other sources

134. As per the import statistics relied upon the subject goods are being imported from the country under investigation only. Therefore, volume and prices of the subject goods imported from other countries could not have affected the domestic industry.

II) Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

135. Demand for the subject goods shows a healthy growth during the entire injury investigation period and therefore, possible contraction in demand cannot be attributed to the injury to the domestic industry. The data on consumption and demand does not show any significant change in the pattern of consumption of the product.

III) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

136. The goods are freely importable. The applicants are the major producers of the subject goods and account for major domestic production and sales. Other domestic producers have either exited the market or significantly reduced production. No other evidence of conditions of competition or trade restrictive practices has been brought to the knowledge of the Authority by any interested party.

IV) Development in technology:-

137. The interested parties have argued that the domestic industry suffers injury due to use of outdated technology and uneconomical scale of production. However, the Authority notes that the process and technology of production of the subject goods used by the domestic producers and the exporters from the subject country are similar and there is no significant difference in process of production.

V) Export performance of the domestic industry:-

138. The Authority notes that the export sale of the domestic industry has declined significantly during the injury investigation period though the export prices shows improvement. However, for the purpose of injury analysis the domestic sales only has been considered and injury, if any, caused due to the export performance of the domestic industry has not been attributed to the dumped imports.

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Export Sale	MT	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	77	53	66
Price	Rs/Kg	****	***	****	****
Trend	Indexed	100	106	123	118

vi) Productivity of the Domestic Industry

139. As noted earlier productivity of the domestic industry has improved in terms of total output and employee output. Therefore, this cannot be attributed to the injury to the domestic industry.

vii) Other factors

140. The Authority notes of the arguments of the interested parties that the injury suffered by the domestic industry is on account of several factors inherent to the domestic producers in India, such as uneconomical size, locational disadvantages and high logistic costs, and outdated technology. In this connection the Authority notes that the major producer of the subject goods in India i.e., M/s Atul Limited, commanding 52% of total domestic production and 63% of the total production of the applicants, is a producer with a modern integrated plant located in the western part of India, which does not suffer from any locational disadvantage or inefficiencies due to economy of scale and technological disadvantage as has been argued by the interested parties, but still suffers injury. In fact most of the injury parameters have been examined with reference to the performance of the most efficient producer, in order to isolate the injury caused by such factors if any. The interested parties have also argued that the injury suffered by the domestic industry is due high margin retained by the intermediary traders. However, such arguments are not substantiated with verifiable evidence. Therefore, the arguments of the interested parties, that the injury caused to the domestic industry is due to factors listed above are not borne out of the facts of the case.

141. The above non-attribution analysis shows that no other known factors, other than the dumped imports, appear to have affected the domestic industry. On the other hand the dumped imports, through its volume and price effects, appear to have caused injury to the domestic industry.

I. Factors establishing causal link

142. Analysis of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance of the domestic industry has materially deteriorated due to dumped imports from the subject country. Therefore, the causal links between dumped imports and the injury to the domestic industry is established on the following grounds:

- a. The volume of dumped import from the subject country has sharply increased and the landed price has significantly declined during the injury investigation period, resulting in significant price undercutting and underselling. As a direct consequence, the domestic industry has been prevented from realizing remunerative prices.
- b. Increase in import volumes and inability of the domestic industry to raise the prices to recover the cost of production has adversely affected the profits, cash flow and return on investments of the company.
- c. Significant positive price undercutting and underselling has resulted in exit of several producers in India from the domestic market leaving large unutilized production capacity.

143. The Authority notes that none of the interested parties have made any significant argument or submission with regard to determination of injury and causal links in their post disclosure submissions. Therefore, the Authority concludes that the domestic industry suffers material injury and the injury has been caused by the volume and price effects of dumped imports from the subject country.

J. Magnitude of Injury and injury margin

144. As noted earlier sulphur black grains of various strengths have been imported into India during the POI. However, the Authority also notes that the product does not have any international standard to define the grades. The grades of individual producers are defined against their own standard grades, which has significant interchangeability with the grades of other producers or users which is corroborated by the fact that the producers and exporters have shown different grades for the same product. The Authority further notes that since different grades of the subject goods are like articles import of one grade of the subject good materially injures the production and sale of all others grades also. Therefore, exact grade to grade comparison for determination of injury margin is neither possible, nor required. The domestic producers produce two major grades i.e., BR200 and BR240 which are comparable to various grades produced and exported by the exporters from the subject country. Accordingly, the non-injurious price has been determined for above two grades in unpacked condition for comparison with the weighted average landed value of exports from the subject country in unpacked condition, for determination of weighted average injury margins for the exporters from the subject country. Accordingly, the injury margins have been worked out as follows:

Producer	Exporter	Injury Margin USD/MT	Injury Margin %
M/s. Dalian Green Peak Chemicals Co. Ltd	M/s Dalian Dye Chem International Corporation	****	35-45%
M/s Shanxi Linfen Dyeing Chemicals Co. Ltd	M/s Shanxi Linfen Dyeing Chemicals Co. Ltd	****	35-45%
All Others	All Others	****	105-115%

K. Conclusions

145. After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts made available before the Authority, as recorded in this finding, the authority concludes that:

- i) The subject goods have entered the Indian market from the subject country at prices less than their normal values in the domestic market of the exporting country;
- ii) The dumping margins of the subject goods imported from the subject country are substantial and above de minimis;
- iii) The domestic industry has suffered material injury and the injury has been caused to the domestic industry, both by volume and price effect of dumped imports of the subject goods originating in or exported from the subject country.

L. Indian Industry's interest & other issues

146. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

M. Recommendations

147. The Authority initiated and conducted the investigation into dumping, injury and causal links between dumping from the subject country and injury to the domestic industry in terms of the Rules laid down. Having established positive dumping margins against the subject country, and having concluded that the domestic industry suffers material injury due to such dumped imports,

the Authority is of the opinion that definitive measure is required to be imposed to offset dumping and injury being caused to the domestic industry. Accordingly, the Authority recommends imposition of definitive antidumping duty in the form and manner prescribed below.

148. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. The Authority further notes that there is a significant differentiation of the product in terms of its strength and prices. Therefore, a definitive duty in terms of reference price or fixed duty would not be appropriate in this case. Therefore, the Authority recommends imposition of definitive measure as an ad valorem duty, to be worked out as a percentage of the CIF value of imports of the subject goods from the subject country. Accordingly, definitive ad valorem antidumping duty, as indicated in Col 9 of the duty table annexed herewith, is recommended to be imposed from the date of imposition of the provisional duty notified by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from the subject country. Subject to the above the preliminary findings dated 10th March 2008 is hereby confirmed.

Duty Table

Sl. No	Sub Heading or Tariff Item	Description of Goods	Specifi cation	Count ry of origin	Country of Export	Producer	Exporter	Duty
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	32.04	Sulphur Black	In All forms and strengths	China PR	Any	M/s. Dalian Green Peak Chemicals Co. Ltd; Or M/s Dalian Dye Chem International Corporation		42.4%
2	32.04	Sulphur Black	In All forms and strengths	China PR	Any	M/s Shanxi Linfen Dyeing Chemicals Co. Ltd	M/s Shanxi Linfen Dyeing Chemicals Co. Ltd;	41.3%
3	32.04	Sulphur Black	In All forms and strengths	China PR	Any	Any other combination other than above		116.8%
4	32.04	Sulphur Black	In All forms and strengths	Any other	China PR	Any	Any	116.8%

N. Further Procedures

149. An appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

150. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measure as recommended herein from time to time as per the relevant provisions of the Act and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party as per the time limit stipulated for this purpose.

R. GOPALAN, Designated Authority
